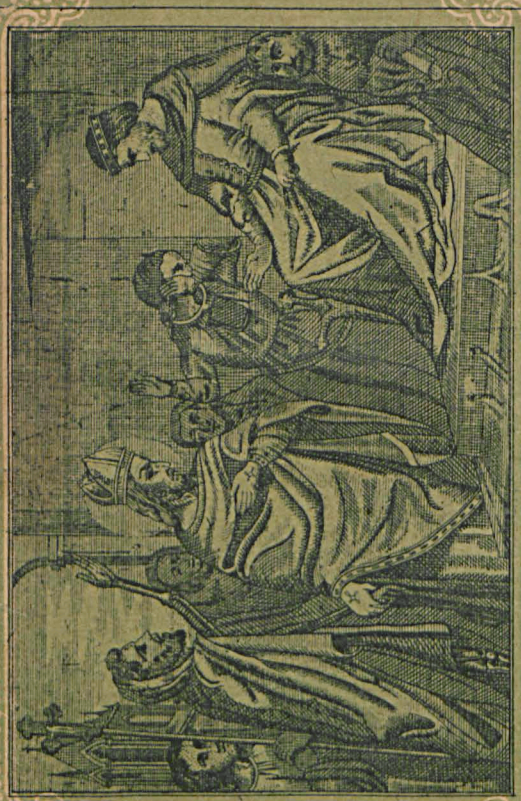

S. STANISŁAW BISKUP KRAKOWSKI.

OŁTARZ ZŁOTY

W MODŁACH I PIEŚNIACH

na cześć

Bogu i N. Maryi Pannie

WYSTAWIONY.

OŁTARZ ZŁOTY

W MODŁACH I PIEŚNIACH

na cześć

BOGU

i Najświętszej Pannie Maryi

WYSTAWIONY

z dodaniem żywota „Świętego Stanisława"
Biskupa Krakowskiego.

CZĘSTOCHOWA.
Skład główny u E. Lompe w Warszawie,
ul. Długa Nr. 46.

1894.

APPROBATUR.

Kielciis die 31 Martii 1893 an.

Episcopus Kielcensis

† **Thomas.**

№ 782.

ОДОБРЕНО.

Кѣльцы Марта 19 (31) дня 1893 г.

Судья Суррогатъ Каноникъ

Кс. Ключинскій.

Дозволено Цензурою,

Варшава 3 Августа 1893 г.

W drukarni Kohna i Oderfelda w Częstochowie.

KALENDARZ

o roku i jego częściach.

ROK ma miesięcy dwanaście, tygodni pięćdziesiąt dwa i dzień jeden, dni zaś trzysta sześćdziesiąt pięć, i niemal 6 godzin: gdyż słońce przez tyle dni obieży koło Zodyaku. Po czterech zaś latach przybywa dzień jeden, ponieważ cztery razy 6 czyni godzin 24, zatém rok bywa przybyszowy.

O ADWENCIE.

ADWENT zaczyna się w Niedzielę, która bliższa jest świętego Andrzeja, a jeżeli święty Andrzéj w Niedzielę przypadnie, tamże się Adwent zaczyna.

O SUCHEDNIACH.

SUCHE DNI przypadają we Środę, Piątek i Sobotę:

Pierwsze: Po 3-éj Niedzieli Adwentowéj.
Drugie: Po Niedzieli Wstępnéj w Post.
Trzecie: Po Świątkach.
Czwarte: Po Podwyższeniu św Krzyża.

O MAŁŻEŃSTWIE.

WESELA małżeńskiego kościół św. zakazuje od pierwszéj Niedzieli Adwentowéj do Trzech Króli i od Srody Popielcowéj do Poniedziałku Przewodniego

IV.

ПАСХАЛІЯ.

Годы отъ Р. Х.	Мясо-ястія н.	Мясо-ястія д.	Мясопустъ	Сыропустъ	Вруц. л.	Пасха Христ.	Вознесеніе	Пятдесятница.
1894	8	2	Ф. 20	Ф. 27	5	Ап. 17	Мая 26	Іюня 5
1895	6	1	Ф. 5	Ф. 13	6	Ап. 2	Мая 11	Мая 21
1896	*5*	—	*Г. 28*	*Ф. 4*	*1*	*Мр. 24*	*Мая 2*	*Мая 12*
1897	7	5	Ф. 16	Ф. 23	2	Ап. 13	Мая 22	Іюня 1
1898	6	4	Ф. 8	Ф 15	3	Ап. 5	Мая 14	Мая 24
1899	8	3	Ф. 21	Ф. 28	4	Ап. 18	Мая 27	Іюня 6
1900	*7*	*2*	*Ф. 13*	*Ф. 20*	*6*	*Ап. 9*	*Мая 18*	*Мая 28*
1901	6	—	Ф. 4	Ф. 4	7	Ап. 1	Мая 10	Мая 20
1902	7	6	Ф. 17	Ф. 24	1	Ап. 14	Мая 23	Іюня 2
1903	6	5	Ф. 9	Ф. 16	2	Ап. 6	Мая 15	Мая 25
1904	*5*	*4*	*Ф. 1*	*Ф. 8*	*4*	*Мр. 28*	*Мая 6*	*Мая 16*
1905	8	2	Ф. 20	Ф. 27	5	Ап. 17	Мая 26	Іюня 5
1906	6	1	Ф. 5	Ф. 12	6	Ап. 2	Мая 11	Мая 21
1907	9	—	Ф. 25	М. 4	7	Ап. 22	Мая 31	Іюня 10
1908	*7*	*6*	*Ф. 17*	*Ф. 24*	*2*	*Ап. 13*	*Мая 22*	*Іюня 1*
1909	5	4	Ф. 1	Ф. 8	3	Мр. 29	Мая 7	Мая 17
1910	8	3	Ф. 21	Ф. 28	4	Ап. 18	Мая 27	Іюня 6

V.

WYKAZ ŚWIĄT RUCHOMYCH.

Rok Pański.	Litera Niedzielna.	Popielec.	Wielkanoc.	Zielone Świątki.	Boże Ciało.	Niedziela pierwsza Adwentu.
1894	g	7 Lut.	25 Mar	13 Maja	24 Maja	2 Grudn.
1895	f	27 Lut.	14 Kw.	2 Czer.	13 Czer.	1 Grudn.
1896	e d	18 Lut.	5 Kw.	24 Maja	4 Czer.	29 Listop.
1897	c	3 Mar	18 Kw.	6 Czer.	17 Czer.	28 Listop.
1898	b	23 Lut.	10 Kw.	29 Maja	9 Czer.	27 Listop.
1899	A	15 Lut.	2 Kw.	21 Maja	1 Czer.	3 Grudn.
1900	g	28 Lut.	15 Kw.	1 Czer.	14 Czer.	2 Grudn.
1901	f	20 Lut.	7 Kw.	26 Maja	6 Czer.	1 Grudn.
1902	e	12 Lut.	30 Mar	18 Maja	29 Maja	30 Listop.
1903	d	25 Lut.	12 Kw.	31 Maja	11 Czer.	29 Listop.
1904	c b	17 Lut.	3 Kw.	22 Maja	2 Czer.	27 Listop.
1905	A	8 Mar	23 Kw.	11 Czer.	22 Czer.	3 Grudn.
1906	g	28 Lut.	15 Kw.	3 Czer.	14 Czer.	2 Grudn.
1907	f	13 Lut.	31 Mar	19 Maja	30 Maja	1 Grudn.
1908	e d	4 Mar	19 Kw.	7 Czer.	18 Czer.	29 Listop.
1909	c	24 Lut.	11 Kw.	30 Maja	10 Czer.	28 Listop.
1910	b	9 Lut.	27 Mar	15 Maja	26 Maja	27 Listop.

МѢСЯЦОСЛОВЪ ПРАВОСЛАВНОЙ Церкви.

KALENDARZ Rzymsko-Katolickiego Kościoła.

Чис.	Мѣсяцъ Январь.	В. Л.	STYCZEŃ ma dni 31.		
20	*Дек.* Св. мч. Игнатія Богоносца.	3	1	A	Nowy Rok. Fulgencyusza B.
21	С. Петра мч Іуліан	2	2	b	Makarego Opata.
22	Вел. мч. Анастасіи.	1	3	c	Daniela M. i Genow.
23	Св. Ѳеодула, Павла.	7	4	d	Tytusa i Rugober. B.
24	Первомуч. Евгеніи	6	5	e	Telesfora Pap., Emil.
25	Рождество Христа.	5	6	f	Trzech Króli.
26	Соборъ Прес. Богород.	4	7	g	Lucyana i Juliana M.
27	*С. первомч. Стефана*	3	8	A	Seweryna Opata.
28	Мч. Агаѳіи и Ѳеоф.	2	9	b	Marcyanny P. M.
29	Св. 14000 мл. вв. Вио.	1	10	c	Agatona Pap. i Wilh.
30	Св. мч. Анисіи, Вира	7	11	d	Hygina B. M. i Hono.
31	Прп. Меланіи Римл.	6	12	e	Arkadyusza i Mod. M.
1	*Янв.* Обрѣз. Господне.	5	13	f	Weroniki Panny.
2	Св. Сильвестра.	4	14	g	Hilarego B. D. K.
3	Пр. Малахіи, Гордія	3	15	A	Pawła 1 Pustelnika.
4	Соборъ 70 апостол.	2	16	b	Marcella Papieża M.
5	Мч. Ѳеопемпта.	1	17	c	Antoniego Op. Wyz.
6	Богоявленіе Господне	7	18	d	Katedry ś. Piotra.
7	*Соб. С. Іоанна Пред.*	6	19	e	Kanuta Kr. i Henr.
8	Пр. Георгія, Емиліа		20	f	Fabiana i Sebastyana
9	Мч. Полієвкта, Фил	4	21	g	Agnieszki Panny M.
10	С. Григорія еп. Нис.	3	22	A	Wincentego i Anast.
11	*Пр. Ѳеодосія Велик.*	2	23	b	Zaślub. N. M. P. Ildef.
12	Мч Татіаны, Петра.	1	24	c	Tymoteusza Bisk. M.
13	Мч. Ермила, Страт	7	25	d	Nawróc. ś. Pawła Ap.
14	Пр. Отецъ въ Синаѣ	6	26	e	Polikarpa Bisk. M.
15	Пр. Павла и Іоанна.	5	27	f	Jana Chryzostoma.
16	Покл. вер. ап. Петра	4	2	g	Sławiana i Leonarda.

17	*Пр. Антонія Велик.*	3	29	A	Franciszka Salezego
18	Пр. Аѳанасія и Кир.	2	30	b	Martyny Panny M.
19	Пр. Макарія египет.	1	31	c	Piotra Nolaski.

Чис.	Мѣсяцъ Февраль.	В. Л.	LUTY ma dni 28.		
20	*Янв.* Пр. *Евѳим. Вел.*	7	1	d	†Ignacego B. i Bryg.
21	Пр. Максима испов.	6	2	e	Oczyszcz. N. M. P.
22	Св. Ап. Тимоѳея.	5	3	f	Błażeja Bisk. Męcz.
23	Св. мч. Климента	4	4	g	Ansgarego Bisk. W.
24	Пр. Ксеніи, Мареодо.	3	5	A	Agaty Panny Męcz
25	*Св. Григорія Богосл.*	2	6	b	Doroty P. M. i Sylw.
26	Пр. Ксенофонта.	1	7	c	Romualda Opata.
27	*Св. Іоанна Златоус.*	7	8	d	Jana z Matty Wyzn.
28	Пр. Ефрема Сирина.	6	9	e	Apolonii Panny M.
29	Пер мощ. С. Игнат.	5	10	f	Scholastyki Panny.
30	*Св. 3-хъ Свят.* Вас. вел., Григ. и Іоан.	4	11	g	Lucyusza B. i Saturnina Kap. M.
31	С. Никиты, м. Кира.	3	12	A	Gaudentego B. W.
1	*Февр.* Мч. Трифона	2	13	b	Juliana M. i Dobrosł.
2	Срѣтеніе Господне.	1	14	c	Walentego Kapł. M.
3	С. Симеона Богопр.	7	15	d	Faustyna i Jowity.
4	Пр. Исидора и Кир.	6	16	e	Julianny P. M. i Jul.
5	Св. мч. Агаѳіи.	5	17	f	Sylwina B. i Donata.
6	Св. Вукола, Мареы.	4	18	g	Symeona Bisk. M.
7	Пр. Пареенія и Луки	3	19	A	Konrada W. i Mansw.
8	Вел мч. Ѳеодора.	2	20	b	Eucher. i Leona Bis.
9	Мч. Никифора, Марк.	1	21	c	Maksymiana Bisk.
10	в. мч. Харлампія.	7	22	d	Kated. ś. Piotra w Ant.
11	Св. мч. Власія, Дим.	6	23	e	Piotra Damiana B. D.
12	Св. Алексія митр. моск. Мелета.	5	24	f	Macieja Apostoła.
13	Прп. Мартиніана.	4	25	g	Zygfryda B. i Taraz.
14	Пр. Кирилла, Авксе.	3	26	A	Aleksandra B. i Fort.
15	Св. Ап. Онисима.	2	27	b	Leandra Biskupa W.
16	Мч. Памфила, Павла	1	28	c	Romana Opata.

roku przestępnym Luty ma dni 29, a św. Macieja Apostoła obchodzi się 25 t. goż miesiąca.

Чис.	Мѣсяцъ Мартъ.	в. л.	MARZEC ma dni 31.		
17	*Февр.* Вел. мч Θеод.	7	1	d	Albina B. i Antoniny.
18	Св. Льва папы.	6	2	e	Heleny Cesarzowej.
19	Св. Архип. и Филим.	5	3	f	Kunegundy Cesarz.
20	Пр. Льва еп. Катан.	4	4	g	Kazimierza Królew.
21	Пр. Тимоθея, с. Геор.	3	5	A	Teofila Biskupa.
22	Пр. Аθанасія.	2	6	b	Wiktora i Wiktoryna
23	Св. мч. Поликарпа.	1	7	c	Tomasza z Akwinu.
24	*1-е и 2-е обрѣт. чест. главы Іоанна Пред.*	7	8	d	Jana Bożego.
25	Св. Тарасія архіеп.	6	9	e	Franciszki Wdowy.
26	♔ Св. Порфирія.	5	10	f	♔ 40 Męczenników.
27	Пр. Прокопія.	4	11	g	Konstantyna W.
28	Пр. Василія испов.	3	12	A	Grzegorza Pap. D. K.
29	Пр. Кассіана Римля.	2			
1	*Мартъ.* Пр. мч. Евдокіи и Антонин.	3	13	b	Nicefora B. i Modesty.
2	♔ Св. мч. Θеодотія.	2	14	c	♔ Matyldy Król. Wd.
3	Св. мч. Евтропія.	1	15	d	Longina Męcz.
4	Пр. Герасима, Павла	7	16	e	Cyryaka Dyakona.
5	Св. мч. Конона.	6	17	f	Gertrudy Panny.
6	Св. 42 мч. въ Аммор.	5	18	g	Gabryela Arch.
7	Св. мч. Василія, Еф.	4	19	A	Józefa Ob. N. M. P.
8	Пр. Θеодор. и Домет.	3	20	b	Wolframa B. i Eufemii
					Porównanie dnia z nocą.
9	*Св. 40 муч. Севаст.*	2	21	c	Benedykta Opata.
10	Св. мч. Кодрата.	1	22	d	Boguchwała Bisk.
11	Св. Софро. патр. Іер.	7	23	e	Katarzyny Kr. Szw.
12	Пр. Θеофана, Григ.	6	24	f	†Marka i Tymoteusz.
13	Пер. мощ. с. Никиф.	5	25	g	Zwiastow. N. M. P.
14	Пр. Венедикта.	4	26	A	Ludgiera Biskupa.
15	Св. мч. Агапія.	3	27	b	Ruperta Biskupa.
16	Св. мч. Савина.	2	28	c	Syksta Pap., Dorote.
17	*Пр. Алексія чел. Бо.*	1	29	d	Cyrylla Dyakona M.
18	С. Кирилла Іерусал.	7	30	e	Kwiryna M., Aniceli.
19	Св. мч. Хрисанфа.	6	31	f	Balbiny P. i Kornelii.

♔ Święta galowe pierwszorzędne.

Чис.	Мѣсяцъ Апрѣль.	в. л.	KWIECIEŃ ma dni 30.		
20	*Мартъ.* Пр. Іоанна, Сергія.	5	1	g	Teodory P. M. i Hugona B.
21	Пр. Іакова исповѣд.	4	2	A	Franciszka à Paulo.
22	Св. мч. Василія.	3	3	b	Ryszarda Biskupa.
23	Пр. Никона.	2	4	c	Izydora Bisk. D. K.
24	Св. Артемона.	1	5	d	Wincentego Ferrez.
25	Благовѣщ. Пр. Богор.	7	6	e	Wilhelma Op. i Celes.
26	*Соб. Арх. Гавріила.*	6	7	f	Epifaniusza Bisk. M.
27	Св. мч. Матроны.	5	8	g	Dyonizego Bisk.
28	Пр. Иларіона и Стефана.	4	9	A	Maryi Kleotasowéj.
29	Св. Марка, Кирилла	3	10	b	Ezechiela Pror. M.
30	Пр Іоанна, Зосимы	2	11	c	Leona Papieża D. K.
31	Пр. Игнатія еп., Іоны митр.	1	12	d	Juliusza Papieża.
1	*Апр.* Пр. Маріи Египетской,	7	13	e	Hermenegilda Król.
2	Пр. Тита, мч. Поликарпа.	6	14	f	Tyburcyusza i Waleryana M. M.
3	Пр. Никиты.	5	15	g	Anastazyi i Bazyl. M.
4	Пр. Іосифа и Георг.	4	16	A	Lamberta Męcz.
5	Пр. Платона.	3	17	b	Aniceta Pap. Męcz.
6	Св. Евтихія архіеп.	2	18	c	Apoloniusza Męcz. B.
7	Пр. Георг. и Даніила	1	19	d	Hermogenesa Męcz.
8	Св. Ап. Иродіона.	7	20	e	Sulpicyusza Męcz.
9	Пр. мч. Вадима.	6	21	f	Anzelma Bisk. D. K.
10	Св. мч. Терентія.	5	22	g	Sotera i Kaja P. M.
11	Св. мч. Антипы.	4	23	A	Wojciecha Bisk. M.
12	Пр. Василія.	3	24	b	Fidelisa Męcz.
13	Мч. Θеодосія.	2	25	c	Marka Ewangelisty.
14	Св. Мартина папы Римскаго.	1	26	d	Marcellina i Kleta M.
15	Св. Ап. Аристарха.	7	27	e	Teofila Biskupa.
16	Св. мч. Агапіи.	6	28	f	Witalisa Męcz.
17	Св. Симеона еписк.	5	29	g	Piotra Męczennika.
18	Пр. Іоанна, Космы.	4	30	A	Katarzyny Senen. K.

Чис.	Мѣсяцъ Май.	в. л.			MAJ ma dni 31.
19	*Апр.* Прп. Іоанна, св. Трофима.	3	1	b	Filipa i Jakóba Ap.
20	Пр. Ѳеодула и Анас.	2	2	c	Zygmunta Króla M.
21	Св. мч. Іаннуарія.	1	3	d	Znalez. św. Krzyża.
22	Пр. Ѳеодора и Луки	7	4	e	Floryana Męcz.
23	*Св. мч. Георг. Побѣд.*	6	5	f	Piusa V Papieża.
24	Пр. Елисаветы.	5	6	g	Jana Apost. w Oleju.
25	*Преполовеніе, св. ап. и евангел. Марка.*	4	7	A	Domicelli i Eufrezyny PP. MM.
26	Св. мч. Василія.	3	8	b	**Stanisława Bisk. M.**
27	Св. мч. Симеона.	2	9	c	Grzegorza Naz. B.
28	Св. Ап. Іасона.	1	10	d	Izydora Oracza.
29	Прп. Мемнона.	7	11	e	N. M. P. Łask.
30	*Св Ап. Іакова.*	6	12	f	Pankracego Męcz.
1	*Май.* С. прр. Іереміи	5	13	g	Serwacego bisk.
2	*Св. Аѳанасія Велик.*	4	14	A	Bonifacego Męcz.
3	Св. мч. Тимоѳея	3	15	b	Zofii z 3-ma córkami.
4	Пр. мч. Пелагіи.	2	16	c	Jana Nepomucena M.
5	Св. мч. Ирины.	1	17	d	Paschalisa Wyzn.
6	♔ Св. пр. Іова мног.	7	18	e	♔ Feliksa Kapłana.
7	Знам. Креста Господня въ Іерусал.	6	19	f	Piotra Celestyna P. i Iwona W.
8	*Св. ап. и еванг. Іоанна Богослова.*	5	20	g	Bernardyna Seneńsk.
9	Пер. мощ. св. Николая	4	21	A	Donata i Wiktora.
10	*Св. ап. Симона.*	3	22	b	Julii i Heleny P. M.
11	*Св. Кирилла и Меѳодія, первоуч. Слав.*	2	23	c	Dezyderyusza Bisk.
12	Св. Епифанія, Герм.	1	24	d	Joanny Afry i Zuzan.
13	Мч. Александра.	7	25	e	Grzegorza VII Pap.
14	Св. мч. Исидора.	6	26	f	Filipa Nereusza W.
15	♔ Пр. Пахомія.	5	27	g	♔ Magdaleny de Paz.
16	Пр. Ѳеодора и Еф.	4	28	A	Germana Bisk.
17	Св. Ап. Андроника.	3	29	b	Teodozyi Męcz.
18	Св. мч. Ѳеодота.	2	30	c	Feliksa Pap. Męcz.
19	Пр. Корнилія.	1	31	d	Petroneli i Anieli.

Чис.	Мѣсяцъ Іюнь.	в. л.			CZERWIEC ma dni 30.
20	*Май.* Св. Алексія митр. Моск.	7	1	e	Fortunata Pr. i Prokula M.
21	*Св. Констан. и Елен.*	6	2	f	Blandyny Męcz.
22	Св. мч. Василиска.	5	3	g	Erazma B. i Klot. Kr
23	Св. Михаила и Леон.	4	4	A	Optata Bisk. i Satur.
24	Св. Симеона и Ники.	3	5	b	Bonifacego Bisk. M.
25	*3-е обрѣт. главы Іоанна Предтечи.*	2	6	c	Norberta Bisk.
26	С. ап. Карпа, Аверк.	1	7	d	Roberta Opata.
27	Св. мч. Ѳерапонта.	7	8	e	Maksymina Bisk.
28	Св. Игна. и Никиты	6	9	f	Pryma i Felicyana M.
29	Пр. мч. Ѳеодосіи.	5	10	g	Małgorzaty Kr. Szk.
30	Пр. Исаакія Далмат.	4	11	A	Barnaby Ap.
31	Ап. Ермія и Филосо.	3	12	b	Onufrego Pustel.
1	*Іюнь.* Св. мч. Іустина и Валеріана.	2	13	c	Serca Jez. Antoniego Padewsk.
2	Св. Никифора.	1	14	d	Bazylego B. D. K.
3	Св. мч. Лукиліана.	7	15	e	Wita i Modesta M.
4	Св. Митроф. Зосимы	6	16	f	Benona Biskupa.
5	Св. мч. Дароѳея.	5	17	g	Marcyana Męcz.
6	Пр. Виссаріона.	4	18	A	Marka i Marcelina.
7	Мч. Ѳеодота, Киріа.	3	19	b	Gerwazego i Protaz.
8	Св. Вмч. Ѳеодора.	2	20	c	Sylweryusza P. M.
9	Св. Кирилла архіеп. Александр.	1	21	d	Aloizego Gonzagi.
					Przesilenie dnia z nocą.
10	Св. мч. Тимоѳея.	7	22	e	Paulina Biskupa.
11	*Св. ап. Варѳоломея и Варнавы.*	6	23	f	Agrypiny Panny M.
12	Пр. Онуфрія Велик.	5	24	g	Nar. św. Jana Chrzc.
13	Св. мч. Акилины.	4	25	A	Prospera Bisk.
14	Св. прр. Елисея.	3	26	b	Jana i Pawła M. M.
15	Пр. Амоса, св. Іоны.	2	27	c	Władysława Kr. Węg.
16	Св. Тихона Амаѳун.	1	28	d	Ireneusza Bisk. M.
17	Св. мч. Мануила.	7	29	e	**Piotra i Pawła Ap.**
18	Св. мч. Леонтія.	6	30	f	Emilianny i Lucyny

Чис.	Мѣсяцъ Іюль.	в. л.	LIPIEC ma dni 31.		
19	*Іюнь. Св. ап. Іуды брата Господня.*	5	1	g	Teodoryka Kapł.
20	Св. Меѳодія кн. Глѣ.	4	2	A	Nawiedz. N.M.P.
21	Св. мч. Іуліана.	3	3	b	Heliodora i Anatol.
22	Св. мч. Евсевія.	2	4	c	Józefa Kalasantego.
23	Св. мч. Агриппины.	1	5	d	Cyrylla i Metodego.
24	*Рож. Предт. и Крес. Господня Іоанна.*	7	6	e	Dominiki Panny M.
25	Пр. мч. Февроніи.	6	7	f	Apoloniusza Bisk.
26	Пр. Давида, Іоанна.	5	8	g	Elżbiety Król. Wd.
27	Св. Самисона, Севир.	4	9	A	Anatolii P. M. i Wer.
28	Св. безср. Кира и Іо.	3	10	b	7 braci Męcz.
29	С. ап. Петра и Павла	2	11	c	Sabina Wyzn. Pelagii
30	*Соб. 12 апостоловъ.*	1	12	d	Jana Gwalberta Op.
1	*Іюль.* Св. мч. Космы и Даміана.	7	13	e	Jana z Dukli. Małgorzaty P. M.
2	*Полож. ризы Богор.*	6	14	f	Bonawentury B.D.K.
3	Св. мч. Іакинѳа.	5	15	g	Rozesłanie Apostoł.
4	Св. Андрея, Мареы.	4	16	A	N.M.P. Szkaplerz.
5	*Пр. Аѳан. Сергія Рад.*	3	17	b	Aleksego Wyzn.
6	Пр. Сисоя, Антонія.	2	18	c	Szymona z Lipnicy.
7	Пр. Ѳомы и Акакія.	1	19	d	Wincentego à Paulo.
8	*Явл. Каз Б.М.* Прок.	7	20	e	Czesł.W., Eliasza Pr.
9	Св. мч. Панкратія.	6	21	f	Praksedy P., Daniela
10	Мч. Леонт. *Антонія.*	5	22	g	Maryi Magdaleny.
11	*Св. кн. Ольги,* Евфи.	4	23	A	Apolinarego Bisk. M.
12	С. мч. Прокла, Илар.	3	24	b	Krystyny Panny M.
13	Соб. арх. Гавріила.	2	25	c	Jakóba Ap. i Krzysz.
14	С. ап. Окилы, Онис.	1	26	d	Anny Matki N.M.P
15	*Св. равноап. вел. кн. Владиміра.*	7	27	e	Kunegundy Król. P., Natalii, Pantaleon.
16	Св. мч. Аѳиногена.	6	28	f	Innocentego Pap. M.
17	Вел. мч. Марины, пер. мощ. Лазаря.	5	29	g	Marty P. i Serafiny.
18	Св. мч. Емиліана.	4	30	A	Julitty i Danatylli M.
19	Пр. Макрины.	3	31	b	Ignacego Lojoli.

Чис.	Мѣсяцъ Августъ.	в. л.	SIERPIEŃ ma dni 31.		
20	*Іюль. Прр. Иліи.*	2	1	c	Piotra Ap. w Okowach
21	Пр. Симеона и Іоан.	1	2	d	N. M. P. Anielskiéj.
22	♔ С. Маріи Магдал.	7	3	e	♔ Znal. ś. Szczep. M.
23	Мч. Трофима, Ѳеоф.	6	4	f	Dominika Wyzn.
24	Мч. Христины, *Бориса и Глѣба.*	5	5	g	N. M. P. Snieżnej.
25	Успеніе св. Анны.	4	6	A	Przemien. Pańs.
26	Пр. мч. Параскевы.	3	7	b	Kajetana W. i Donata
27	В. мч. Пантелеймон.	2	8	c	Cyryaka i Larga M.
28	Св. ап. Прохора Никанора.	1	9	d	Romana Męcz.
29	Мч. Каллиника.	7	10	e	Wawrzyńca Męcz.
30	Св. ап. Силы.	6	11	f	Zuzanny i Dygny PP.
31	Св. Евдокима.	5	12	g	Klary Panny.
1	*Авг. Происх. древъ чест. Креста Гос.*	4	13	A	Hipolita i Kassyana.
2	Перен. мощ. архидіакона Стефана.	3	14	b	†Euzebiusza Wyzn.
3	Пр. Исаакія и Ант.	2	15	c	Wniebowz. N. M. P.
4	Св. 7-ми Отроковъ въ Ефесѣ, Евдок.	1	16	d	Rocha Wyzn.
5	Мч. Евсигнія.	7	17	e	Jacka W. Mirona M.
6	Преображеніе Госп.	6	18	f	Agapita Męcz.
7	Пр. мч. Дометія.	5	19	g	Rufina i Maryana W.
8	Св. Емиліана, Миро.	4	20	A	Bernarda Op. D. K.
9	Св. ап. *Матѳея.*	3	21	b	Joanny Fremiot Wd.
10	Мч. Лаврентія, Сик.	2	22	c	Symforyana Męcz.
11	Мч. Евила.	1	23	d	Filipa Benicyusza W.
12	Мч. Фотія, Аникиты	7	24	e	Bartłomieja Apost.
13	Пр. Максима, *Тихон.*	6	25	f	Ludwika Króla.
14	Пр. Михея, *Ѳеодосія*	5	26	g	Zefiryny Męcz.
15	Успеніе Пресв. Бог.	4	27	A	Przen. ś. Kazimierza.
16	*Нерукот. Образ. Г.*	3	28	b	Augustyna B. D. K.
17	Мч. Мирона, Страт.	2	29	c	Ścięcie św. Jana Chrz.
18	Мч. Флора и Лавра	1	30	d	Róży Limańskiéj P.
19	Мч. Андрея, Тимоф.	7	31	e	Rajmunda Wyzn.

Чис.	Мѣсяцъ Сентябрь.	в. л.	WRZESIEŃ ma dni 30.		
20	*Авг.* Пр. Самуила, мч. Севира.	6	1	f	Idziego Op. i Rodosława W.
21	Св. ап. Ѳаддея.	5	2	g	Stefana Króla Węg.
22	Мч. Агаѳоника.	4	3	A	Bronisławy Panny.
23	С. мч. Луппа, Ирин.	3	4	b	Rozalii Panny.
24	Св. мч. Евтихія.	2	5	c	Wawrzyńca i Just. B.
25	Св. ап. Варѳоломея.	1	6	d	Zacharyasza Pror.
26	Мч. Адріана и Ната.	7	7	e	Reginy P. M Wigilia
27	Пр. Пимена и Саввы	6	8	f	Narodzenie N M. P.
28	Пр. Моисея.	5	9	g	Gorgoniusza Męcz.
29	Усѣк. Гл. Іоанна Пр.	4	10	A	Wigilja z Tolent. W
30	♔ *Перен. мощ. св. Александра Невск.*	3	11	b	♔ Prota i Jacka MM.
31	Св. мч. Кипріана.	2	12	c	Hieronida Męcz.
1	*Сент. Пр. Симеона.*	1	13	d	Mauryliusza Bisk.
2	Мч. Маманта, Ѳеод.	7	14	e	Podwyż. św. Krzyża
3	Св. мч. Анѳима.	6	15	f	Nikodema Kapł. M.
4	Св. мч. Вавилы.	5	16	g	Cypryana Bisk. M.
5	Пр. Захарія и Елис.	4	17	A	5 bliźn. św Francisz.
6	*Чудо Арх. Михаила.*	3	18	b	Józefa z Kopertynu.
7	Мч. Созонта, Іоанна	2	19	c	Jannuaryusza B. M.
8	Рожденіе Пр. Богород.	1	20	d	Eustachiusza Męcz.
9	*Св. Богоотецъ Іоакима и Анны.*	7	21	e	N. M. P. Bolej, Mateusza Op.
10	Мч. Минодоры и Митродоры.	6	22	f	Maurycego Męcz.
					Porównanie dnia z nocą.
11	Пр. Ѳеодоры и Евф.	5	23	g	Tekli Panny Męcz.
12	Св. мч. Автонома.	4	24	A	N. M. P. od wyk. niew.
13	Св. мч. Корнилія.	3	25	b	Aurelii P. i Firmina B.
14	Воздвиж. чест. Креста.	2	26	c	Cypryana i Justyny
15	Вел. мч. Никиты.	1	27	d	Przen. ś. Stanisława.
16	Вел. мч. Евфиміи,	7	28	e	Ładysława z Gieln.
17	Мч. Софіи, Вѣры, Надежд. и Любви.	6	29	f	Michała Archanioła.
18	Св. Евменія еписк.	5	30	g	Hieronima D. K

Чис.	Мѣсяцъ Октябрь.	в. л.	PAŹDZIERNIK ma dni 31		
19	*Сент.* Мч. Трофима и Савватія.	4	1	A	Remigiusza Bisk. W.
20	Вел. мч. Евстаѳія.	3	2	b	Aniołów Stróżów.
21	Св. ап. Кодрата.	2	3	c	Kandyda Męcz.
22	Св. мч. Фоки, Іоны.	1	4	d	Franciszka Seraf. W.
23	*Зачатіе Предтечи и Крестит Іоанны.*	7	5	e	N. M. P. Różańc. Placydy Męcz.
24	Св. первомуч. Ѳеклы	6	6	f	Brunona Wyzn
25	Пр. Евфросиніи.	5	7	g	Marka i Justyny M.
26	Св. ап. и ев. Іоанна Бог.	4	8	A	Brygitty Wdowy.
27	Мч. Каллистрата.	3	9	b	Bogdana Opata.
28	*Пр. Харитона.*	2	10	c	Franciszka Borg. W.
29	Пр. Киріака и Ѳеоф.	1	11	d	Placydy Panny.
30	Св. мч. Григорія.	7	12	e	Wincentego Kadłub.
1	*Октябрь.* Покровъ Пресв. Богород.	6	13	f	Edwarda Króla.
2	Св. мч. Кипріана, Давида и Конст.	5	14	g	Kaliksta Pap. Męcz.
3	Св. мч. Діонисія.	4	15	A	Jadwigi Wdowy.
4	Св. мч. Іероѳея.	3	16	b	Martyniana M.
5	в. Петра, Алексія, Іоны.	2	17	c	Wiktora Bisk., Małgorzaty P.
6	*Св. ап. Ѳомы*	1	18	d	Łukasza Ewang.
7	Мч. Сергія и Вакха.	7	19	e	Jana Kantego. Piotra.
8	Пр. Пелагія и Іоси.	6	20	f	Przen. św. Wojciecha
9	*Св. ап. Іакова.*	5	21	g	Urszuli Panny M.
10	Мч. Евлампія и Евл.	4	22	A	Korduli i Alodyi P. M.
11	Св. ап. Филиппа.	3	23	b	Jana Kapistrana.
12	Мч. Прова, Домники и Карпа еп.	2	24	c	Rafała Arch.
13		1	25	d	Kryspina i Kryspiana
14	Мч. Назарія.	7	26	e	Ewarysta Pap. M.
15	Пр. Евфимія и Сави.	6	27	f	Sabiny P. Męcz.
16	Мч. Лонгина сотн.	5	28	g	Szymona i Tadeusza.
17	♔ С. прр. Осіи, Ант.	4	29	A	♔ Narcyza B. i Euzeb.
18	*Св. ап. и еван. Луки.*	3	30	b	Germana i Serapiona.
19	Св. прор. Іоиля.	2	31	c	Wolfganga Bisk.

Чис.	Мѣсяцъ Ноябрь.	в. л.			LISTOPAD ma dni 30.
20	*Окт.* В. мч. Артемія.	1	1	d	**Wszystkich Święt.**
21	Пр. Иларіона.	7	2	e	Dzień Zaduszn. Jerz
22	Казанс. ик. Бож. Мат.	6	3	f	Huberta B., Sylwii.
23	*Св. ап. Іакова брата Господня.*	5	4	g	Karola Boromeusza.
24	Мч. Ареѳы, с. Аѳан.	4	5	A	Zacharyasza i Elżbie.
25	Мч. Маркіана, Мартирія и Анастасія.	3	6	b	Leonarda Męcz.
26	*Вел. мч. Димитрія.*	2	7	c	Nikandra Męcz.
27	Мч. Нестора, Марка	1	8	d	Gotfryda Bisk.
28	Мч. Терентія, вел. мч. Параскевы.	7	9	e	Opieki N. M. P. Teodora Męcz.
29	Пр. мч. Анастасіи.	6	10	f	Andrzeja z Awelinu.
30	Св. мч. Зиновія и Зиновіи.	5	11	g	Marcina B. W.
31	С. ап. Стахія, Никод.	4	12	A	5-ciu braci męczen.
1	*Ноябрь.* Св. безср. Космы и Даміана.	3	13	b	Dydaka W., Zebiny.
2	Мч. Акиндина, Мар.	2	14	c	Serapiona Męcz.
3	Мч. Іосифа и Никт.	1	15	d	Leopolda W.
4	Прп. Іоанникія.	7	16	e	Stanisława Kostki.
5	Мч. Галактіона.	6	17	f	Salomei Panny.
6	Св. Павла исп. Луки	5	18	g	Odona Opata.
7	Пр. Іерона, Лазаря.	4	19	A	Elżbiety Kr. Węg. Wd.
8	*Соб. архис. Михаила*	3	20	b	Feliksa Walezyusza.
9	Мч. Онисифора, Пор.	2	21	c	Ofiarow. N. M. P.
10	С. ап. Ераста, Олим.	1	22	d	Cecylii Panny Męcz.
11	Мч. Мины, Виктора.	7	23	e	Klemensa Pap. M.
12	Св. Іоанна, пр. Нила.	6	24	f	Jana od Krzyża W.
13	*Св. Іоанна Златоус.*	5	25	g	Katarzyny P. M.
14	♔ *Св. ап. Филиппа.*	4	26	A	♔ Piotra Aleksandr.
15	С. мч. Гурія, Самона.	3	27	b	Barlaama Wirgiliusza
16	*Св. ап. и ев. Матѳея.*	2	28	c	Mansweta i Rufa M.
17	Св. Григор., Никона	1	29	d	Saturnina Męcz.
18	Мч. Платона и Романа.	7	30	e	Andrzeja Apostoła.

Чис.	Мѣсяцъ Декабрь.	в. л.			GRUDZIEŃ ma dni 31.
19	*Ноябрь.* Св. прр. Авдія, мч. Варлаама.	6	1	f	Eligiusza Biskupa.
20	Пр. Григорія, Ѳекл.	5	2	g	Bibianny Panny.
21	Введ. во Храм. Пр. Бог.	4	3	A	Franciszka Ksaw.
22	Св. ап. Филимона.	3	4	b	Barbary Panny.
23	*Преставл. благов. князя Алекс. Невс.*	2	5	c	Sabby Opata.
24	Св. мч. Екатерины.	1	6	d	Mikołaja Bisk. W.
25	Св. мч. Климента.	7	7	e	Ambrożego B. D. K.
26	Св. Иннокентія.	6	8	f	**Niepok. Poc. N. M. P.**
27	Вел. мч. Іакова.	5	9	g	Lookadyi i Waleryi
28	Пр. Стефана.	4	10	A	N. M. P. Loretań.
29	Св. мч. Парамона.	3	11	b	Damazego Pap. W.
30	*Св. Андрея Перевозв.*	2	12	c	Aleksandra Męcz.
1	*Дек.* С. прр. Наума	1	13	d	Łucyi Panny Męcz.
2	Пр. Аввакума.	7	14	e	Dyskora i Herona M.
3	Прр. Софоніи.	6	15	f	Waleryana Męcz.
4	*Вел. мч. Варвары.*	5	16	g	Euzebiusza Bisk. M.
5	*Пр. Саввы освящ.*	4	17	A	Łazarza Bisk.
6	♔ Свят. и чудот. Николая Мурликійск.	3	18	b	♔ Gracyana Bisk.
7	Св. Амвросія.	2	19	c	Daryusza Męcz.
8	Пр. Потанія.	1	20	d	Teofila Męcz.
9	*Зачатіе св. Анны,* Самуила.	7	21	e	Tomasza Apostoła.
					Przesunięcie dnia z nocą.
10	Мч. Мины, Ермогена	6	22	f	Zenona Żołnierza M.
11	Пр. Даніила и Луки.	5	23	g	Wiktoryi Panny M.
12	С. Спиридона, Алек.	4	24	A	†Wigil. Irminy P.
13	Св. мч. Евстратія.	3	25	b	**Narodzenie Chr. P.**
14	Св. мч. Ѳирса, Фил.	2	26	c	Szczepana Męcz.
15	Св. мч. Елевѳерія.	1	27	d	Jana Ewangelisty.
16	Св. прр. Аггея.	7	28	e	Młodzianków.
17	Св. прр. Даніила.	6	29	f	Tomasza Kantuaryjs.
18	Мч. Севастіана.	5	30	g	Eugeniusza Bisk.
19	Св. Вонифатія.	4	31	A	Sylwestra B. i Melan.

DOM CESARSKO-RUSSKI.

Jego Cesarska Mość, Najjaśniejszy Pan **ALEKSANDER ALEKSANDROWICZ**, Cesarz i Samowładca Wszech Rossji, urodzony w dniu 26 Lutego (10) Marca 1845 r. [imieniny w dniu 30 sierpnia (11 września).

Jej Cesarska Mość, Najjaśniejsza Pani **MARJA TEODORÓWNA**, urodzona w dniu 14 (26) listopada 1847 r. [imieniny w dniu 22 lipca (3 sierpnia); w stanie zamężnym od 28 października (9 listopada) 1866 r. Córka króla Duńskiego Chrystjana IX i Małżonki Jego, królowej Luizy.

Jego Cesarska Wysokość, Następca Tronu, Wielki Książę **Mikołaj Aleksandrowicz**, urodzony w dniu 6 (18) maja 1868 r. [imieniny w dniu 6 (18) grudnia.

Jego Cesarska Wysokość, Wielki Książę **Jerzy Aleksandrowicz**, urodzony w dniu 27 kwietnia (9 maja) 1871 r. [imieniny w dniu 26 listopada (8 grudnia).

Jego Cesarska Wysokość, Wielki Książę **Michał Aleksandrowicz**, urodzony w dniu 22 listopada (4 grudnia) 1878 r. [imieniny w dniu 22 listopada (4 grudnia).

Jej Cesarska Wysokość, Wielka Księżna **Ksenia Aleksandrówna**, urodzona w dniu 25 marca (6 kwietnia) 1875 r. [imieniny w dniu 24 stycznia (5 lutego).

Jej Cesarska Wysokość, Wielka Księżna **Olga Aleksandrówna**, urodzona w dniu 1 (13) czerwca 1882 r. [imieniny w dniu 11 (23) lipca].

Najdostojniejsi Bracia Najjaśniejszego Pana:

Jego Cesarska Wysokość, Wielki Książę **Włodzimierz Aleksandrowicz**, urodz. w d. 10 (22) kwietnia 1847 r. [imieniny w dniu 15 (27) lipca]. Małżonka Jego, Jej Cesarska Wysokość Wielka Księżna **Marja Pawłówna**, urodz. w d. 2 (14) maja 1854 r. [imieniny

w d. 22 lipca (3 sierpnia). Ich dzieci: Ich Cesarskie Wysokości: Wielki Książę **Cyryl Włodzimierzowicz**, urodzony w d. 30 września (12 października) 1876 r. [imieniny w dniu 11 (23) maja]. Wielki Książę **Borys Włodzimierzowicz**, urodzony w d. 12 (24) listopada 1877 r. [imieniny 2 (14) maja]. Wielki Książę **Andrzej Włodzimierzowicz**, urodz. w d. 2 (14) maja 1879 r. [imieniny 30 listopada (11 grudnia). Wielka Księżna **Helena Włodzimierzówna**, urodzona w d. 17 (29) stycznia 1882 r. [imieniny w d. 21 maja (2 czerwca).

Jego Cesarska Wysokość, Wielki Książę **Aleksy Aleksandrowicz**, urodz. w d. 2 (14) stycznia 1850 r. [imieniny 20 maja (1) czerwca].

Jego Cesarska Wysokość, Wielki Książę **Sergjusz Aleksandrowicz**, urodz. w d. 29 kwietnia (11 maja) 1857 r. [imieniny w d. 5 (17) lipca]. Małżonka Jego, Jej Cesarska Wysokość, Wielka Księżna **Elżbieta Teodorówna**, urodz. w d. 20 października (1 listopada) 1864 r. [imieniny 5 (17) września].

Jego Cesarska Wysokość Wielki Książę **Paweł Aleksandrowicz**, urodz. w d. 21 września (3 października 1860 r. [imieniny w dniu 29 lipca (10 sierpnia). Był żonaty z Jej Cesarską Wysokością, Wielką Księżną Aleksandrą Jerzówną [† w d. 12 (24) września 1891 r.]. Dzieci Jego: Jego Cesarska Wysokość, Wielki Książę **Dymitr Pawłowicz**, urodzony w d. 6 (18) września 1891 r. [imieniny w d. 21 września (3 października). Jej Cesarska Wysokość, Wielka Księżna **Marja Pawłówna** urodzona w d. 6 (18) kwietnia 1890 r. [imieniny w d. 22 lipca (3 sierpnia).

Najdostojniejsza Siostra Najjaśniejszego Pana:

Jej Cesarska Wysokość, Wielka Księżna **Marja Aleksandrówna**, urodzona w dniu 5 (17) października 1853 r. [imieniny w d. 22 lipca (3 sierpnia). Zamężna z Jego Królewską Wysokością Księciem Alfredem-Ernestem-Albertem Wielkobrytańskim, Księciem Edynburskim.

III.

Najdostojniejsi Wujowie i Ciotki Najjaśniejszego Pana:

Jej Cesarska Wysokość, Wielka Księżna **Aleksandra Józefówna**, urodz. w d. 26 czerwca (8 lipca) 1830 r. [imieniny w d. 23 kwietnia (5 maja). Zaślubiona Jego Cesarskiej Wysokości, Wielkiemu Księciu Konstantemu Mikołajewiczowi [† d. 13 (25) stycznia 1892 r.] Jej dzieci:

Jego Cesarska Wysokość, Wielki Książę **Mikołaj Konstantynowicz**, urodz. w d. 2 (14) lutego 1850 r. [imieniny w d. 6 (18) grudnia].

Jego Cesarska Wysokość Wielki Książę **Konstanty Konstantynowicz**, urodz. w d. 10 (22) sierpnia 1858 r. [imieniny w d. 21 maja (2 czerwca). Małżonka Jego, Jej Cesarska Wysokość Wielka Księżna **Elżbieta Maurycówna**, urodz. w d. 13 (25) stycznia 1865 r. [imieniny w d. 5 (17) września]. Ich dzieci: Ich Wysokości: Książę **Jan Konstantynowicz**, urodz. w d. 23 czerwca (5 lipca) 1886 r. [imieniny w d. 24 czerwca (6 lipca); Książę **Gabrjel Konstantynowicz**, urodz. w d. 3 (15) lipca 1887 r. [imieniny w d. 13 (25) lipca]; Książę **Konstanty Konstantynowicz**, urodz. w d. 20 grudnia 1890 r. (1 stycznia 1891 r.), [imieniny w d. 21 maja (2 czerwca); Książę **Oleg Konstantynowicz**, urodz. w d. 16 (27) listopada 1892 r. [imieniny w d. 20 września (2 października). Księżna **Tatjana Konstantynówna**, urodz. w d. 11 (23) stycznia 1890 r. [imieniny w d. 12 (24) stycznia].

Jego Cesarska Wysokość, Wielki Książę **Dymitr Konstantynowicz**, urodz. w d. 1 (13) czerwca 1860 r. [imieniny w d. 21 września (3 października).

Jej Królewska Mość, Wielka Księżna Królowa Hellenów **Olga Konstantynówna**, urodz. w d. 22 sierpnia (3 września) 1851 r. [imieniny 11 (23) lipca], małżonka Jego Królewskiej Mości Króla Hellenów Jerzego I-o.

Jej Cesarska Wysokość, Wielka Księżna **Wiara Konstantynówna**, urodz. w d. 4 (16) lutego 1854 r. [imieniny w d. 23 kwietnia (5 maja), była poślubiona

IV.

Jego Królewskiej Wysokości Wilhelmowi-Eugenjuszowi Wirtembergskiemu.

Jej Cesarska Wysokość, Wielka Księżna **Aleksandra Piotrówna**, urodz. w d. 21 maja (2 czerwca) 1838 r. [imieniny w d. 23 kwietnia (5 maja), była poślubiona Jego Cesarskiej Wysokości, Wielkiemu Księciu Mikołajowi Mikołajewiczowi starszemu [† d. 13 (25) kwietnia 1891 r.] Jej dzieci:

Jego Cesarska Wysokość Wielki Książę **Mikołaj Mikołajewicz**, urodzony w d. 6 (18) listopada 1856 r. [imieniny w d. 27 lipca (8 sierpnia).

Jego Cesarska Wysokość, Wielki Książę **Piotr Mikołajewicz**, urodz. w d. 10 (22) stycznia 1864 r. [imieniny w d. 29 czerwca (11 lipca). Małżonka Jego, Jej Cesarska Wysokość Wielka Księżna **Milica Mikołajówna**, urodz. w d. 14 (26) lipca 1866 r. [imieniny w d. 19 (31) lipca]. Ich córka: Jej Wysokość, Księżna **Maryna Piotrówna**, urodz. w d. 28 lutego (12 marca) 1892 r. [imieniny w d. 28 lutego (12 marca).

Jego Cesarska Wysokość, Wielki Książę **Michał Mikołajewicz**, urodz. w d. 13 (25) października 1832 r. [imieniny w d. 8 (20) listopada]. Był poślubiony z Jej Cesarską Wysokością, Wielką Księżną Olgą Teodorówną [† d. 31 marca (12 kwietnia) 1891 r.]. Jego dzieci:

Jego Cesarska Wysokość, Wielki Książę **Mikołaj Michałowicz**, urodz. w d. 14 (26) kwietnia 1859 r. [imieniny w d. 6 (18) grudnia].

Jego Cesarska Wysokość, Wielki Książę **Michał Michałowicz**, urodz. w d. 4 (16) października 1861 r. [imieniny w d. 8 (20) listopada].

Jego Cesarska Wysokość, Wielki Książę **Jerzy Michałowicz**, urodz. w d. 11 (23) sierpnia 1863 r. [imieniny w d. 26 listopada (8 grudnia).

Jego Cesarska Wysokość, Wielki Książę **Aleksander Michałowicz**, urodz. w d. 1 (13) kwietnia 1866 r. [imieniny w d. 30 sierpnia (11 września).

Jego Cesarska Wysokość, Wielki Książę **Sergjusz Michałowicz**, urodz. w d. 16 (28) września 1869 r. [imieniny w d. 25 września (7 października).

Jego Cesarska Wysokość, Wielki Książę **Aleksy Michałowicz**, urodzony w d. 16 (28) grudnia 1875 r. [imieniny w d. 20 maja (1 czerwca).

Jej Cesarska Wysokość, Wielka Księżna **Anastazja Michałówna**, urodz. w d. 16 (28) lipca 1860 r. [imieniny w d. 22 grudnia (3 stycznia). Poślubiona Jego Królewskiej Wysokości, Wielkiemu Księciu Meklemburg-Szweryńskiemu, Fryderykowi-Franciszkowi.

Jej Cesarska Wysokość, Wielka Księżna **Katarzyna Michałówna**, (córka Wielkiego Księcia Michała Pawłowicza i Wielkiej Księżny Heleny Pawłówny), urodz. w d. 16 (28) sierpnia 1827 r. [imieniny w d. 24 listopada (6 grudnia). Była poślubiona Jego Wielkoksiążęcej Wysokości, Księciu Jerzemu Meklemburg-Strelickiemu.

ŻYWOT

Świętego Stanisława

Biskupa Krakowskiego.

Do szeregów męczenników pańskich, którzy wiernie dochowali żywota swego na chwałę Przedwiecznego, należy i święty Stanisław Biskup Krakowski. Z żywota tego świętego możemy brać naukę, jak mamy żyć, abyśmy swoim przykładem i uczynkami, odwracali zgorszenie, i jak poświęcić wszystko, byle tylko dla chwały Boga, na zbawienie wieczne zasłużyć.

Rodzice św. Stanisława, Wielisław i Bogna szlachetni byli z urodzenia, ale z cnoty i bojaźni Bożéj, w czém jest prawdziwe szlachectwo, szlachetniejsi. To co jest fundamentem wszystkim cnotom w służbie Boga, od którego wszystko jest to co mamy i czego się spodziewamy, umiłowanie mieli. Bo będąc ludzie dostatni, w Szczepanowie wsi swéj, dwie mile od Bochni powiatu Krakowskiego, kościół Panu Bogu zbudowawszy, imię św. Magdaleny nadali. Obiecali Niebu, jeżeliby im dało syna, obrócić go na służbę Bożą: pociechy z niego nie świeckiéj tylko duchownéj, téj, która jest na cześć i na chwałę Pana Boga, pragnąc. A gdy trzydzieści lat, jak z sobą żyli w małżeństwie, dochodziło, nie spodziewając się już potomstwa, przestali na woli Boskiéj, a w nabożeństwie, jałmużnach i dobrych

uczynkach, czekali końca godziny żywota tego. Lecz Bogna stała się matką i powiła syna, któremu na chrzcie dano imię Stanisław, jakby mówiąc: z niego się Stań sława Bogu i Kościołowi.

Z młodości zaraz znać w nim było sprawę Ducha Bożego i przyszłą żywota świątobliwość, skromny, wstydliwy, statecznych nad dziecinny zwyczaj obyczajów, pokazywał się ochotny do nabożeństwa, skłonny do nauki, i iścił w nim Pan Bóg to co rodzice obiecali, a sam tak się sprawował, że bez ich upominania ku temu się miał, co o nim postanowili nim się narodził. Podrosłego, wpierw do Gniezna, gdzie kwitnęła wówczas nauka, następnie do Paryża posłano. Tam będąc dowcipu ostrego, pamięci prędkiéj i mocnéj, przy świętych obyczajach, uczciwém zachowaniu, panieńskiéj czystości i gorących modlitwach, nauk sobie skarb dobry, zwłaszcza w prawie duchowném zebrał. Umyślił w Paryżu, patrząc na ludzi zakonnych i w chrześcijańskiéj cnocie doskonałych, pokutny żywot sobie między niemi obrać, a w ubóstwie, ubogiego Chrystusa naśladować; lecz wypełnić tych myśli, Boskie przejrzenie nie dopuściło, którego na co innego chowało. Wróciwszy do kraju, swemi pokornemi wstydliwemi i świętemi postępkami, z wielką nauką złączonemi, oczy ludzkie na siebie obrócił.

Biskup ówczesny Lambertus, albo Zula, (który wstąpiwszy po arcybiskupie Krakowskim, dostojeństwa arcybiskupiego z pokory zaniechał i o nie

w Rzymie nie starał się, tak, iż kościołowi Krakowskiemu arcybiskupstwo zginęło), ten Stanisława poznawszy, miłować go i do stanu kapłańskiego wieść począł. Jeszcze myśl zakonnego i ostrego żywota świątobliwemu młodzieńcowi w sercu była nie wygasła, dla tego długo się w tém Biskupowi opierając, wszakże na koniec zezwolił, i jego ręką po stopniach, aż na kapłaństwo poświęcony został. Na tym wysokim służby Boskiéj stanie, był wszystkm jako zwierciadło wszelkiéj uczciwości i zachowania się kapłańskiego, a od siebie począwszy, wszystką się pilnością i strażą duchowną opatrzył, aby w czém miejsca czartowskim sidłom nie dał; — bliźnim też służył, zwłaszcza w kazaniach i nauce. Będąc wymownym i uczonym, w kościele Krakowskim i po całym biskupstwie, miewał często i gorące kazania, któremi ludzi do miłości Boskiéj zapalał. Co widząc biskup, wielce pragnął, aby po nim Stanisław na biskupstwo Krakowskie wstąpił, i w starości swéj wszystkie mu sprawy i rządy duchowne jako dozorcy kościołów, zlecił: który też po jego śmierci, od wszystkiego duchowieństwa zgodnie obrany Biskupem Krakowskim.

Miał on o sobie u wszystkich to rozumienie, iż nikt mu w żywocie kapłańskim, nauce i cnotach na to potrzebnych, równym nie był. Acz pokorny i święty kapłan, wielką miał trwogę w sercu i urzędu wielkością i swoją się nieudolnością strasząc, długo od tego uciekał; ledwie się nakoniec prośbą nakłonić dawszy; z bojaźnią wiel-

miary nie miał, i wielkiém u wszystkich stał się zgorszeniem.

Bacząc święty Stanisław, iż to jego rzecz była upominać, przestrzegać i karać, a iż Arcybiskup Gnieźnieński milczał: szedł do Bolesława na pokój, i pięknie go, jak węża słowy Boskiemi zaklinał; od owych grzechów odwodząc, a lekarstwo duchowne na one rany przynosząc: więc kładł mu na oczy Pana Boga i gniew Jego; utratę zbawienia, z płaczem prosząc, aby się upamiętać raczył. Więc on pięknemi słowy za upomnienie dziękował, wiedząc jakiego żywota był człowiek, i jaki sługa Boży, wstydził się go w oczach swych, ale na sercu takimże jako pierwéj zostawał. Skoro wyszedł biskup; z swemi pochlebcy żart z niego czynił owszem daléj w grzechy jawniejsze postąpił. Słysząc o urodzie niejakiéj Krystyny Mścisława z Bużenia cnotliwéj żony: nasławszy na ich dom swe żołnierze, mocą ją wziął i z nią mieszkał. Szemranie pospolite na biskupy się obracało, którzy, tedy zmawiać się poczęli jakoby już jawnie Bolesława upomnieć. A gdy się Arcybiskup i inni małego serca z tego wymawiali a Stanisława jako Boskiego męża, który bez przygany w swoim żywocie, mądrość, serce i wymowę skuteczną miał, prosili ku temu wszyscy: on się nie wymówił: zatem wiele ofiar za niego czyniąc i drugich, aby czynili prosząc: czas upatrzywszy, pojechał do Wrocławia na Szląsko gdzie Bolesław rad przemieszkiwał, i jawnie przed dworzany jego upominał i karał, jakto niegdyś

Jan Chrzciciel, mężnie do niego mówiąc: „Panie, nie godzi się tobie mieć żony brata twego. I długoż w téj zatwardziałości serca trwać będziesz? Czemu na Boga, na duszę twoją, na bliźniego, na majestat królestwa twego, na zakon przyrodzony i Boski nie pamiętasz, a pomsty się Bożéj, która na ciebie i na potomstwo twoje przyjść może, nie boisz?" Lecz Bolesław się słowy gniewliwemi i sromotnemi na lekarza swego i ojca duszy swéj rzucił, a z jadem go wielkim i z niełaską odprawiwszy, myślił na potém jakoby świętego biskupa w czém zelżyć i skrzywdzić miał, nieprzyjacielskie już nań serce nosząc. A szukając przeciw niemu przyczyny, znaleźć inaczéj nie mógł, jedno tę: Kupił był święty Stanisław, nie sobie, ani powinowatym swoim, ale kościołowi i sługom Bożym, wieś Piotrowin nad Wisłą, w powiecie Zawichotskim u Piotra (zwanego także Piotrowinem), tejże wsi dziedzica, który wziąwszy pieniądze, potém rychło zmarł. Bolesław pobudził synowców onego zmarłego, Piotra Jakóba i Sulisława, aby się wsi dopominali. Pozwany był o to Ś. Stanisław przed Bolesława, który w Solcu sądy wielkie odprawował; lecz gdy się brał na świadki, ci pogróżkami zastraszeni, świadczyć prawdy nie chcieli. Wtedy mąż święty, natchnięty Duchem Boskim, ważył się rzeczy niesłychanéj, ale u Pana Boga podobnéj. „Ponieważ u ludzi żywych. prawda i bojaźń Boża ginie"—rzekł przy owym wielkim sądzie — „ucieknę się do umarłych." Za pomocą Boga prawdy, obiecuję tu

po trzech dniach Piotra, u któregom tę wieś kupił, przed sądem stawić, aby sam to co mówię zeznał; a jeźli tego nie uczynię, niech w rzeczy méj upadam." Co gdy Bolesław i wszyscy przytomni usłyszeli, śmiać się i szaleństwo biskupowi przyznawać poczęli. Wszakże ten przez one trzy dni z duchowieństwem swojém, postami się i modlitwami trudząc, dnia trzeciego z processyą i w ubiorze biskupim, szedł do wsi Piotrowiny, niedaleko Solca leżącéj, do grobu Piotra, wszystkim sąsiadom znajomego w kościołku świętego Tomasza. Tam długo modlitwę czyniąc, rozkazał otworzyć grób i ciało już prawie spróchniałe odkryć, wołając: o Boże wszechmogący! u Ciebie jest wszystko podobne. Ty, który prawdą będąc, w prawdzie się kochasz, a fałsz wszelki i nieprawość tępić raczysz, wzbudź kościołowi Twemu świadka, a sąd mój osądź. I rzekł do zmarłego: w Imię Trójcy Świętéj, Ojca i Syna i Ducha świętego, rozkazujęć, wstań! a który się podniósłszy ciałem zupełnym. Więc go biskup przed Bolesława prowadził i stawił. Długo dwór jego i lud wszystek zdumiany był, prawie od siebie odchodził i milczał na oną cudowną, a niesłychaną rzecz patrząc. Gdy tak prawda była wyświadczona, król za kościołem Krakowskim osądził. Mąż święty znów dziwnego świadka w grób wprowadził, w którym skoro legł ducha wypuścił i znowu był pogrzebiony. O dziwne, niesłychane i tak bardzo jawne cudo, którym wsławić raczył moc swoją Pan Bóg, na pokazanie czystéj duszy i świę-

ło przeniesione, i grób w pół kościoła postawiony. W sto siedemdziesiąt i pięć lat nastąpiła jego kanonizacya, za czasu Papieża Innocentyusza IV., z wielkiemi uroczystościami i obrządkami, rozsławiona jawnym cudem wskrzeszenia umarłego.

Mamy się w czém kochać, tym się szczycąc, przez którego wielkie dobrodziejstwa czynić Pan Bóg raczył; którego też wszyscy potem czcili, a jego przyczyny od Pana Boga wzywali; ku wiecznéj sławie Pana naszego Jezusa Chrystusa, którego wespół z Bogiem Ojcem i z Duchem świętym, moc i chwała trwa a wieki. Amen.

po trz
pił, pi
zeznał;
méj up
tomni
wi prz
trzy d
i modl
i w ub
niedale
kim sa
Tomas
otworz
kryć,
jest w
w pra
prawo
świad
w Imi
tego,
ciałe
wa p
wszy
dził
rzec
na,
świ
dzi
wu
bar
swoj

NAUKA
o Rozmyślaniu Duchowném,
czyli
O MODLITWIE DUSZNÉJ.

I.

Rozmyślanie duchowne, czyli modlitwa duszna, jestto wzniesienie myśli i serca ku Bogu, w celu oddania czci należnéj Stwórcy i Zbawicielowi naszemu; w celu przejęcia się świętością prawd religijnych i prawa Bożego; w celu zgłębienia najskrytszych tajników serca naszego i obmyślenia środków poprawy jego; nakoniec w celu uproszenia łask Boskich, iżbyśmy za ich pomocą coraz lepszymi, a tém samém coraz milszymi Bogu stając się, doszli do jak największéj świętości na ziemi, i wysłużyli sobie największą nagrodę w Niebie.

II.

Przedmiot rozmyślania.

Przedmiotem rozmyślania być mogą:

1. Wielkie prawdy religijne, jako to: cel i koniec ostateczny człowieka: jego stworzenie i odkupienie, śmierć, sąd ostateczny, wieczność, niebo i piekło. Prawdy te powinny być najczęstszym przedmiotem rozmyślania, aby wniknęły

nas od wszelkich nieszczęść i przygód. Dozwól jutro znowu ze snu powstać, abym był zdolniejszym do wypełnienia swoich obowiązków, abym mógł żyć według przykazań Twoich świętych.

O Pani nasza! pod Twoją obronę uciekam się Święta Boża Rodzicielko; naszemi prośbami nie racz gardzić w potrzebach naszych, ale od wszelakich złych przygód racz nas zawsze wybawiać. Panno chwalebna i błogosławiona, Pani nasza, Orędowniczko nasza, Pośredniczko nasza, Pocieszycielko nasza, z Synem Twoim nas pojednaj, Synowi Twojemu nas zalecaj, Twojemu Synowi najmilszemu nas oddawaj.

℣. Módl się za nami Święta Boża Rodzicielko.

℟. Abyśmy się stali godnymi obietnic Chrystusowych.

Dozwól, abym Cię chwalił Panno święta na wieki.

Błogosławiony Bóg w Świętych swoich. Amen.

MODLITWA
do Najświętszéj Maryi Panny.
św. Bernarda.

Pomnij o najmiłosierniejsza Panno Maryo, iż niesłyszano nigdy, aby ktokolwiek co się pod Twoję obronę uciekał, o Twoje wstawienie się, błagał i żebrał wspomożenia Twego, od Ciebie został opuszczony. Taką ufnością ożywion, o Panno nad Pannami, Matko! do Ciebie biegnę, przed Tobą stawam w méj nędzy, i grzesznik płaczący rzucam się pod nogi Twoje. O Matko słowa wcielonego, nie gardź wołaniem mojém, ale je usłysz łaskawie i wysłuchaj. Amen.

MODLITWA
oddania się opiece Boskiéj.

Oddajemy się w opiekę Twoją, Boże wszechmogący, abyś nas zachował téj nocy od wszelkiego niebezpieczeństwa duszy i ciała. Tyś obrona nasza, bo Twojéj ręce podlega wszystko, a bez woli Twojéj nic się nie może stać na ziemi, która jest podnóżkiem Twoim; wszakże i włos z głowy nie spadnie temu, który się oddał świętéj Twojéj opiece, przez Pana i Zbawiciela naszego, Syna Twego najmilszego. Amen.

ga, światłość z światłości, Boga prawdziwego, zrodzonego, nieutworzonego, współistotnego Ojca, przez którego wszystko się stało. Który dla nas ludzi i dla naszego zbawienia zstąpił z Niebios i wziął na się ciało za sprawą Ducha świętego z Maryi Panny i stał się człowiekiem. Ukrzyżowan także za nas pod Pontskim Piłatem, umarł i pogrzebion; i zmartwychwstał trzeciego dnia podług pisma i wstąpił do Nieba, siedzi na prawicy Ojca i znowu ma przyjść w chwale sądzić żywych i umarłych: którego królestwu nie będzie końca. I w Ducha świętego Pana i Ożywiciela, który od Ojca i Syna pochodzi, który z Ojcem i Synem wspólnie jest czczony i wielbiony, który mówił przez Proroków. I w jeden święty Katolicki i Apostolski kościół, wyznaję jeden chrzest na dpuszczenie grzechów i oczekuję zmartwychwstania umarłych i życia przyszłego wieku. Amen.

[illegible]arowanie.

P[illegible] Ojcze nebi[illegible] wszechmocny i wieczny Ty[illegible] Boże! oto jakkolwiek grzesznik niego[illegible] dny, zaufa[illegible]dnak w wielkiéj do[illegible]

Twojéj, poważam się ofiarować Tobie, przez ręce kapłana Twojego, chléb i wino; ofiaruję Ci dary które Ty, Stwórco, na pokarm i wzmocnienie sił naszych dałeś, a potém przeznaczyłeś je na przeistoczenie się wszechmocnością słowa, w Ciało i krew jednorodzonego Syna Twojego. Ofiaruję Ci je dla wyznania najwyższego panowania Twego nade mną i nad wszystkiemi stworzeniami na zadosyć uczynienie za grzechy i przewinienia moje i wszystkich tu przytomnych i wszystkich wiernych chrześcijan, tak żywych jako i umarłych. Miéj także litość, o Stwórco, nad wszystkiemi grzesznikami. Przyjmij, o Panie, tę ofiarę, którą oto poświęcamy Ci na pamiątkę męki, zmartwychwstania i woją, Boże Jezusa Chrystusa, cześć Najświętszej Maryi zawsze Panny, etego ana Chrzciciela, świętych Apos w Piota i Pawła i Wszystkich świętych, iżby się za nas wstawiać raczyli w Nie, których pamiątkę obchodzimy na mi.

Prefacy

Otóż szczęśliwa chw w któréj najwyższy Aniołów i ludz Rządca, ma się ukazać. Panie, napełnij nie duchem Twoim: niech serce moje, oderane od ziemi, Tobą się samym zajmie. Bo ja to mam przyczyn i obowiązków błogosławienia Cię, uwielbienia Cię, Boże Nieba i ziemi, Panie nieskończenie wielki, Ojcze wszechmocny i wieczny!... Nic nie ma sprawiedliwszego, nic pożyteczniejszego dla nas jak połączyć się z Jezusem dla oddawania Ci nieustannéj adoracyi. Przez Niego to wszystkie moce niebieskie, ogarnone pełnym uszanowania strachem, łączą się i jednoczą ku uwielbieniu Ciebie. Pozwól, o Panie, abyśmy te przyłączyli nasze słabe pochwały, do pochwał i uwielbień tych duchów. i abyśmy zgodnie z niemi, uniesieni radością i podziwieniem, mówili: Święty, święty, święty Pan Bóg zastępów. Pełne są Niebo i ziemia Majestatu chwały Jego. Błogosławcie Go wszystkie Duchy niebieskie. Niech będzie błogosławiony, który idzie w Imię Pańskie.

———

Kanon i konsekracya.

Ojcze miłosierdzia, prosimy Cię z najgłębszą pokorą i błagamy, aby łaskawie przyjąć i błogosławić raczył te dary, te ofiary święte, nienaruszone, które Ci przez ręce kapłana składamy. A naprzód poświęcamy je za kościół Twój święty katolicki, abyś go w pokoju, całości i jedności zachował, bronił i rządził ze wszystkiemi składającymi go członkami, z naszym Ojcem świętym papieżem, z naszym biskupem i ze wszystkiemi wiarę Twoją świętą wyznającemi, polecamy Ci w szczególności, o Panie, wszystkich téj świętéj ofierze przytomnych, a osobliwie NN. Aby zaś, wielki Boże, te nasze modły przyjemniejsze Ci były, łączymy się z błogosławioną Mary, zawsze Panną, Matką Pana naszego Jezusa Chrystusa, ze wszystkimi Apostołami Twoimi, ze wszystkimi Męczennikami i Świętymi w N... Ach! czemuż nie mam w té chwili ... gorącego pragnienia, z którem święc... tryarchowie oczekiwali przybyia Messy... czemu nie mam ich wiary i miłości! ... dź Panie Jezu! przyjdź najukochańsz... nowicielu świata, przyjdź i spełnij...

Oddaj... wszechm... od wszel... ła. ... legi... nie... kie... spa... jéj... go,

...ry... co... wsta... Twe... ufno... Matk... wam... rzuca... wa wo... ale je...

...Pawła... n nas... a pa...

...ij naj...

Ty jesteś Kapłan od końca wieka,
Według obrządku Melchizedeka.
Przy téj prawicy Pan jest nad pany,
W dzień gniewu swego zetrze tyrany,
Sąd swój rozciągnie po całym świecie,
I nieposłuszne narody zgniecie.
Pyszną na ziemi głowę poniży,
Która mu Jego chwały ubliży,
Z mętnéj po drodze pić będzie rzeki,
Dla tego głowę wzniesie na wieki.
Chwała bądź Bogu w Trójcy jedynemu,
Ojcu, Synowi, Duchowi świętemu,
Jak na początku, i zawsze i ninie,
Niech Imię Pańskie na wiek wieków słynie.

PSALM 110.

Confitebor Tibi Domine.

Całém Cię sercem chwalić będę Panie
Gdzie rada mędrców, gdzie cały zbór stanie
Wielkość niezmierna dzieł Boga Jakóba,
Któremi władnie jak mu się podoba.

Co pocznie, wszystko pełne jest zacności,
Pełne uwielbień, wiek sprawiedliwości,
Jego nie przetrwa żaden, a na ziemi
Wiecznie pamiętny będzie cudy swemi.

Pan dobrotliwy, Pan to miłosierny,
Karmi i hojnie bogaci lud wierny,
Stateczny w słowie, co raz postanowił,
Wiecznemi czasy tego nie odmówił.
Moc swą okazał gdy wygnał pogany,
A ten kraj synom Izraela dany,
Sprawy rąk Jego prawdą miarkowane,
A zaś słusznością prawa prostowane.
Te się na wieki żadnych lat nie boją,
Bo na słuszności i na prawdzie stoją;
Pan sługi swoje z niewoli wybawił,
I dla nich wieczny testament zostawił.
Imię ma straszne i pełne świętości,
A bojaźń Boża początkiem mądrości,
Ci co z niéj biorą wzór życia na ziemi,
Będą od wszystkich wiecznie chwalonemi.
Chwała bądź Bogu w Trójcy i t. d.

PSALM 111.

Beatus vir qui timet Dominum.

Szczęśliwy i nie zna kaźni,
Kto w Pańskiéj żyje bojaźni,
Najmilsza jemu jest droga,
Iść według przykazań Boga.
Ród jego zacna na ziemi,
Równa zawżdy z możnymi.

Ród się cnotliwych rozpleni,
I będą błogosławieni.
Dom jego będzie obfity
W zbiory i trwałe zaszczyty,
A cześć poczciwego człeka,
Pójdzie od wieka do wieka.
Niechaj moc zaćmi mgły swemi,
Światło jest nad cnotliwemi,
Zawsze im Pan jest życzliwy,
Litośny i sprawiedliwy.
Człek miły pełen wesela,
Gdy drugim swego udziela,
W słowie się swoim tak rządzi,
Że co wyrzecze nie zbłądzi.
Wieczna pamiąć jego sprawy
[illegible] i Synowi i Duchowi [illegible]
Uwieczni, był to mąż prawy.
I zły go język nie trwoży,
Bezpieczen w nadziei Bozéj.
Stateczność Jego cnéj duszy,
Żadną się rzeczą nie wzruszy,
Wydoła złéj chwili snadnie,
Aż nieprzyjaciel upadnie.
Rozsypał swoje szczodroty,
Na wdowy biedne sieroty,
Przeto uczynnością słynie,
I chwała Jego nie zginie.

Zły na to patrząc boleje,
Zgryzta z zazdrości sinieje,
Taki co w głowie uradzi,
Do skutku nie doprowadzi.
Ojcu razem i Synowi,
Świętemu także Duchowi,
Jak była tak niechaj wszędzie,
Wieczna chwała zawsze będzie.

PSALM 112.

Laudate pueri Dominum.

Pan sługie o dziatki najwyższego Pana,
Imię Jego Imię w uszach ludzkich słynie,
Bóg bojaźń Boży swoim torem płynie!
Od wieku po wieki wzór życia na ziemi,
Gdzie wschodzi słońce i kędy zapada,
Niechaj świat Boską chwałę opowiada,
Pan ma narody wszystkie pod nogami,
Jego się chwała wznosi nad gwiazdami.
Kto się wzdy z Panem tém porówna który
Wysoko siedząc, z swéj niebieskiéj góry,
Co na niebie i co jest na ziemi,
Wszystkiemi widzi nienchronionemi.
Pan ubogiego z gnoju wyprowadzi,
Porówna książętami na ławie posadzi,

Albowiem uczynił mi wielkie rzeczy, który
Mocny jest i święte Imię Jego.
Miłosierdzie Jego od narodu do narodu
Bojącym się Jego.
Uczynił moc ramieniem swojém, rozproszył
Pyszne myślą serca ich.
Złożył mocarze z stolice, a podwyższył pokorne.
Łaknących napełnił dobrami, a bogacze z
Niczem odprawił.
Przyjął Izraela sługę swego wspomniawszy
Na miłosierdzie swoje.
Jak mówił do Ojców naszych, Abrahamowi
Nasieniu jego na wieki.
Chwała Ojcu i Synowi i Duchowi świętemu,
Jak była na początku i t. d.

PIEŚŃ

o Najświętszéj Maryi Pannie.

Od pierw. niedz. Adwentu aż do Gromnic.

Panno Marja, Matko wsławiona,
Pana naszego! bądź pozdrowiona:
Ty przewodniczką jesteś do nieba,
Dokąd nam ludziom dążyć potrzeba.

O gwiazdo morska, Panno nad panny,
Niech Syn Twój przez Cię jest ubłagany,
Gdy na téj ziemi, na téj niskości,
Lud grzeszny wstaje z swych nieprawości.
Za Gabryela Tyś zwiastowaniem
Stałaś się Panno godnem mieszkaniem;
Syna i Stwórcy dziwnym sposobem,
O Panno czysta bądź nam przed Bogiem
Naszą obroną i pośredniczką,
W czasie utrapień orędowniczką,
A my zaś Ciebie Matko litości!
Wychwalać będziem na téj niskości.

Od Gromnic do Wielkiego Czwart[illegible]

Witaj Królowa, Gwiazdo niebieska!
Witaj Marja, Pani Anielska!
Witajże źródło, bramo światłości!
Dla nędznych ludzi na téj niskości.
Wesel się raduj Panno chwalebna!
Nad wszystkie Panny piękna wielebna!
Zawitaj Matko na wysokości!
Proś Syna Twego za nasze złości.

Od Wielkiego Czwartku aż do Trójcy św.

Królowo nieba: Panno Marya!
Wesel się, raduj All. Alleluja.

Już przeminęły smutki boleści,
Któreś uczuła przy Syna śmierci.
Ten któregoś Ty Panno nosiła,
Ubogo w stajni kiedyś zrodziła,
Ten już zmartwychwstał, ciesz się Marya!
Chrystus Pan żyje, All. Alleluja.
Matko litości proś za nas Boga,
Gdy nas dolega smutek i trwoga;
Proś a stanie się Matko miłości!
Że zmartwychwstaniem z swych nieprawości.

Od Trójcy świętéj aż do Adwentu.

Witaj Królowo, Matko litości,
Nasza nadziejo życia słodkości,
Witaj Marya, Matko jedyna,
Matko nas ludzi, Salve Regina.
Nędzne my dzieci Ewy wołamy,
Do Ciebie Matko z płaczem wzdychamy,
Niech nas wspomaga Twoja przyczyna,
Na tym padole, Salve Regina.
O pośredniczko rzuć Twe wejrzenie
Łaskawe, od nas przyjmij westchnienie;
Pokaż nam Matko Twojego Syna,
W górnéj krainie, Salve Regina.

DZIEŃ POKUTNY

SIEDM PSALMÓW POKUTNYCH.

Antyfona.

Nie racz pamiętać Panie na występki nasze, albo rodziców naszych, i nie racz nas karać za grzechy nasze.

I. Psalm 6

Panie! w zapalczywości Twojéj nie karz mnie; i w rozgniewaniu Twojém nie bierz pomsty ze mnie.

Zmiłuj się nade mną Panie, bom chory jest uzdrów mnie Panie, boć udręczone są kości moje.

I dusza moja strwożona jest bardzo, ale Ty Panie pókiż mię tak trzymać będziesz?

Obróć się Panie, a wyrwij duszę moję, wybaw mnie dla miłosierdzia Twego.

Albowiem w śmierci nie masz ktoby na Cię pamiętał, a w piekle któż Cię chwalić będzie?

Pracowałem w wzdychaniu mojém, będę

umywał na każdą noc łóżko moje: łzami mojemi będę polewał pościel moję.

Zatrwożyło się od zapalczywości oko moje, zastarzałem się między wszystkiemi nieprzyjaciołmi mego zbawienia.

Odstąpcie ode mnie wszyscy, którzy czynicie nieprawość, albowiem wysłuchał Pan głos płaczu mego.

Wysłuchał Pan prośbę moję; Pan modlitwę moją przyjął.

Niech będą pochańbieni i wielce zatrwożeni wszyscy nieprzyjaciele moi (*) niech się nawrócą i zawstydzą bardzo prędko.

Chwała Ojcu i Synowi i Duchowi św.

Jak była na początku i t. d.

II. Psalm 31.

Błogosławieni, którym odpuszczone są nieprawości, i których zakryte są grzechy.

Błogosławiony to mąż, któremu Pan grzechu nie poczytał; a niemasz w duchu jego zdrady.

Ale iżem milczał, zastarzały się kości moje gdym wołał cały dzień.

(*) t. j. i we wszystkich podobnych miejscach: czarty, świat i ciało.

Bo we dnie i w nocy ciężała nade mną ręka Twoja, nawróciłem się w ucisku moim, gdy utkwiło we mnie ciernie.

Przetóż grzech mój oznajmiłem Tobie; a niesprawiedliwości mojéj nie taiłem.

Rzekłem: wyznam przeciwko sobie niesprawiedliwość moją Panu; a Tyś odpuścił nieprawości grzechu mego.

Dla tego będzie się modlić do Ciebie wszelki święty czasu przygodnego.

Wszakże w potopie wód mnogich do niego się nie przybliżą.

Tyś jest ucieczka moja od utrapienia, które mnie ogarnęło, o Boże radości moja! wyrwij mnie od tych którzy mnie otoczyli.

Dam ci rozum i nauczę cię na drodze téj którą pojdziesz, i umocnię nad tobą oczy moje.

Nie bądźże jako koń i muł, którzy nie mają rozumu.

Wędzidłem i uzdą ściśnij szczęki tych, którzy się nie przybliżą Panie do Ciebie.

Wiele jest biczów na grzesznika, ale ufającego w Panu miłosierdzie ogarnie.

Weselcie się w Panu i radujcie się ludzie sprawiedliwi, a chwałę odnoście wszyscy prawego serca.

Chwała Ojcu i Synowi i t. d.

III. Psalm 37.

Panie nie w zapalczywości Twojéj strofuj mnie; ani w gniewie Twoim karz mnie.

Albowiem strzały Twoje utkwiły we mnie, wzmocniłeś nade mną rękę Twoję.

Nie masz zdrowia w ciele mojém dla obliczności gniewu Twego; nie masz pokoju kościom moim dla przytomności grzechów moich.

Albowiem nieprawości moje, przewyższyły głowę moję, a jako brzemię ciężkie obciążyły mię.

Pogniły i popsowały się blizny moje; przez głupstwo moje.

Znędzniałem i skurczyłem się aż do końca cały dzień chodziłem zasmucony.

Jestem strapiony i bardzo uniżony; ryczałem od wzdychania serca mego.

Panie przed Tobą jest wszelka chuć moja i wzdychanie moje przed Tobą nie jest skryte.

Serce moje strwożone jest we mnie, opu-

ściła mnie siła, a jasności oczu moich i téj nie masz przy mnie.

Przyjaciele moi i bliscy moi; naprzeciwko mnie przybliżyli się i stanęli.

A ci, którzy przy mnie byli z daleka stali, a gwałt mi czynili, którzy szukali duszy mojéj.

A którzy mi szukali złego, mówili marności, a zdrady cały dzień wymyślali.

A ja jako głuchy nie słyszałem; a jako niemy nie otwierający ust swoich.

I stałem się jako człowiek niesłyszący i nie mający odporu w ustach swoich.

Albowiem w Tobiem Panie ufał; Ty mnie wysłuchaj, Panie Boże mój.

Bom tak mówił: aby się kiedy nie weselili nade mną nieprzyjaciele moi: którzy gdy szwankują nogi moje; przeciwko mnie wielkie rzeczy mówili.

Bom ja na bicze gotów jest i ból mój przed obliczem moim jest zawzdy.

Albowiem nieprawość moję oznajmię i będę myślał z żałością za grzech mój.

Lecz nieprzyjaciele moi żyją i zmocnili się nade mną i rozmnożyli się ci, którzy mnie nienawidzą niesprawiedliwie.

Którzy oddawają złe za dobre uwłaczali mi iżem naśladował dobroć.

Nie opuszczaj mnie; Panie Boże mój, nie odstępuj ode mnie.

Przybądź na ratunek mój, Panie Boże zbawienia mego.

Chwała Ojcu i Synowi i t. d.

IV. Psalm 5.

Zmiłuj się nade mną, Boże według wielkiego miłosierdzia Twego.

A według mnóstwa litości Twoich; zgładź nieprawość moją.

Jeszcze więcéj obmyj mnie od nieprawości mojéj i od grzechu mego oczyść mię.

Albowiem ja znam nieprawość moją grzech mój jest zawsze przede mną.

Tobie samemu zgrzeszyłem i złość przed Tobą uczyniłem; abyś się Ty usprawiedliwił w mowach Twoich, ażebyś, zwyciężył gdy Cię posądzają.

Oto bowiem w nieprawościach jestem poczęty; a w grzechu poczęła mię matka moja.

Ale Ty Panie umiłowałeś prawdę; niewiadome i skryte rzeczy mądrości Twojéj objawiłeś mi.

Pokropisz mię Panie hizopem, a będę oczyszczony; obmyjesz mię a będę nad śnieg wybielony.

Słuchowi memu dasz radość i wesele i rozradują się kości poniżone.

Odwróć oblicze Twoje od grzechów moich, a zgładź wszystkie nieprawości moje.

Serce czyste stwórz we mnie, Boże! i ducha prawego odnów we wnętrznościach moich.

Nie odrzucaj mnie od oblicza Twego i Ducha Twego świętego nie bierz ode mnie.

Przywróć mi radość zbawienia Twojego; i duchem przedniejszym potwierdź mnie.

Będę nauczał nieprawe dróg Twoich, a niezbożni do Ciebie się nawrócą.

Wybaw mnie ze krwi Boże! Boże! zbawienia mojego: a język mój z radością będzie wysławiał sprawiedliwość Twoją.

Panie otwórz wargi moje; a usta moje będą opowiadać chwałę Twoję.

Albowiem gdybyś był chciał ofiary, wzdybym Ci ją był dał: lecz w całopalonych ofiarach nie będziesz się kochał.

Ofiara Bogu wdzięczna jest duch strapiony; serca skruszonego i uniżonego Boże nie wzgardzisz.

Uczyń dobrze, Panie! Syonowi w dobréj woli Twojéj, aby się zbudowały mury Jerozolimskie.

Natenczas wdzięcznie przyjmiesz ofiarę sprawiedliwości i ofiary całopalone: tedy nakładą na ołtarz Twój cielców.

Chwała Ojcu i Synowi i t. d.

V. Psalm 101.

Panie wysłuchaj modlitwę moją, a wołanie moje niech do Ciebie przyjdzie.

Nie odwracaj oblicza Twego ode mnie; któregokolwiek dnia jestem uciśniony, nakłoń ku mnie ucha Twego.

Któregokolwiek dnia wzywać Cię będę: prędko wysłuchaj mnie.

Albowiem ustały jako dym dni moje: a kości moje jako skwarki wyschły.

Zwiądłem, jako siano i wyschło serce moje, żem zapomniał pożywać chleba mojego.

Stałem się podobny pelikanowi na puszczy mieszkającemu i stałem się jako kruk nocny w pustkach.

Nie spałem i stałem się jako wróbel, który sam zostaje na dachu.

Przez cały dzień urągali mi nieprzyjaciele moi, a ci, którzy mnie chwalili, przeciwko mnie się przysięgali.

Bom popiół jako chléb jadał; a napój mój mięszałem z płaczem.

Dla oblicza gniewu popędliwości Twojéj, albowiem podniósłszy, rzuciłeś mnie.

Dni moje zeszły jako cień, a jam usechł jako siano.

Ale Ty Panie! trwasz na wieki; a pamiątka Twoja od rodzaju do rodzaju.

Ty powstawszy, zmiłujesz się nad Syonem; boć już czas zmiłowania nad nim, już przyszedł czas.

Albowiem upodobały się sługom Twoim kamienie jego, i użalą się ziemie jego.

I będą się narody bały Imienia Twego, Panie! i królowie ziemscy wielmożności Twojéj.

Albowiem Pan pobudował Syon, i okaże się w chwale swojéj.

Wejrzał na modlitwę poniżonych! i nie wzgardził prośbą ich.

Niech to napiszą rodzajowi potomnemu; a lud który strwożony będzie, chwalić Pana będzie.

Albowiem wejrzał z wysokiéj świątnicy Swojéj: Pan z nieba na ziemię spojrzał.

Aby wysławiono Imię Pańskie na Syonie i chwałę Jego w Jeruzalem.

Gdy się narody zbiorą w jedno: I królowie aby służyli Panu

Odpowiedział mu w drodze mocy swojéj: krótkość dni moich objaw mi.

Nie bierz mnie z tego świata w połowicy dni moich: lata Twoje (trwają) od wieku do wieku.

Tyś na początku ziemię ugruntował: i niebiosa są dziełem rąk Twoich.

Oneć poginą, ale Ty zostaniesz; i wszystkie jako szata zwietrzeją.

I jako odzienie odmienisz je, i odmienią się, a Ty zawzdy jednakim i lata Twoje nie ustaną.

Synowie sług Twoich mieszkać będą: a potomstwo ich na wieki będzie szczęśliwie prowadzone.

Chwała Ojcu i Synowi i t. d.

VI. Psalm 129.

Z głębokości wołałem ku Tobie, Panie, Panie! wysłuchaj głos mój.

Niech będą uszy Twoje nakłonione: na głos modlitwy mojéj.

Jeżeli będziesz pilnie uważał nieprawości, Panie, Panie! a któż się ostoi.

Albowiem u Ciebie jest zlitowanie i dla zakonu Twego czekałem Cię Panie.

Czekała dusza moja na słowo Jego; ufała dusza moja w Panu.

Od straży porannéj aż do nocy, niechaj ufa Izrael w Panu.

Bo u Pana jest miłosierdzie; i obfite u Niego odkupienie.

A On odkupił Izraela ze wszystkich nieprawości jego.

Chwała Ojcu i Synowi i t d.

VII. Psalm 132.

Panie wysłuchaj modlitwę moję, przyjmij w uszy prośbę moję, w prawdzie Twojéj wysłuchaj mnie w sprawiedliwości twojéj.

A nie wchodź do sądu z sługą Twoim: albowiem nie usprawiedliwi się przed obliczności Twoją żaden żywy człowiek

Albowiem prześladował nieprzyjaciel duszę moję, poniżył na ziemi żywot mój.

Posadził mnie w ciemnych miejscach jako z dawna pomarłe: sfrasował się we mnie duch mój i serce moje we mnie się strwożyło.

Pamiętałem na dni stare, rozmyślałem o wszystkich sprawach Twoich: uczynki rąk Twoich rozbierałem sobie.

Wyciągnąłem ku Tobie ręce swoje: dusza moja jako ziemia bez wody ma się ku Tobie.

Wysłuchaj mię prędko, Panie! boć już duch mój ustał.

Nie odwracaj oblicza Twego ode mnie; boć będę podobnym zstępującym do dołu.

Spraw, abym usłyszał rano miłosierdzie Twoje, bom ja w Tobie ufał.

Oznajmij mi drogę, którąbym miał chodzić, bom ku Tobie podniósł duszę moję.

Wyrwij mnie od nieprzyjaciół moich; Panie! do Ciebiem się uciekał, naucz mnie czynić wolę Twoją, albowiem Tyś Bogiem moim.

Duch Twój dobry zaprowadzi mię na ziemię równą, dla Imienia Twego Panie ożywisz mię w sprawiedliwości Twojéj.

Wywiedziesz z utrapienia duszę moją: a w miłosierdziu Twojém, wytracisz, wszystkie nieprzyjacioły moje.

I zagubisz wszystkie, którzy dręczą duszę moję bomci ja sługa Twój.
Chwała Ojcu i Synowi i t. d.

Antyfona.

Nie racz pamiętać Panie na występki nasze, albo rodziców naszych i nie racz nas karać za grzechy nasze. Amen.

Przygotowanie się
do Spowiedzi Świętéj.

Jeślibyśmy się spowiadali grzechów naszych, wierny jest i sprawiedliwy Bóg, aby nam odpuścił grzechy nasze i oczyścił nas od wszelkiéj nieprawości. (1. Jan 1. 8.)

Zbawienne Rozmyślanie
nad historyą syna marnotrawnego do wzbudzenia ducha pokuty.

(Według Ks. Krasety.)

Człowiek niektóry miał dwóch synów. I rzekł młodszy z nich ojcu: „Ojcze daj mi część majętności, która na mnie przypada." I rozdzielił im majętność. A po wielu dni zabrawszy wszystko młodszy syn,

odjechał w daleką krainę i rozproszył tam majętność swą, żyjąc rozpustnie.

Oto obraz grzesznika! On to dom Ojca Niebieskiego opuszcza, aby się rozpuście oddać. Oddala się od oblicza Boga i zrzeka się prawa do dziedzictwa wiecznego. Rozprasza w rozpuście niepochamowanéj wszelkie dary, które dusza i ciało jego z ręki Ojca niebieskiego odebrała.

Ach Boże! jamto tym synem marnotrawnym — opuszczając Ciebie i pogardzając Twoją opieką, wpadłem w ręce bezbożnych towarzyszów. — Wszystkie skarby łask Sakramentalnych i zasług, które posiadałem, marnie rozproszyłem. Któż mi da łez do opłakiwania téj straty! Jak się ostoję, gdy mię wezwiesz do ścisłego rachunku z wszelkich utraconych darów?

A gdy wszystko utracił, stał się głód wielki w onéj krainie i on począł niedostatek cierpieć, a szedł i przyszedł do jednego obywatela onéj krainy. I posłał go do wsi swojéj, aby pasł wieprze. I radby był napełnił brzuch swój młótem, które jadły wieprze, a nikt mu nie dawał.

Jak trafnie tu stan duszy malowany.

która Boga opuszcza! nie mając pociechy z niebios, ani posiłku ze świętych Sakramentów! przyjmuję służbę u szatana, który jéj wieprze do paszenia daje, to jest, podaje jéj bydlęce rozkosze, któremi się w służbie jego upaja. Radaby się dusza, do szlachetnych i duchownych dóbr stworzona, cielesnemi chuciami nasycać, lecz daremno, gdyż nie te są pokarmem jéj.

Co za gorzka zmiana, co za dotkliwa nędza! Człowiek na obraz Boski stworzony, podobnym się uczynił nierozumnemu bydlęciu, pasie się jak bydlę i tarza się na kształt jego w błocie.

Co czynisz duszo moja! czego szukasz, czego pragniesz? Mniemasz; że się tak szkaradnemi nasycisz chuciami? One są żywnością dla bydląt; dusza zdolna do poznania Boga, jedynie tylko przez Boga nasyconą być może.

A przyszedłszy ku sobie, rzekł: „Jak wiele najemników w domu ojca mego mają dosyć chleba, a ja tu głodem umieram! Wstanę i pójdę do ojca mego i rzeknę mu: ojcze zgrzeszyłem przeciw niebu i przed Tobą Jużem nie jest godzien być zwan synem

Twoim; uczyń mię jako jednego z najemników twoich." A wstawszy szedł do ojca swego.

Tak tedy za zwyczaj działają utrapienia, nawracają nas do Boga. Nawiedza Pan Bóg łaskami duszę, którą nawiedził dolegliwościami. Otwiera téj oczy, porusza serce pokazuje przepaść, w którą grzech wtrąca i przemawia w żałości do jéj serca: Uznajże tedy co to znaczy mnie obrażać! Cóż zyskałeś mnie opuściwszy? Jaką masz pociechę ze stworzeń któreś ukochała? Uczułaśże kiedy pokoju, odkądeś się z pod mego uchyliła ramienia? Słusznąsz to było rzeczą dla krótkotrwałych i obrzydłych uciech, opuścić swego ojca zrzekać się królestwa nad wszystkie króle twa, utracić moją łaskę i spokojność sumienia? Wracaj mój synu! O duszo! duszo moja! spiesz na to wezwanie tak łaskawe, spiesz się dziś jeszcze, teraz spiesz do ojca; bo może dziś miłosierny Ojciec, jutro może już będzie surowym sędzią; Bóg który dziś woła, jutro już może wołać nie będzie.

Gdy usłyszycie głos Jego, nie zatwardzajcie serc waszych, mówi do ciebie Psalmista.

A gdy jeszcze był daleko, ujrzał go ojciec jego i miłosierdziem wzruszony jest, a przybliżywszy się, upadł na szyję jego i pożałował go. I rzekł mu syn: „Ojcze, zgrzeszyłem przeciw niebu i przed Tobą; jużem nie jest godzien być zwan synem twoim."

I rzekł ojciec do sług swoich: „Rychło przynieście pierwszą szatę, a obleczcie go i dajcie pierścień na rękę jego i buty na nogi jego. I przywiedźcie cielca utuczonego i zabijcie, a jedzmy, używajmy, albowiem ten mój syn umarł był, a ożył; zginął był, a znalazł się."

Tak Bóg przyjmuje grzesznika nawracającego się. Uprzedza go, daje mu pocałunek pokoju, wraca mu szatę godową, pierścień swéj łaski, zapomina nieprawości, przyjmuje w poczet wybranych; napełnia serce słodką pociechą, a wszyscy jego Święci wespół z nim się radują. Duszo, duszo, moja! wzruszona taką łaskawością, litością i miłością swego Ojca, wydobądź z głębi serca westchnienia żalu i poprawy szczeréj.

II.

MODLITWA

przed rachunkiem sumienia.

Wszechmogący, miłosierny Boże, dziękuję nieskonczonéj dobroci Twojéj, że do wielkich dobrodziejstw Twoich, któreś na mnie szczodrobliwie wylał i toś jeszcze przydał żeś mnie w grzechach moich ciężkich z tego świata nie zabrał, aleś mi dał czas do pokuty; tak długo mię cierpiąc, oraz użyczył łaski dostania się na to święte miejsce. Przez to miłosierdzie i dobroć Twoję, proszę Cię pokornie, przed majestatem Twoim upadając; racz mi z łaski Twojéj dopomódz w téj sprawie zbawienia mego. Któż może godnie występki poznać i opłakiwać? Kto serce ludzkie niezbadane zwiédzić?

Tyś Bóg sam jest, przed którym się skryć i zataić nic nie może. Ty wiesz wszystko widzisz wszystko, Ty skrytości serc ludzkich okiem swém Boskiem przenikasz. Oświećże mię Panie mój! światłém swojém niebieskiém, zaślepionego grzechami i własną miłością, aby złości swe uznać, pamiętać i w gorzkości serca dokładnie wyznać

przez Pana Jezusa Chrystusa, który z Tobą żyje i króluje na wieki.

III.

Rachunek sumienia

Przeciw 1-mu przykazaniu.

W rzeczach wiary powątpiewać; nie starając się o potrzebne oświecenie. Czytywać książki w błędy religijne wprowadzające. Pogardzać rzeczami religijnemi, obrządkami kościoła; albo o nich obelżywie mówić. Wierzyć w zabobony, gusła czary lub zatrudniać się niemi, albo radzić komu do nich. Roztargnionym być podczas modlitwy, nabożeństwa. Kochać coś więcéj nad Boga. Nie żałować zaraz za obrazę Jego, nie przepraszać Go. O Jego miłosierdziu rozpaczać lub zbytecznie w niém ufać. Bluźnierskiemi bawić się myślami, czynić dobrze nie dla Boga, lecz dla pozoru, honoru, zysku. i t. d.

Przeciw 2-mu przykazaniu.

Kłamać, albo krzywoprzysięgać, przysięgi lub ślubu w rzeczach przyzwoitych nie

dotrzymać, szemrać lub bluźnić przeciw Bogu. Bez potrzeby nadaremnie Imię Boskie, lub Matki Boskiéj, wymawiać, albo słów pisma świętego lub rzeczy religijnych przewrotnie wzywać, lub tamże przekręcać, kląć.

Przeciw 3-mu przykazaniu.

W niedzielę i święto Mszy świętéj, kazania i nauki całkowicie nie słuchać lub częściowo, nieszpory opuszczać, innych od nabożeństwa wstrzymywać, rzemiosłem się trudnić, czas wolny do nabożeństwa na zbytkach i zakazanych rozkoszach lub zatrudnieniach trawić, zaniedbywać czytanie książek pożytecznych, albo rozmyślaniem nad kazaniem lub nauką, albo rozmowę o nich z domownikami.

Przeciw 4-mu przykazaniu.

Rodziców lub przełożonych rozgniewać, zasmucić, nie słuchać, nie szanować, okłamać, oszukiwać, zdradzać, nie wspierać, opuszczać prześladować, nie modlić się za nich.

Przeciw 5-mu przykazaniu.

Nieprzyjaźń nienawiść, gniew miewać na kogo krótko lub długo, albo w innych wzniecać. Zemścić się na kim, przeklinać, przezywać, szkalować wadzić się, bić kogo niesłusznie; kaleczyć siebie lub kogo innego; obżarstwem, pijaństwem i t. d. Zdrowie własne lub cudze nadwyrężać, skracać sobie lub drugim życie, gwałt zadawać, lub lekarstwo dawać, lub zażywać go ze szkodą zdrowia, lub utratą życia; narażać swe życie lub cudze na niebezpieczeństwo bez potrzeby. Ubogich, chorych nie wspierać. Zgorszenie dawać, nie uczyć religii, nie przestrzegać, nie strofować.

Przeciw 6-mu i 9-mu przykazaniu.

Myśli nieczyste lub pożądliwości nie zaraz oddalać, ale mieć w nich upodobanie. Listy sprośne pisywać, książki takowe czytać. Rozmawiać o rzeczach nieprzyzwoitych, lub śpiewać, albo takowych rad słuchać, nieprzyzwoicie się ubierać lub kąpać, dotykać, na obrazy niewstydliwe, osoby obnażone, albo na insze sprośne rzeczy z pożądliwością zapatrywać się, cudzołożyć i t. d.

Przeciw 7-mu i 10-mu przykazaniu.

Próżnować, oszukiwać, kraść, rabować posiadać cudzą własność, przyjmować i nie wracać ukradzione rzeczy, wiedzący kupować, znalezione zatrzymywać, złodziejów ukrywać, im pomagać, dzielić się kradzieżą, szkodę czynić w polu, ogrodzie i t. d. lichwą się bawić, korzystać z potrzeby, lub nie oddawać, processa niesłusznie prowadzić, sługom i najemnikom zapłatę zatrzymywać, pożądać cudzych rzeczy.

Przeciw 8-mu przykazaniu.

Przed zwierzchnością świadczyć fałszywie lub kłamać, albo przedkimkolwiek innym sławę odbierać obmową i oczernieniem, ich sławy nie bronić, dopomagać do wzięcia sławy, podejrzliwość mieć bez powodu, posądzać kogo niesłusznie.

Przeciw przykazaniom kościelnym.

Przeciw 1-mu są te same grzechy co przeciw 3-mu przykazaniu Boskiemu. Przeciw 3-mu: mięso w zakazane dni jadać, post gwałcić obżarstwem, pijaństwem i t. d. Przeciw 4-mu: nie spowiadać się i Kom-

munii świętéj nie przyjmować w swojéj parafii, około Wielkiéj nocy. Przeciw 5-mu w zakazane czasy wesela odprawiać, zabawom hucznym się oddawać, gdy inni czas święty nabożeństwem, rozmyślaniem, pokutą, postem, zapełniają.

Przeciw 7-miu grzechom głownym.

1-szy Pycha: Oddawać się próżnym i hardym myślom, chełpić się, przepych robić, innemi pogardzać. 2-gi Skąpstwo: Zgromadzać a nie używać według potrzeby, pragnąć cudzego dobra. 3-ci Nieczystość: Jak przy 6-m przykazaniu. 4-ty Zazdrość: Cieszyć się z drugiego nieszczęścia i smucić się z jego szczęścia: 5-ty Obżarstwo: W jedzeniu i piciu miarę przebierać, z uszczerbkiem zdrowia lub utratą używania rozumu, innych upajać. 6-ty Gniew: Gniewu nie pohamować. 7-my Lenistwo: Leniwym być w duchownych rzeczach, w sprawie zbawienia.

Niektóre główne zapytania.

Czyliś Boga z całego serca z całéj duszy nade wszystko miłował?

Czyś z miłości ku Bogu, nie zaś dla zysku, pozoru lub obawy, obowiązki stanu swego, chętnie wiernie i dokładnie pełnił, nawet i wtedy, gdyby były uciążliwe i ofiar wymagały.

Czyś nic takiego nie myślał, mówił, czynił, opuścił, co bliźniemu na ciele lub na duszy szkodziło?

Czyś cierpienia i dolegliwości które cię spotykały, z synowskiém poddaniem się woli Boskiéj znosił i na poprawę żywota obracał?

Któryż grzech opłakiwałbyś najbardziéj, gdy'yś teraz musiał umierać?

Któryż grzech popełniasz najczęściéj? Jakież okazje, miejsca, osoby, pobudzają cię zazwyczaj do niego?

Jakie szkody, na duszy, ciele, majątku i honorze, masz nagradzać?

Z czego najprzód i szczególniéj powinieneś się oskarżać przed namiestnikiem Boga przy konfessyonale?

MODLITWY

przed Spowiedzią.

Modlitwa

do Boga Ojca.

O Boże i Ojcze mój! zgrzeszyłem przed Tobą i nie jestem godzien nazywać się dzieckiem Twojém, bo nie szanowałem Ciebie, jako Ojca swego, nie służyłem Tobie, Panu swemu. Nieprawości moje przewyższyły głowę moję, a jako brzemię ciężkie, obciążyły mię (Ps. pok. III).

O najłaskawszy Stworzycielu mój! przypominam sobie słowa Twoje do Proroka wyrzeczone: „Nie chcę śmierci grzesznika, lecz żeby się nawrócił i żył." Otóż ja największy grzesznik, rozlicznem przestępstwém przykazań Twoich obciążony, w duchu oziębły, w myślach roztargniony, do dobrego leniwy i bardzo słaby, uciekam się do Ciebie, jako syn do Ojca, sługa do Pana, upraszając pokornie Majestatu Twego, abyś mnie poratować i wzmocnić raczył. Daj taki dostatek poznania i rzetelne wyznanie wszystkich nieprawości moich, z okolicznościami ich, daj mi prawdziwą skruchę, daj taki żal, jaki jest najlepszy, do pozyskania Ciebie i wyjednania sobie miłosierdzia Twojego. Oto ofiaruję Tobie za grzechy moje, najukochańszego Syna Twojego Jezusa, z tą miłością, z którą zesłałeś Go na świat, aby za nas dosyć Tobie uczynił męką swoją. Ofiarujęć w téj miłości wszystkie zasługi Jego, prace, boleści, zelżywości i wszystkę wylaną krew Jego. Ofiarujęć bolesne serce Najświętszéj Matki Jego i wszystkie wszystkich świętych Patronów moich pokuty i dobre uczynki: upraszając pokornie, abyś mnie tych wszystkich uczestnikiem uczynił i przez te, winy moje darować raczył; za które serdecznie żałuję dla Pana naszego Jezusa Chrystusa, który z Tobą i z Duchem świętym żyje i króluje na wieki wieków. Amen

---

Modlitwa

do Syna Bożego.

Najłaskawszy i najsłodszy Zbawicielu mój, Chryste Jezu, któryś jest światłem nadprzyrodzoném, oświecającym dusze wszelkiego człowieka, na ten świat przychodzącego. Przyszedłem ja tu na to miejsce, gdzie żywa pamiątka Odkupiciela mego, na którém krwawe kroki Twoje ucałować pragnę. Raczże wysłuchać tu płaczliwy głos serca mego. Racz najświętszą krwią Twoją obmyć brudy duszy mojéj. Racz uleczyć ranami Twojemi chorobę moję. Racz posilić ciało moje Ciałém Twojém. Racz nauką Twoją napełnić serce moje. Racz przyozdobić duszę moję miłością Twoją. Daj mi teraz wyznać na spowiedzi św. szczerze com przewinił, daj żal zbawienny, daj zupełne przez Kapłana Twego rozgrzeszenie, o które to Majestatu Twojego pokornie z płaczem upraszam. Amen.

Modlitwa

do Ducha Świętego.

Istotna Boga Ojca i Syna miłości Duchu święty Boże, który nauczasz każdego grzesznika, aby z płaczem serdecznym i żalem prawdziwym do Boskiego wzdychał Majestatu i tym się sprawiedliwości Jego za grzechy swoje wypłacał, do Twéj najświętszéj uciekam się opieki, racz oświecić rozum mój i nieczyste sumienie moje oczyścić. Racz zmiękczyć twardą serca mego opokę, rozpal ogień miłości Twojéj do prawdziwéj skruchy. Spraw to Pocieszycielu dusz naszych, aby wola moja zgadzała się zawsze z wolą Boską, myśli moje, aby rozpamiętywały mękę Jezusową i boleści Matki Jego najświętszéj. Naucz mnie jako mam chodzić śladami Odkupiciela mojego, przez prawą wiarę w tajemnicę, przez miłość ku cierpiącemu za mnie Bogu wcielonemu, przez nadzieję dostąpienia wieczéj chwały, którą nam śmiercią swoją wyrobił Zbawiciel nasz Jezus Chrystus, który z Ojcem i z Tobą Duchu święty żyje i króluje na wieki, Bóg jeden. Amen.

Modlitwa

do Najśw. Maryi Panny.

Niepokalanie poczęta Maryo Panno, prawdziwa Matko Zbawiciela mego! Jedyna po Bogu nadziejo i osobliwsza Opiekunko wszystkich grzeszników utrapionych. Oto ja nędzny bez łaski Syna Twego będąc, którą utraciłem przez ciężkie grzechy moje, upadam z skruszoném i upokorzonem sercem do nóg Twoich świętych, prosząc Cię pokornie! racz przyjąć sprawę moję do Syna Twego, któregom ja grzechami memi obraził i przyczyń się za mną, aby mi grzechy wszystkie darować raczył z miłosierdzia swego, za wielowładną przyczyną Twoją, za które ja całe życie moje, szczerze pokutować pragnę i teraz je zupełnie wyznać. A gdy mi tę łaskę u Syna swego jedynego zjednasz, nie tylko mnie mizernemu, ale wszystkich Duchów niebieskich i całe Niebo pocieszysz i wszystkim grzesznym dasz pochop do łaski Twojéj. Przez tegóż Pana Jezusa Chrystusa Syna Twego, który z Ojcem i z Duchem świętym żyje i króluje na wieki wieków. Amen.

Modlitwa

po Spowiedzi świętéj.

Cześć, chwała i dzięki Tobie Boże dobrotliwy i miłosierny! Nie wzgardziłeś żałosném wyznaniem mojém, lecz przyjąłeś mnie znowu miłością Ojcowską i odpuściłeś mi, jako mocno wierzę, przez Sakrament pokuty świętéj wszystkie grzechy moje.

Już pękły okowy, które mię z wieczną łączyły zgubą, już znowu do wolności Twoich dzieci wróciłem, już Twego na nowo używam pokoju z niebios, odpuszczone mi są grzechy. Wielbij duszo ułaskawiona! Pana swego i wszystko co we mnie jest, wielbij święte Imię Jego.

Uznaję, żem nie godzien téj łaski niepojętéj, którą od Ciebie najdobrotliwszy Panie odebrałem. Jak łaskawie przebaczyłeś mi wykroczenia. Jak dobrotliwie do powrotu i poprawy zaprowadziłeś. Skoro tylko jak syn marnotrawny, moje grzechy przed Tobą i namiestnikiem Twoim kapłanem, żałośnie i szczerze wyznałem, skoro poprawę

zaprzysiągłem: zaraz zlitowałeś się nade mną i wyrwałeś mię z toni. O Boże! Ty jesteś miłością, a litować się i zbawiać Twoją jest rozkoszą! Nie chcesz śmierci grzesznika, lecz aby się nawrócił i żył. O wieczna, niewymowna miłości! napełnij duszę moję, rozpal serce moje, niech Cię nawzajem miłuję i z miłości ku Tobie niech wszelką się brzydzę nieprawością.

Już, od téj chwili, pragnę Ciebie litościwy Panie! wiecznie miłować, i chcę ile w moich będzie siłach, nagrodzić wszelkie opuszczenia, jużto przez gorliwość, poczciwość i posłuszeństwo, jużto przez ustawiczną pamięć na Ciebie, przez poddanie się synowskie pod wolą Twoję najświętszą, przez troskliwe czuwanie nad sobą i wierne wykonanie moich powinności.

Ty przenikasz serce moje, wiesz, jak bije dla Ciebie, jak pragnę poprawy życia: o przybądź słabości na pomoc, wesprzyj mnie w walce przeciw złym skłonnościom, uzbrój mnie przeciw pokusom, podnieś ducha mego, aby tego szukał i pragnął, co jest na wysokości, daj mi o niewyczerpane źródło wszelkich darów! daj mi wytrwałość w do-

brém, abym Ci wiecznie służył w wiernéj miłości. Amen.

Teraz możesz odmówić zadane pacierze.

Modlitwa
przed Komunią świętą.

Panie Jezu Chryste, któryś samego siebie: na znak nieskończonéj miłości swojéj ku grzesznikowi, dał do pożywania pod postaciami chleba, z tém oświadczeniem, że kto godnie pożywać będzie ciała Twego, żyć będzie na wieki. Zaczem ja nędzny grzesznik skalaną duszę moję obmywszy łzami serdecznemi i Sakramentem pokuty świętéj, idę z jak największą pokorą i uniżonością do stołu Twojego najświętszego, aby pokarmem tym obumarłą duszę moję ożywił i do żywota wiecznego przysposobił. Niechże mi będzie zadatkiem nieśmiertelności mojéj; niech mi będzie wzmocnieniem sił moich, abym mógł obejść wszystkie miejsca góry i pagórki gorzkiéj męki Twojéj. Użycz mi Panie łaski Twojéj, abym nasycony i uweselony, przy stole Twoim mężném sercem mógł zwyciężyć pokusy, nałogi i wszelkie

przeciwności moje. Przybądź do mnie najmilszy Gościu i uczyń sobie mieszkanie Twoje. Oto już słodki Zbawicielu otwieram Tobie chętnie usta i serce moje, abyś go sobie i dla siebie na wieki zamknął. Amen.

Akt pokory

przed Komunią świętą.

O najłaskawszy Zbawicielu mój! i cóżem ja też kiedy dla Ciebie tak dobrego uczynił? albo cóż Ci się to we mnie tak bardzo upodobało? iżeś się tak wielce we mnie niegodnego poniżyć raczył; jeżeli to nie dosyć było, umrzeć tak sromotną i haniebną śmiercią dla zbawienia mojego! i niedosyć że to, żeś mi dał Aniołów, na usługę i obronę moją? Zaprawdę i najmniejszego z tych nie byłem godzien. A cóż dopiero, abyś Ty miał wnijść do serca mego, daleko bardziéj niegodzienem téj łaski Twojéj; bom Ci oprócz tego, żem jest nędzne i liche stworzenie Twoje, znam się też być wielkim grzesznikiem. Masz Ty Panie wyborniejszych w niebie, i już świętych, z któremi się jako najświętszy cieszyć mo-

żesz, a nie ze mną grzesznym, bo we mnie dla grzechów różnych nie masz nic wesołego, nic Tobie przyjemnego, ale gdy się Tobie Panu memu, jako żebraka jakiego, upodobało z łaski swéj, do tego stołu wezwać i mnie niegodnego samym sobą uczęstować, i w domu serca mego mieszkać: ja więc nie mogę mówić, tylko jako żebrak upokarzając się najniżej, prosić Cię wprzód chcę, abyś niżeli wnijdziesz do serca mego, raczył, wpuścić we mnie promień miłości Twojéj; abyś wszystkie ciemności grzechowe i złości wyniszczył, w którembyś Ty na wieki żyć i mnie od grzechów teraz i zawsze bronić raczył. Amen.

Pragnienie

PANA JEZUSA

w Komunii świętéj.

O najwdzięczniejszy Jezu mój kiedyż przyjdziesz? albo kiedy się do mnie przybliżysz, któż Cię zatrzymuje, jedyna serca mego pociecho! pokaż się serca mego wesele, zbliż się jak najprędzéj do mnie mizernego stworzenia. Gościu niebieski, albo-

wiem kiedy Cię będę miał, już wszystko moje: kiedy Ty o Dobrodzieju przyjdziesz do mnie, już się uspokoi dusza moja. Przybądźże tedy o Jezu kochany, bo tęskni dusza moja do Ciebie, jako Jeleń do wody. O źródło ożywiające! gotowe serce moje, gotowe na przyjęcie Twoje. Pójdźże już o Panie do domu mego, już się rozłączam ze światem, czartem i ciałem, bylem się z Tobą złączył, a raz złączywszy, Ciebie się trzymając, na wieki potem z Tobą mieszkał.

Modlitwa

przed Komunią świętą.

Niech będzie pochwalony od wszystkiego stworzenia na niebie i na ziemi Bóg mój w przenajświętszym Sakramencie utajony, że łaknącego mnie nasycił nieśmiertelnym pokarmem żywota wiecznego. Wielbij za to duszo moja Pana, który się tak ścisłym miłości swojéj związkiem zjednoczył z tobą, abyś ty w nim, a On w tobie zostawał. Zaśpiewaj nową piosnkę Bogu twojemu, iż się zbliżył do ciebie, jako miły sąsiad

i przyjaciel dawno pożądany, gość wdzięczny do lichego serca twego przybytku.

O Gospodo uwielbiona, Matko słowa przedwiecznego, niepokalanie poczęta Panno! przybywaj do powitania wielkiego Gościa w sercu mojém zostającego, ukochanego Syna Twego; przybywaj do ściskania i godnego utraktowania Jego z czystemi affektami Twojemi. Przybywajcie niebiescy dworzanie z rozpaloną ku Panu mojemu serc waszych miłością. Winszujcie mi, że z wami godnemi stołownikami, wybranemi do tego stołu, wezwany i nakarmiony jestem. Już błogosławi dusza z ciałem mojém Pana że się stała godna niebieskiego zażyć pokarmu, z którego i ciało wzmocnione i rozweselone zostaje.

Raczże już teraz Panie puścić sługę Twego w pokoju, ponieważ nietylko oczy napasły się zbawieniem mojém, ale też serce, usta i wszystko ciało poznało i kosztowało słodkości niebieskiéj. Bądź Tobie chwała nieskończona, Ojcze przedwieczny, żeś nam zesłał Syna Twojego na ziemię. Bądź Tobie chwała Duchu przenajświętszy, żeś zaślubił naturę naszą z naturą Boską

i tak ściśle z nami ziednoczył. Bądź Tobie chwała, Panie Jezu Chryste, żeś się nam łaskawie udzielić raczył. Bądź chwała Tobie niepokalana Panno, żeś nam do pożywienia tego pokarmu krwi Twojéj Panieńskiéj użyczała na wcielenie Syna Boskiego. Bądźcie błogosławieni święci kapłani, którzy czystem sercem przyjmujecie i rękami piastujecie i nam udzielacie Pana naszego Jezusa Chrystusa, któremu cześć nieskończona niech będzie po całym świecie na wieki wieków. Amen.

Przywitanie
PANA JEZUSA
po Komunii świętéj.

Witajże o najpożądańszy Gościu Jezu mój! oto teraz uradował się duch mój, iż raczyłeś nawiedzić ubogi domek serca mego; nad pomyślenie ludzkie weseli się serce moje; teraz uczyniłeś niepojętą łaskę nade mną nędzném stworzeniem Twojém, kiedy będąc Bogiem i Panem nieba i ziemi; raczyłeś mię dziś ubogiego nawiedzić, o którego zacności kiedy pomyślę, pojąć nie mogę,

jeżeli słucham pojąć niepodobna, słowem, to wypowiedzieć nie potrafi i świat cały, który podnóżkiem jest Twoich nóg; a ja mniejszy i bardziéj wzgardzony, niżeli proch w oczach Twoich. Ach! jakże się weselić nie mam z tak wielkiego szczęścia, ponieważ cudo nigdy niesłychane stało się dziś w sercu mojém. Wszedłeś Boże mój! do serca mego, jako sędzia do złoczyńcy, sam się do odpuszczenia winy ofiarując. Wszedłeś, jako najdostojniejszy Pan do dłużnika swego, który przez złość i niewdzięczność, tak wiele łask Twoich utracił; a Ty, o Jezu mój! ofiarujesz się wszystko Bogu Ojcu za mnie wypłacić. Wszedłeś, jako najłaskawszy Ojciec do Syna marnotrawnego, abyś mnie ściskając ucałował i skarbami łask Twoich udarował i zbogacił. Przetóż jako mogę z najgłębszą pokorą, wiarą i uniżonością dziękuję Ci i pokłon oddaję.

Witam Cię o mój Jezu! wszystkiemi jako mogę affektami; witam Cię owym affektem, którym Cię witał święty Józef, gdyś na świat przyszedł, święci trzéj Królowie, a osobliwie Matka Twoja najświętsza gdy Cię zgubionego znalazła, gdy Cię zmartwych-

wstałego pierwszy raz zobaczyła. Łączę affekt mój z Jéj affektami. A kiedy Cię już mam w sercu mojém, proszę Cię, nie odstępujże mnie mieszkajże w sercu mojém, aż do zgonu życia mego; zmysły moje i wszystkie sprawy moje Tobie oddaję; Ty mną całym rządź. Ty kieruj mną według upodobania Twego, sam dla siebie nie dopuszczaj, abym miał coś najmniejszego uczynić coby się Tobie Panu memu nie podobało. Zgoła, tak Ci się zupełnie oddawam, jako Panu memu, jako widzisz i wiesz, jako żyć mam i Tobie się podobać. Ty rozkazuj a mnie daj łaskę tę, abym Cię we wszystkiem słuchał, a tak spodziewam się, że gdy moim Panem będziesz, a ja wiernym sługą Twoim, w godzinę śmierci nie opuścisz mnie, ale przyjmiesz do chwały Twojéj, w któréj żyjesz i królujesz na wieki wieków. Amen.

NABOŻEŃSTWO
Tygodniowe.

NA NIEDZIELĘ
Hymn kościelny.

Aspersio.

Asperges me, Domine hisopo et mundabor, lavabis me, et super nivem dealbabor. Miserere mei Deus, secundum magnam misericordiam tuam, Gloria Patri et Filio, et Spiritui Sancto: Sicut erat in principio et nunc et semper, et in saecula saeculorum. Amen.

Racz nas Panie pokropić hyzopowem zielem,
Obmyj nas, oczyść z grzechów, a nad śnieg zbielejem.
Zmiłuj się Boże, zmiłuj, odpuść nasze złości,
Daj Twego miłosierdzia doświadczyć wielkości.
Chwała Ojcu, Duchowi z Synem naszym Panem,
Niech będzie teraz, zawsze, na wieki wieków. Amen.

Racz nam pokazać Panie miłosierdzie swoje,
Daj, prosimy Cię łaskę i zbawienie Twoje.
Wysłuchaj nasze prośby, pobożne wzdychanie,
Niech do Ciebie przyjdzie głos nasz i wołanie.

X. Ostende. Pokaż nam Panie miłosierdzie Twoje.
L. Et salutare. — A zbawienie Twoje daj nam.
X. Domine exaudi. — Panie wysłuchaj modlitwy moje.
L. Et clamor. — A wołanie moje i t. d.
X. Dominus vobiscum. — Pan z wami.
L. Et cum. — I z duchem Twoim.

Oremus. (Módlmy się.)

Exaudi...—Wysłuchaj nas Panie, Ojcze święty wszechmogący, wieczny Boże! i ześlij Ducha Twego świętego z nieba, aby nas strzegł, zachował, bronił i miał pod opieką wszystkich mieszkających w tym przybytku. Przez Chrystusa Pana naszego. Amen.

Nabożeństwo Mszalne znajduje się na stronnicy 46.

LITANIA

do Trójcy Przenajświętszéj.

Kyrie elejson, Chryste elejson,
Kyrie elejson.
Chryste usłysz prośby nasze
Chryste wysłuchaj modlitwy nasze,
Ojcze z nieba Boże, zmiłuj się nad nami.
Synu Odkupicielu świata Boże,
Duchu święty Boże,
Święta Trójco jedyny Boże,
Trójco święta Boże wszechmogący,
Trójco święta Boże najzacniejszy,
Trójco święta Boże najświętszy,
Trójco święta Boże, który nas miłujesz jako syny,
Trójco święta Boże, od którego przez którego i w którym jest wszystko,
Trójco święta Boże, który sam jesteś Bogiem,
Trójco święta Boże, który sam jesteś dobry,
Trójco święta Boże, któryś wszystko z niczego stworzył,
Trójco święta Boże, któryś jest niedostępny,

Zmiłuj się nad nami.

Trójco święta Boże, któryś jest wielkiego miłosierdzia,
Trójco święta Boże, którego nieba niebios nie ogarną,
Trójco święta Boże, święty, święty, święty,
Trójco święta, jedyny Boże, i Ojcze wszystkich,

Zmiłuj się nad nami.

Bądź nam miłościw, odpuść nam, Panie.
Od wszego złego, wybaw nas, Panie.
Przez nieskończoną moc Twoję, wybaw nas, Panie.
Przez nieprzebraną miłość Twoję, wybaw nas, Panie.
Przez najobfitszą dobroć Twoję, wybaw nas, Panie.

My grzeszni Ciebie prosimy, wysłuchaj nas Panie.
Abyśmy Ciebie miłować i dla Ciebie wszystko dobre uczynić mogli, wysłuchaj nas, Panie.

Baranku Boży, który gładzisz grzechy świata, przepuść nam, Panie.
Baranku Boży, który gładzisz grzechy świata, wysłuchaj nas, Panie.

Baranku Boży, który gładzisz grzechy świata, zmiłuj się nad nami.
Chryste usłysz nas, Chryste wysłuchaj nas.
Kyrie elejson, Chryste elejson,
Kyrie elejson.
℣. Błogosławiony jesteś Panie Boże Ojców naszych,
℟. Chwalebny i niewysławiony na wieki.

Modlitwa

Wszechmogący wieczny Boże, który z szczodrobliwéj dobroci Twojéj nad zasługi i prośby proszących więcéj dajesz wyléj prosimy Cię na nas miłosierdzie Twoje i odpuść nam wszystko co sumienie zarobiło, a przydaj czego prośba wymówić nie może. Przez Pana naszego Jezusa Chrystusa, który z Tobą żyje i króluje na wieki wieków. Amen.

Serdeczny Afekt
Świętego Augustyna
do Trójcy Przenajświętszéj.

O słodkości i miłości moja, Boże mój! o wszystko dobro i pożądanie moje! jakże

się stać może, żeby Cię które stworzenie nie miłowało; kocham Cię mój Boże, kocham Cię z całego serca mego, ze wszystkiéj duszy mojéj i ze wszystkich sił moich. Dla tego cieszę się z Twojéj chwały i majestatu, którego Ci jak największego życzę, tak dalece, żebym wolał zginąć, aniżeliby się cokolwiek Twéj wielmożności umniejszyć miało. Gdyby we mnie mogło być co takiego, czegoby Tobie nie dostawało, z całą chęcią radbym ustąpił tego. Ale Ty Panie Boże mój! źródło wszystkiego dobra jesteś, z którego wszystko płynie, cokolwiek było, jest i będzie dobrego na ziemi i w niebie. Któż Ciebie kochać nie będzie? o słodka miłości jedyna, wszystko dobro moje, samo miłości najgodniejsze! O miłości, która zawsze pałasz; a nigdy nie gaśniesz, zapal mię, a zapalony będę, niech goreję abym Cię samego wszystek miłował, mniéj albowiem Cię kocha, kto z Tobą kogo innego kocha, a nie dla Ciebie kocha.

Dziękowanie Bogu za stworzenie.

Dziękuję Ci o Boże Ojcze wszechmogący Królu niebieski! żeś mię niegodnego sługę Twego na obraz i podobieństwo Twoje stworzył, i do tego czasu duszę moję niebieskiemi darami opatrujesz, ciało i te doczesne potrzeby moje, w ojcowskim staraniu Twojém pilno piastujesz; za co niech Ci będzie cześć, pokłon i chwała na wieki wieków.

Dziękowanie Synowi Bożemu za odkupienie.

Dziękuję Ci Panie Jezu Chryste, Synu Boga żywego, żeś mnie niegodnego grzesznika Krwią Twoją najdroższą odkupił, i Twoje własne Ciało i prawdziwą krew, nam na pokarm i napój zostawił, za co niech Ci będzie cześć, pokłon i chwała na wieki Amen.

Dziękowanie Duchowi świętemu za dar wiary świętéj.

Dziękuję Ci Duchu przenajświętszy, któryś mnie niegodnego, (tak wiele milionów innych zaniechawszy), do prawdziwéj świętéj katolickiéj rzymskiéj wiary powołać raczył, teraz mię łaskami Twojemi oświecasz, z czego, nieomylną do wiecznego zbawienia mieć mogę i mam nadzieję, za co niech Ci

będzie cześć, pokłon i chwała na wieki wieków. Amen.

Pobożna duszo, nie tylko tobie do nieba potrzeba trafić, która większą nad innych masz naukę i od Boga oświecenie, ale i prostaczków potrzebuje Pan Bóg, którym abyś dopomógł do szczęśliwości wiecznéj, jeżeliś jest gospodarzem, czeladkę twoją masz nauczać sposobu czcić Trójcę przenajświętszą, w któréj Imię jesteśmy wszyscy ochrzczeni. Niech co dzień każdy z nich zmówi 3. Ojcze nasz, 3. Zdrowaś Marya, a po każdym pacierzu, niech przyda trzem Osobom Boskim, po słowie Serafickiem: Święty, święty, święty, Pan Bóg Zastępów. Amen.

KORONKA

do Trójcy Przenajświętszéj.

W Imię Ojca i Syna i Ducha świętego, Amen.

Błogosławmy Boga Ojca i Syna z Duchem świętym.
Chwalmy i wysławiajmy Go na wieki.

Hymn.

Bogu Ojcu i Synowi
I równemu Im Duchowi,
Trzem Osobom niechaj będzie,
Jednakowa chwała wszędzie.
W miłosierdziu niepojęta,
przyjdź na pomoc Trójco święta,
I wysłuchaj prośby moje,
A pokaż nam łaskę Twoję.

CZĘŚĆ PIERWSZA

na chwałę Boga Ojca, pierwszéj Osoby Trójcy Przenajświętszéj.

Za wszystkie stany duchowne i świeckie, potrzeby nasze, aby Bóg Ojciec miłosierdzie swoje wszystkim w potrzebach zostającym pokazać raczył.

Hymn.

Boże Ojcze wszechmogący,
Twe stworzenie kochający,
Wysłuchaj nas lud proszący,
W dobroci Twéj ufający.
Daleś na śmierć Syna swego,
Dla miłości z nas każdego,
Niechże droga męka Jego,
Ubłaga Cię Boga mego.

Marnotrawne kochasz syny,
I odpuszczasz onym winy,
Weź nas do górnéj krainy,
W dzień sądu Ojcze jedyny.

Ojcze nasz. Zdrowaś Marya.

ANTYFONA.

Błogosławiony Bóg i Ojciec Pana naszego Jezusa Chrystusa: Ojciec miłosierdzia i Bóg wszelkiego pocieszenia, któremu niech będzie pokłon i chwała od wszelkiego stworzenia, na wieki wieków. Amen.

Święty, święty, święty, Pan Bóg zastępów, pełna jest wszystka ziemia łaski Jego.

Chwała Ojcu i Synowi i Duchowi świętemu,

Jak była na początku, teraz zawsze i na wieki wieków. Amen.

CZĘŚĆ DRUGA

na chwałę Boga Syna drugiéj Osoby Trójcy Przenajświętszéj.

Za chorych, strapionych i krewnych, pobożnych, w grzechu śmiertelnym i w czyścu będących. Na podziękowanie za wszystkie dobrodziejstwa Boskie, prosząc, aby męka Jego najdroższa, wszystkim była pomocą i ratunkiem.

Hymn.

Synu Boży narodzony,
W Sakramencie utajony,
I na krzyżu umęczony,
Bądź za wszystko pochwalony.

W serca Twego miłéj ranie
Niech otrzyma ubłaganie,
Nasze do Ciebie wołanie,
Synu Boży Jezu Panie.

Mocą krzyża krwią zlanego,
Od wszystkiego zasłoń złego,
Każdego człeka grzesznego,
Krwią Twoją odkupionego.

Ojcze nasz. Zdrowaś Marya.

ANTYFONA.

Błogosławiony Bóg, Jezus Chrystus, Syn Ojca niebieskiego, Światło z światłości. Bóg prawdziwy z Boga prawdziwego, Pan i Odkupiciel nasz, któremu niech będzie pokłon i chwała od wszelkiego stworzenia, na wieki wieków. Amen.

Święty, święty, święty, Pan Bóg zastępów, pełna jest wszystka ziemia łaski Jego.

℣. Chwała Ojcu i Synowi i t. d.
℟. Niech będzie pochwalona święta i nierozdzielna Trójca, teraz i na wieki. Amen.

CZĘŚĆ TRZECIA.

Na chwałę Boga Ducha świętego trzeciéj Osoby Trójcy Przenajświętszéj.

Za wiernych, rozpaczających, zasmuconych, pomocy Trójcy Przenajświętszéj wzywających, także na uproszenie dobrych rad, zgody, zachowanie od głodu, wojny i powietrza, i we wszystkich potrzebach, aby Duch święty raczył być pocieszycielem.

Hymn.

Duchu święty daj natchnienie,
I nam grzesznym opatrzenie
W łasce Twojéj utwierdzenie,
A potém duszne zbawienie.
Zapal ogień w nas miłości,
Udziel daru roztropności,
W przeciwnościach cierpliwości,
I należytéj czystości.
Bądź pociechą zasmuconych,
Bądź ratunkiem utrapionych,
Przewodnikiem bądź błądzącym,
I przytomnym Ciebie czczącym.

Ojcze nasz. Zdrowaś Marya.

ANTYFONA.

Błogosławiony Bóg Duch święty; od Ojca i Syna pochodzący. Bóg prawdy i miłości, Pocieszyciel dusz naszych, któremu (tak się pokłonić): niech będzie pokłon i chwała od wszelkiego stworzenia na wieki wieków. Amen.

Święty, święty, święty, Pan Bóg zastępów, pełna jest wszystka ziemia łaski Jego.

℣. Chwała Ojcu i Synowi i t. d.
℟. Niech będzie pochwalona Święta i nierozdzielna Trójca teraz i na wieki Amen.

Tu zmówić trzy razy: Święty Boże, święty mocny, święty i nieśmiertelny, zmiłuj się nad nami.

Wierzę w Boga Ojca i t. d.

TE DEUM LAUDAMUS.

Ciebie Boga chwalimy, Ciebie Panem być wyznawamy.
Tobie Ojcu wiekuistemu, wszystek ziemski okrąg cześć oddawa.
Tobie wszyscy Aniołowie, Tobie niebiosa i wszystkie mocarstwa.
Tobie Cherubiny i Serafiny nieprzestannym głosem śpiewają:

Święty, święty, święty, Pan Bóg zastępów. Pełne są niebiosa i ziemia majestatu chwały Twojéj.
Ciebie przesławny chór Apostolski,
Ciebie chwalebny poczet Prorocki.
Ciebie święte wojsko chwalebnych Męczenników wysławia.
Ciebie też po wszystkim świecie święty Kościół wyznawa.
Ojca niezmiernego majestatu,
Chwalebnego też i prawdziwego, a jednorodzonego Syna Twego,
I Ducha świętego pocieszyciela.
Tyś Król chwały o Chryste Panie.
Tyś jest Syn Boga Ojca wiekuisty.
Tyś mając wziąść człowieczeństwo na siebie dla zbawienia naszego, nie wzgardziłeś Panieńskiego żywota mieszkaniem.
Ty skruszywszy żądło śmierci, otworzyłeś królestwo niebieskie wierzącym.
Ty na prawicy Bożéj siedzisz w chwale Ojca Twego.
Wierzymy temu, że przyjdziesz nas sądzić,
Przeto prosimy Cię, racz poratować sługi Twoje, któreś drogą krwią Twoją odkupił.

I racz nas z Twojemi Świętemi chwały wiecznéj obdarzeniem opatrzyć.
Zbawże lud Twój Panie, a racz błogosławić dziedzictwu Twemu.
A rządź i podwyższaj je, aż na wieki!
Na każdy dzień błogosławimy Cię.
I chwalimy Imię Twoje na czas wieczny i na wieki wieków.
Racz tego dnia Panie; grzechu nas każdego uchować.
Zmiłuj się nad nami Panie! Zmiłuj się nad nami.
Niech się wsławi miłosierdzie Twoje Panie nad nami, gdyż w Tobie nadzieję pokładamy.
W Tobie Panie nadzieję położyłem, nie dajże mię na wieczne zawstydzenie.
℣. Błogosławmy Ojca i Syna z Duchem świętym
℟. Cześć i chwałę dawajmy na wieki.
℣. Panie wysłuchaj modlitwę moję i t. d.
℟. A dusze wiernych zmarłych przez miłosierdzie Boże niech odpoczywają w pokoju.
℣. Amen.

Modlitwa.

O Boże! którego miłosierdzia nie masz liczby i dobroci skarb jest nieprzebrany, wielce miłosiernemu Majestatowi Twemu Boskiemu za dary nam dane dziękujemy zawsze, o to prosząc dobrotliwości Twojéj, abyś Ty, który proszącym Ciebie dawasz to, o co Cię proszą, nie raczył nas z łaski swojéj wyrzucać, ale ku zapłatom wiecznym sposobnemi nas uczynił. Przez Pana naszego Jezusa Chrystusa. Amen.

Modlitwa

do Trójcy Przenajświętszéj.

Niech będzie pochwalona Święta i nierozdzielna Trójca, teraz i na wieki, któréj oddaję duszę i ciało moje, prosząc aby mnie strzegł bronił i błogosławił, tenże wszechmogący i miłosierny Pan Bóg Ojciec, Pan Bóg Syn, Pan Bóg Duch święty.

Matko miłosierdzia Maryo! Aniele Stróżu i Wszyscy święci, a osobliwie Patronowie i Patronki moje, przyczyńcie się za mną. Niech mnie błogosławi wszechmocność Pana Boga Ojca, niech mnie błogosławi dobroć Syna Bożego, niech mnie błogosławi mądrość Ducha świętego teraz i na wieki. Amen.

Rany Jezusa Chrystusa mojego poświęćcie mnie: serce miłosierne Zbawiciela mojego wysłuchaj mnie. Pobłogosław zranienemi rękami Twojemi, wszystkim sprawom moim ukrzyżowany Jezus! błogosław Najświętsza Maryo Panno.

Błogosławcie Wszyscy święci i ty Aniele Stróżu mój, a znak krzyża świętego niech mi będzie obroną od grzechu i wszelkich przeciwności moich i całego świata. Niech będzie chwała Ojcu i Synowi i Duchowi świętemu jak była na początku, i teraz i zawsze i na wieki wieków. Amen.

Niech będzie pochwalona Święta i nierozdzielna Trójca, teraz i zawsze i na wieki wieków. Amen.

NA PONIEDZIAŁEK.

LITANIA
o świętym Aniele Stróżu.

Kyrie elejson, Chryste elejson,
Kyrie elejson.
Chryste usłysz nas.
Chryste wysłuchaj nas.
Ojcze z nieba Boże, zmiłuj się nad nami.
Synu Odkupicielu świata Boże, zmiłuj się nad nami.
Duchu święty Boże, zmiłuj się nad nami.
Święta Trójco jedyny Boże, zmiłuj się nad nami.
Święta Maryo, Królowa anielska, módl się za nami.
Święty Aniele Stróżu mój,
Święty Aniele Książe pokoju,
Święty Aniele napominaczu mój,
Święty Aniele Poradniku mój,
Święty Aniele Sprawco mój,
Święty Aniele Bracie mój,
Święty Aniele Nauczycielu mój,
Święty Aniele Pasterzu mój,
Święty Aniele Pomocniku mój,

Módl się za nami.

Święty Anjele Przyjacielu mój,
Święty Aniele zysku mego szukający,
Święty Aniele Poprzedniku mój,
Święty Aniele przyjmujący mnie w obronę,
Święty Aniele Rządco mój,
Święty Aniele Przełożony i Patronie mój,
Święty Aniele Obrońco mój,
Święty Aniele Wodzu mój,
Święty Aniele Zachowaczu mój,
Święty Aniele Kaznodziejo mój,
Święty Aniele Oświecicielu mój,
Baranku Boży, który gładzisz grzechy świata, przepuść nam, Panie.
Baranku Boży, który gładzisz grzechy świata, wysłuchaj nas, Panie.
Baranku Boży, który gładzisz grzechy świata, zmiłuj się nad nami.
Chryste usłysz nas, Chryste wysłuchaj nas.
Kyrie elejson, Chryste elejson,
Kyrie elejson.

Módl się za nami.

Ojcze nasz. Zdrowaś Marya.

℣. Aniołom swoim Bóg rozkazał o tobie.
℟. Aby cię strzegli we wszystkich drogach twoich.

℣. Panie wysłuchaj modlitwę moję,
℟. A głos mój niech do Ciebie przyjdzie.

MODLITWA

do świętego Aniola Stróża.

Miły Bogu Aniele, który mnie w świętą Twoję opiekę oddanego, od początku życia mego ustawiczmie bronisz, oświecasz, rządzisz, ja ciebie za Patrona mego czczę, jako Stróża kocham; Twojéj się opiece wcale poddaję, i pod rządy Twoje oddaję. Więc pokornie Cię proszę, abyś mię lubo niewdzięcznego i przewrotnego przeciw napomnieniom Twoim sprawującego się, nie opuścił, lecz abyś łaskawie kierował błądzącego, nauczał nieumiejętnego, podźwignął upadającego, pocieszył strapionego, ratował w niebezpieczeństwie będącego aż dopóki mnie do nieba na wieczną szczęśliwość nie doprowadzisz.

AKTY POBOŻNE

za dusze wiernych zmarłych.

Wierzę o Boże mój i wyznaję: że odpuszczając ludziom grzechy i wieczną karę

za nie, zatrzymujesz karę doczesną, tak jak zatrzymałeś Maryi, siostrze mojżesza i Dawidowi. Wielbię w tém Twoję sprawiedliwość, że za odpuszczone grzechy obawiać się nam grzesznym każesz doczesnego karania. Ale też proszę Cię jak najpokorniéj o miłosierdzie, abyś cierpiącym te kary do czasu duszom w czyścu łaskawie w nich pofolgował i skrócić ich trwanie raczył. Wspomnij o dobry Panie na miłość Twoją, którąś te dusze od wieku kochał, i na zasługi Jezusa Chrystusa, Syna Twego który je krwią swoją odkupił. Wyprowadźże je o Boże! z tak ciężkiego więzienia i przyjmij do chwały Twojéj, do któréj tęsknią.

O Boże miłosierdzia i wszelkiego pocieszenia! pokażże się tym duszom pokutującym i przypuść je do jasności oblicza Twojego, uznajże je dziełem rąk swoich i odkupem krwi Syna Twojego, przyjmijże tę krew najświętszą, którą Ci kościół Twój ofiaruje, na zupełne ich długów wypłacenie! Wejrzyi na modlitwy i łzy téj Oblubienicy Jezusa Chrystusa, a uwolnij tych

więźniów z mąk czyścowych których grzechowe winy już zgładził Zbawiciel nasz i od piekła zachował.

Ach, Ojcze najmiłosierniejszy! wszakże to są prawdziwe dziatki Twoje; wpuśćże je do dziedzictwa im zgotowanego; złącz z Jezusem te członki cierpiące, jako uwielbioną ich Głową daj wnijść na gody Baranka Niebieskiego, tym, którzy w godowéj sukience, to jest: w łasce Twojéj z tego świata zeszli. Otwórzże, o Boże! niebieską Jerozolimę tym, których imiona są zapisane w księdze żywota: wysłuchaj ich jęczenia i zaspokój ich tęskność, pokaż im to na oko, w co tu mocno uwierzyli, oddaj im te dobra wieczne, do których niewzruszoną w Twoich obietnicach pokładali nadzieję; dokonaj zupełnego ich zjednoczenia, które z Tobą przez miłość mieli: spraw to już łaskawie, abyś i Ty w nich królował i oni w Tobie cieszyli się na wieki.

O Boże nieskończonego majestatu, nie wchodź ze mną w straszliwe sądy sprawiedliwości Twojéj; lecz postąp według miłosierdzia Twego. Oczyszczaj duszę moję ze wszelkiéj zmazy; karz mnie jako Ojciec w

tém życiu; dodaj mi łaski abym żył i umarł w pokucie. Zacinaj mnie ojcowską ręką podług wielkości i liczby grzechów moich: uczyń mnie takim, abym, bez cierpienia w ogniach, czyścowych, mógł wnijść do królestwa wiecznego. Amen.

MODLITWA POWSZECHNA

za dusze zmarłych.

Boże! który nam rozkazałeś miłować wszystkich ludzi jako braci i siostry, a nie zniosłeś tego rozkazu względem tych, których śmierć z téj ziemi zabrała, bo nas z niemi łączy wieczny węzeł miłości; nasze jestestwo trwa dłużéj niż życie na świecie, przetoć i nasza miłość jest dłuższą. Połączymy się kiedyś wszyscy z Tobą, jeżeli Ci w tém życiu pozostaniem wiernymi. Lecz któż z ludzi jest Ci tak wierny, o Boże! aby po swojém przeniesieniu się z tego życia mógł być zaraz do chwały Twojéj przyjęty? Ty o Boże! powiedziałeś, a Twoje słowo niezmienne na wieki, że nic zmazanego nie wnijdzie do Twojego królestwa! przetoć wielu ludzi, gdy się tu zupełnie z swoich prze-

winień nie usprawiedliwili, muszą po swym zgonie pierwéj się oczyścić, muszą tam odpokutować, czego tu jeszcze nie odpokutowali. Mogli się zupełnie oczyścić, przez zasługi Syna Twojego, naszego Zbawiciela Jezusa Chrystusa! ale z niemi należycie wespół nie pracowali. Teraz muszą cierpieć, czekać i pokutować, aż zupełnie oczyszczonemi zostaną, a dopiero mogą wnijść do królestwa niebieskiego. Przyjmijże tedy, o Boże! nasze prośby, nasze jałmużny na ich zadosyć uczynienie: Oto Cię błagamy, o Boże i Ojcze miłosierdzia! oto zanosimy do Ciebie prośby. Synu przedwieczny, nasz Zbawicielu! oto i u Ciebie żebrzem Duchu przenajświętszy! Zmiłuj się i zlituj nad cierpiącymi braćmi naszymi i siostrami. Zmiłuj się nad tymi, których przewinienia wstrzymały, że się nie mogą przed tronem Twoim pokazać, którzy w miłości Twéj żyli i zeszli z tego świata, przetoż jęczą i tęsknią w miejscu oczyszczenia do Ciebie a nadto ciężkie męki ponoszą. Ach Boże! wszakże i oni w Ciebie wierzyli, w Tobie pokładali nadzieję i kochali Ciebie. A jeżeli ich miłość była czasami niedoskonała,

ich wiara i nadzieja słaba, jeżeli zgrzeszyli przed Tobą: ach Panie! wszakże Twoje miłosierdzie jest większe, niż ich wykroczenia; wszakże Twój Syn jednorodzony, nasz Zbawiciel Jezus Chrystus męki i śmierć poniósł i zadosyć uczynił za grzechy całego świata. Jeżeli tego zadosyć uczynienia przez wierne współdziałania z łaską świętą w życiu swojém nie stali się całkowicie uczestnikami; ach Panie! oto Cię ze łzami błagam, uczyńże ich teraz uczestnikami, gdy tak opłakują swoją niebaczność, gdy tak gorąco wybawienia pragną! Wysłuchaj o Boże nasze modlitwy, przyjmij łaskawie nasze jałmużny, i inne dobre chrześcijańskie uczynki, które Ci dziś kościół z wiernymi składa w ofierze, błagając o wieczny odpoczynek dla zmarłych. Zmiłujże się, ach zmiłuj, o Boże! daj im wieczne odpocznienie a światłość wiekuista niech im świeci na wieki. Amen.

MODLITWA
za zmarłych rodziców.

Ty, Boże! rozkazałeś nam czcić i kochać naszych rodziców, a ten obowiązek nie może ustać z ich śmiercią. I po śmierci należy się kochanym rodzicom wdzięczność i miłość od ich na téj ziemi pozostałych dzieci, i za zmarłych rodziców obowiązane są dzieci modlić się: bo może jeszcze nie są w niebie, może jeszcze są zatrzymane w czyścu na pokucie: aby i od najmniejszych zmaz grzechu oczyścili swą duszę. Gdyby tak być miało, o Boże! gdyby jeszcze co mieli do cierpienia i odpokutowania: ach Panie! jakże ja pragnę pospieszyć im na pomoc! Lecz cóż ja więcéj zdołam, jak tylko prosić Ciebie. O Boże! Wybaw je z miejsca mąk i cierpień a weź do siebie!—Jeżeli w swych wielkich i ważnych obowiązkach czasem zbłądzili, jeżeli kiedy z ułomności zgrzeszyli a za to jeszcze dostatecznie nie odpokutowali, ach Panie! spojrzyj łaskawie na ich żal, którym teraz ich dusza przejęta, a przebacz im, odpuść i daruj! O to

Cię błagam ze łzami w najgłębszém upokorzeniu, najlitościwszy Boże przez zasługi Syna Twego naszego Zbawiciela Jezusa Chrystusa, który z Tobą i z Duchem świętym, żyje i króluje na wieki. Amen.

NA WTOREK.
GODZINKI
o Opatrzności Boskiéj.

Kłaniamy się najwyższego Boga Opatrzności,
My lud i owce pastwiska Jego.
℣. Panie otwórz wargi moje,
℟. A usta moje będą wielbić chwałę Twoję.
℣. Boże ku wspomożeniu memu pospiesz.
℟. Panie na ratunek mój pokwap się.
℣. Chwała Ojcu i Synowi i Duchowi świętemu,
℟. Jak była na początku, teraz i zawsze i na wieki wieków. Amen.

Hymn.

Wieczny Rządco niebieskiego
Koła, któryś jak z niczego,
Wszystko stworzył swą możnością,
Tak też rządzisz Opatrznością.
Ciebie głodna rzesza sławi,
Gdy się z Tobą trzy dni bawi.
Z pięciu chlebów gdy używa,
I na cuda się zdumiewa.
Zchodzi na chlebie na strawie,
Opatrujesz Ty łaskawie,
Wieczny Pasterzu przez cuda,
Nakarmiwszy wiele luda.

ANTYFONA.

Nie troszczcie się mówiąc: co będziecie jedli albo co będziecie pili, albowiem Ojciec nasz niebieski wie czego potrzebujecie:

℣. Złóż na Pana staranie twoje, a On cię wychowa.

℟. Nie dopuści na wieki zachwiać się sprawiedliwemu.

℣. Panie wysłuchaj modlitwy nasze;

℟. A wołanie nasze niech do Ciebie przyjdzie.

Módlmy się.

Boże, którego Opatrzność nie myli się w swojém rozporządzeniu, pokornie Cię prosimy, abyś wszystkie szkodliwe rzeczy oddalił a wszystkich nam pożytecznych pozwolił. Przez Pana naszego Jezusa Chrystusa, który z Tobą żyje i króluje na wieki wieków. Amen.

NA PRYMĘ.

Kłaniamy się najwyższego Boga Opatrzności,
My lud i owce pastwiska Jego.
℣. Boże ku wspomożeniu memu pospiesz.
℟. Panie na ratunek mój pokwap się.
℣. Chwała Ojcu i Synowi i t. d.

Hymn.

Tyś jest Pasterzem łaknących,
Tyś i wodzem jest tonących,
Lekarzem, którzy chorują,
I gwiazdą, którzy żeglują,
Z dary ku ubogim spieszysz,
Zbierasz przychodnie i cieszysz,

Sieroty, wdowy ratujesz,
Wszystkiemi się opiekujesz.

ANTYFONA.

Pan strzeże przychodniów a sierotę i wdowę wspomoże.
℣. Ten ubogi wołał, Pan go wysłuchał,
℟. I z wszystkich ucisków wybawił go.
℣. Panie wysłuchaj modlitwy i t. d.

Módlmy się.

Boże, którego Opatrzność i t. d.

NA TERCYĄ.

Kłaniamy się najwyższego Boga Opatrzności,
My lud i owce pastwiska Jego.
℣. Boże ku wspomożeniu memu pospiesz.
℟. Panie na ratunek mój pokwap się.
Chwała Ojcu i Synowi i t. d.

Hymn.

W lesie pragnący Izmael,
I między lwami Daniel,
Młody Tobiasz w chodzeniu,

Józef Cię wzywa w więzieniu.
Lecz prędzéj łaski doznają,
Niż Twéj pomocy wzywają
Wodę dajesz, lwy łagodzisz,
Dróg nauczasz, z pęt wywodzisz,
Ci, którzy Cię z serca proszą,
Wszyscy posiłek odnoszą,
Więźniem pragniesz być z więźniami,
I zawsze zostawać z nami.

ANTYFONA.

Wołać będzie do mnie, a ja go wysłucham i uwielbię go.
℣. Blisko jest Pan wszystkim, którzy Go wzywają,
℟. Wszystkim, którzy Go wzywają wprawdzie.
℣. Panie wysłuchaj i t. d.

Módlmy się.

Boże! którego Opatrzność i t. d.

NA SEXTĘ.

Kłaniamy się najwyższego Boga Opatrzności.
My lud i owce pastwiska Jego.

℣. Boże ku wspomożeniu memu pospiesz,
℟. Panie na ratunek mój pokwap się.
Chwała Ojcu i Synowi i t. d.

Hymn.

Opatrzna zawsze Mądrości,
Nie mniéj mądra Opatrzności.
Ty wszystko mocno sporządzasz,
I wszystko mile rozrządzasz.
Widzim obrotne gwiazd biegi,
Widzim pełne morza brzegi.
Dziwujem się świata sprawie,
Rzeczy stworzonych postawie.
Cóż ta ziemia, cóż te zorze,
I co w pełnych brzegach morze?
Co wszystkie rzeczy wołają,
Twą opatrzność wychwalają.

ANTYFONA.

Nie dawaj serca twego, abyś o grzech pzyprawił ciało twoje, ani mów przed Aniołem: nie masz Opatrzności,
℣. Panie wysłuchaj modlitwy nasze.
℟. A wołanie nasze i t. d.

Módlmy się.

Boże, którego Opatrzność i t. d.

NA NONĘ.

Kłaniamy się najwyższego Boga Opatrzności,
My lud i owce pastwiska Jego.
℣. Boże ku wspomożeniu memu pospiesz.
℟. Panie na ratunek mój pokwap się.
℣. Chwała Ojcu i Synowi i t. d.

Hymn.

Co się czołga po ziemi,
Co wylatuje nad niemi,
I co morze w sobie składa,
Kłaniając Ci się, upada.
Ciebie chwali ptasząt tyle,
Po powietrzu lata ile,
Że się bez pracy znać dają,
Z Twojéj łaski dobrze mają.
Nie ma gniazdko ptaszka szkody,
Choć go składa w morskie wody,
To jest zimorodek zwany,
Opatrznością Twą chowany.

ANTYFONA.

Wejrzyjże na ptaki powietrzne iż nie sie-

ją, ani orzą, ani zbierają do gumien, a Ojciec niebieski żywi je.

℣. Oczy wszystkich w Tobie nadzieję mają Panie.

℟. A Ty im dajesz pokarm czasu przygodnego.

Módlmy się.

Boże! którego Opatrzność i t. d.

NA NIESZPÓR.

Kłaniamy się najwyższego Boga Opatrzności.

My lud i owce pastwiska Jego.

℣. Boże ku wspomożeniu memu pospiesz,

℟. Panie na ratunek mój pokwap się.

Chwała Ojcu i Synowi i t. d.

Hymn.

Gdy się jutrzenka dobywa,
Rosa jak perły pokrywa
Ziemię, któréj z Twéj miłości,
Dowód dajesz Opatrzności.
Opatrujesz żeglujące,
I ryby w morzu płynące,

Należytą żywność z nieba
Dając któréj im potrzeba.
Twa Opatrzność wielki Boże,
Nie ustaje w każdéj porze;
Cześć Ci wieczny niepojęty,
Ojcze Synu, Duchu święty.

ANTYFONA.

Chwalcie Pana, który daje bydłu żywność jego, i kruczętom wzywającym Go.

℣. Otwierasz Ty rękę Twoję.

℟. A napełniasz wszelkie zwierze błogosławieństwem.

℣. Panie wysłuchaj modlitwy nasze.

℟. A wołanie nasze i t. d.

Módlmy się.

Boże, którego Opatrzność i t. d.

NA KOMPLETĘ.

Kłaniamy się najwyższego Boga Opatrzności,

My lud i owce pastwiska Jego.

℣. Nawróć nas Boże Zbawicielu nasz.

℟. A odwróć gniew Twój od nas.

℣. Panie otwórz wargi moje.
℟. A usta moje będą opowiadać chwałę Twoję.
℣. Boże ku wspomożeniu memu pospiesz.
℟. Panie na ratunek mój pokwap się.
℣. Chwała Ojcu i Synowi i t. d.
℟. Jak była na początku, teraz i zawsze i na wieki wieków. Amen.

Hymn.

Ty co wszystkiemi rządzisz włości,
O wszechmocna Opatrzności!
Zgładź nasze wszystkie przestępstwa,
A do cnoty dodaj męztwa.
Widząc co będzie przyszłego,
I co jest teraźniejszego,
Daj nam, co wiesz że pomoże,
Oddal wszystko złe mój Boże!
Chwała Panu, co nas stworzył,
I co krew za nas położył,
Chwała Duchowi świętemu;
Bogu w Trójcy przedwiecznemu.

ANTYFONA.

Wszelkie staranie zdajcie na Boga bo On ma staranie o was.

℣. Racz nas Panie strzedz, jako źrenicę w oku.
℟. Pod cieniem skrzydeł Twoich racz nas zachować.
℣. Panie wysłuchaj modlitwy nasze,
℟. A wołanie nasze i t. d.

Módlmy się.

Boże, którego Opatrzność i t. d.

Polecenie Godzinek.

Życia księga niech tych imie
Między święte w niebo przyjmie,
Którzy Opatrzność wysławiają,
Twą i Jéj się zalecają, Amen.

LITANIA
o Opatrzności Boskiéj.

Kyrie elejson, Chryste elejson,
Kyrie elejson.
Chryste usłysz nas.
Chryste wysłuchaj nas.

Ojcze, któryś wszystko opatrzył przy stworzeniu, zmiłuj się nad nami.
Synu, któryś wszystko opatrzył przy odkupieniu, zmiłuj się nad nami.
Duchu święty, któryś wszystko opatrzył przy zesłaniu swojém, zmiłuj się nad nami.
Święta Trójco, od któréj, przez którą i w któréj jest wszystko,
Boże, któryś Opatrznością swoją pięć tysięcy mężów pięcią chlebami i dwiema rybami nakarmił,
Boże, któryś cztery tysiące ludzi siedmią chlebami i kilku rybami nakarmił,
Boże, któryś w Kanie Galilejskiéj Opatrznością Twoją wodę w wino przemienił,
Boże, któryś Piotra w więzieniu zamknionego Opatrznością Twoją z rąk Heroda przez Anioła wyrwał,
Boże, któryś Noego Opatrznością Twoją od powszechnego potopu zachował,
Boże, któryś Lota Opatrznością Twoją

Zmiłuj się nad nami.

z Gomorejskiego i Sodomskiego ognia wyprowadził,
Boże, któryś na głos Izmaela, od pragnienia umierającego, oczy Agary otworzył, i Opatrznością Twoją przez Anioła źródło ukazał,
Boże, któryś Józefa od braci przedanego, Opatrznością Twoją w Egipcie wywyższył i przez niego cały Egipt chlebem nakarmił,
Boże, któryś Mojżesza w koszu sitowianym zawartego i na wodę wrzuconego, Opatrznością Twoją zachował,
Boże, któryś Iyraelowi przed Faraonem uciekającemu, morskie wody Opatrznością Twoją wysuszył, a jeźdźców Faraona z wozami zatopił,
Boże, któryś Izraelowi w ziemi Marath, gorzkie wody Opatrznością swoją w słodkie zamienił,
Boże, któryś Izraelitów z Opatrzności Twojéj, przepiórkami hojnie żywił,
Boże, któryś Izraelitom w Rafidym Opatrznością Twoją wodę z opoki wyprowadził,

Zmiłuj się nad nami.

Boże, któryś sprawił, aby pragnącemu Samsonowi z szczęki ośléj za Twoją Opatrznością wody wyniknęły,

Boże, któryś Saula, oślic ojca swego szukającego, Opatrznością swoją do Samuela zaprowadził, i jego na króla namaścić kazał,

Boże, któryś przez niezbrojnego Dawida Opatrznością swoją, srogiego Goliata tryumfującego, hańbę od Izraelitów oddalił,

Boże, któryś Eliasza przy rzece Kareth, Opatrznością swoją przez kruka karmił,

Boże, któryś przez niewiastę Samarytankę, Eliasza Opatrznością swoją, nie ubywającą mąką i olejem żywił,

Boże, któryś Eliaszowi przez Anioła, Opatrznością swoją podpłomyk posłał,

Boże, któryś przez Eliasza ubogiéj wdowie Opatrznością swoją oléj rozmnożył,

Boże, któryś przez Eliasza dwudziestu

Zmiłuj się nad nami.

Zmiłuj się nad nami.

Chlebami, stu mężów, Opatrznością swoją nakarmił,

Boże, któryś Tobiaszowi Anioła za towarzysza dał, i Opatrznością swoją Ojcu jego wzrok przywrócił,

Boże, któryś Ananiasza i Misaela nienaruszonych w pośród płomieni Opatrznością swoją zachował,

Boże, któryś Daniela we lwiéj jamie bezpiecznego Opatrznością swoją zachował,

Boże, któryś Zuuzanny niewinność Opatrznością swoją przez Daniela oznajmił,

Boże, który Jonasza Opatrznością swoją z wnętrzności wieloryba po trzech dniach wyprowadził,

Boże, od którego Opatrzności wszystko czeka opieki,

Boże, w którego Opatrzności jest lepsze ufanie niż w ludzkiéj pomocy,

Boże, w którego Opatrzności jest nadzieja skuteczniejsza, niż w ziemskich panach obronie,

Boże, którego Opatrzność posiłek daje wszystkiemu stworzeniu,

Zmiłuj się nad nami.

Zmiłuj się nad nami.

Boże, który Opatrzności Twojéj rękę otwierasz i wszystkie zwierzęta napełniasz błogosławieństwem,
Boże, który na swoją Opatrzność przychodnia, sierotę i wdowę bierzesz,
Boże, którego Opatrzność bydlętom żywność daje, i kruczętom wzywającym opieki Twojéj,
Boże, którego Opatrzność lilije polne przyodziewa,
Bądź nam Bogiem opatrznym, przepuść nam Panie.
Bądź nam Bogiem opatrznym, wysłuchaj nas Panie.
Od zapomnień dobrodziejstw Twoich, wybaw nas, Panie.
Od zbytnich starań ziemskich i troskliwości, wybaw nas, Panie.
Od zbytniego w nieszczęściach smutku, wybaw nas, Panie.
Przez cudowną Opatrzność Twoję pokazaną przy wcieleniu Syna Twego, prosimy Cię, wysłuchaj nas, Panie.
Przez opatrzne całemu światu najświętsze-

Zmiłuj się nad nami.

go Sakramentu pożywanie, prosimy Cię wysłuchaj nas, Panie.
My grześni prosimy Cię,
Abyśmy nigdy nie grzeszyli, ani rzekli w duszy; zgrzeszyłem, a cóż mi się złego stało, prosimy Cię,
Abyś nam dał, żebyśmy staranie nasze na ciebie złożyli i abyś nas sam nakarmić raczył, prosimy Cię,
Abyś nam dał najprzód szukać chwały Twojéj i zbawienia naszego, a innych rzeczy z Opatrzności swojéj użyczyć raczył, prosimy Cię,
Abyś chwalców Opatrzności Twojéj rozmnożyć raczył, prosimy Cię,
Abyś naszego Cesarza ALEXANDRA III, naszego Papieża i naszego Biskupa Opatrznością swoją rządzić, zachować i dawać nam raczył, prosimy Cię,
Abyś nas wszystkich pod Twoją świętą Opatrzność przyjąć raczył, prosimy Cię,
Ojcze którego Opatrzność wszystkim rządzi, prosimy Cię,

Wysłuchaj nas, Panie.

Wysłuchaj nas, Panie.

Baranku Boży, który gładzisz grzechy świata, przepuść nam, Panie.
Baranku Boży, który gładzisz grzechy świata, wysłuchaj nas, Panie.
Baranku Boży, który gładzisz grzechy świata, zmiłuj się nad nami.
Chryste usłysz nas, Chryste wysłuchaj nas.
Kyrie elejson, Chryste elejson,
Kyrie elejson.
℣. Strzeż nas Panie jako źrenicę oka.
℟. Pod cieniem skrzydeł Twoich broń nas.

PSALM XIV.

Bóg nasz ucieczką i mocą: pomocnikiem w uciskach i smutkach.

Przetoż się bać nie będziem, gdy się poruszy ziemia i przeniosą się góry w serce morza.

Zaszumiały i zamąciły się wody ich, zatrzęsły się góry przed siłą Jego.

Bystrość rzeki rozweseliła miasto Boże, poświęci przybytek swój najwyższy.

Bóg w pośrodku jego, nie będzie poruszony, ratuje go Bóg na świtaniu.

Potrwożyli się narodowie, i nachyliły się królestwa: dał głos swój poruszyła się ziemia.

Pan zastępów z nami: Bóg Jakóbów obrońcą naszym.

Pójdźcie, a oglądajcie sprawy Pańskie, jakie uczynił cuda na ziemi.

Odjąwszy wojny, aż do krajów ziemi.

Skruszy łuk i zdruzgoce oręże, i tarcze ogniem popali.

Uspokójcie się, a obaczcie żem ja jest Bóg: będę podwyższon między narody, i będę podwyższon na ziemi.

Pan zastępów z nami, Bóg Jakóbów obrońcą naszym.

Chwała Ojcu i Synowi i Duchowi świętemu, jak była na początku, teraz i zawsze i na wieki wieków. Amen.

Modlitwa
do Opatrzności Boskiéj.
podczas choroby.

Najwyższy dusz i ciała lekarzu, źródło życia, nigdy nie ustanne! Ty, który jedném słowem umarłych wskrzesić możesz, wielki Boże! w którego ręku jest ludzkie życie

i którego Opatrzność wszystko rozrządza, bez którego dopuszczenia nic się stać nie może stworzeniu Twemu. Do Ciebie ja dwoistą ciała i duszy chorobą złożony, wołam z pokorą; udziel mi zdrowia i Twoję świętą przez grzech utraconą, przywróć mi łaskę. Przepuść mi Panie, żem dotychczas więcéj stworzonym rzeczom, niż Tobie Stworzycielu służył. Nie śmiem Twego straszliwego upraszać Majestatu, bo wiem, żem nie godzien spojrzeć w niebo, gdym się dotąd tylko w ziemię zapatrywał; jednak mi to nie tajno, że lubo cudowny jesteś we wszystkich sprawach Twoich, cudowniejszym atoli uznajemy Cię w sprawach dobroci i miłosierdzia. Powiedziałeś albowiem przez Proroka: „że litość Twoja nad wszystkie sprawy Twoje." Zmiłuj się tedy nade mną, według wielkiego miłosierdzia Twego, wesprzyj duszę moją i ciało moje Boże mój! wola Twoja jest, aby grzeszne ciało chorobę i do legliwości cierpiało; niech się dzieje wola Twoja święta ze mną: uzdrów przynajmniéj duszę moję, dodaj mocy na zniesienie wszystkiego, cokolwiek mnie spotka według Twojéj Opatrzności i upodobania. Przez Pa-

na naszego Jezusa Chrystusa, który z Tobą żyje i króluje w jedności Ducha świętego na wieki wieków. Amen.

KORONKA

o Opatrzności Boskiéj.

Boże wejrzyj ku wspomożeniu memu,
Panie pokwap się ku ratunkowi memu.
℣. Chwała Ojcu i Synowi i t. d.
℟. Jak była na początku, teraz i zawsze i na wieki wieków. Amen.

Ojcze nas i t. d.

Na pierwszym dziesiątku mów dziesięć razy następujące słowa:

Chwała Tobie Ojcze przedwieczny, któryś nas przy stworzeniu naszém z mądrości swojéj wszystkich opatrzył.

Potém mówić:

Bądź pochwalona najświętsza i litościwa Opatrzności Ojca naszego, która wszystka za tém jesteś, abyś stworzeniu dobrze czyniła.

O przedwieczna Opatrzności! wielbię Cię, wszystek Ci się oddaję, proszę, bądź mi miłościwą, bo tak wszystkiego dobra mnie potrzebnego pełen będę.

Na drugim dziesiątku mów dziesięć razy następujące słowa:

Chwała Tobie Synu najświętszy, któryś nas przy odkupieniu z miłości swojéj, wszystkiém opatrzył, czego potrzebowało zbawienie nasze.

Potém mówić:

O przedwieczna Opatrzności Ojca naszego; która wszystko widzisz i głęboko przenikasz, proszę serdecznym afektem, przenikaj okiem Twéj św. Opatrzności, wszystkie potrzeby całego życia i śmierci naszéj, a promieniami najświętszéj łaski Twojéj oświecaj rozum mój, abym mógł poznać Twoję przedwieczną nad wszystkiém stworzeniem Opatrzność, i każdego czasu Ciebie za nię wychwalał.

Na trzecim dziesiątku mów dziesięć razy następujące słowa!

Chwała Tobie Duchu najświętszy, któryś

nas przy zesłaniu Twojém z dobroci swojéj wszystkiemi dobrami i łaskami Twojemi hojnie opatrzył.

Potém mówić:

O dobrotliwa Opatrzności Boga naszego która wszystko, co chcesz czynić z mądrości, wszystko sprawujesz z dobroci i łaskawości, wszystko opatrujesz i nas zachowujesz, jako matka w wnętrznościach swoich, błogosławi Cię za to każda kropla krwi mojéj i wszystkie cząstki ciała mego, które przyznawają, że każdego momentu żyję świętą Opatrznością Twoją.

Wszystkie odetchnienia moje, ruszenia serca mego i bicia pulsów moich, chwalcie uwielbiajcie i błogosławcie przedziwną Opatrzność Boską, która jest nad wszystkiemi i nade mną,

Chwalcie Pana wszystkie narody, chwalcie Go wszystkie ludy; bo się nad nami umocniło miłosierdzie i święta Opatrzność Jego.

Chwała Ojcu i Synowi i t. d.

Wierzę w Boga Ojca i t. d.

Modlitwa

o Opatrzności Boskiéj.

Kłaniamy Ci się najświętsza i najlitościwsza Opatrzności Boga mojego! dziękuję Ci za wszystkie łaski dla duszy i dla ciała mego udzielone. Tobie najświętsza Opatrzności, dzisiaj i na całe życie moje oddaję wszystkie potrzeby moje. Ty widzisz co mi jest potrzebnego Sprawuj więc wszystko co się Tobie podoba, aby to było z jak największą chwałą i zbawieniem duszy mojéj. Amen.

MODLITWA

o uproszenie zjednoczenia we wszystkiem woli naszéj z Opatrznością Boską.

Boże! któryś na pokazanie chwały Opatrzności Twojéj, głodnemu ludowi Izraelskiemu dałeś się za Patrona, Danielowi za Obrońcę, Zuzannie za Opiekuna, Tobiaszowi za Odkupiciela, przychodniom i sierotom, ubogim i wdowom za Ojca i chciałeś się stać wszystko wszystkim. Ciebie pokornie prosimy, abyśmy jako się z Twojéj radujemy Opatrzności w szczęściu, tak się téż z niéj weselili w przeciwnościach, a z jaką

nadzieją od Twéj Opatrzności rzeczy pożądanych czekamy, z taką cierpliwością wszystko co się Tobie podoba znosili, ażebyśmy się w dobrém powodzeniu nie podnosili, a w złém pokorę i cierpliwość zachowali. Daj nam Panie umysł świeży, serce niewzruszone, wolę we wszystkiém zgadzającą się z Opatrznością Twoją. W Tobie samym serce nasze niech odpoczywa, niech nas nic nie miesza co od Ciebie jest, ale raczéj wszystko niech nam miło będzie dla Ciebie ponosić. Niech nas nic nie wzrusza, niech nas nic nie dolega, ale niech uspakaja serce nasze, dla tego, że od Ciebie pochodzi. Niech uznamy tę prawdę, że nic nie jest złego, co od wielkiego Boga dane bywa, nic szkodliwego, co od najukochańszego Ojca, nic niesłusznego, co od najsprawiedliwszego Sędziego pochodzi. Twoja albowiem Opatrzność, od końca do końca mocno się rozszerzyła i wszystko mile rozporządziła, a cokolwiek na nas przepuści, daj Panie, abyśmy to wdzięcznie przyjmowali, wesoło wytrzymali, cierpliwie znosili. Przez Chrystusa Pana naszego, który z Tobą żyje i króluje na wieki wieków. Amen.

NA ŚRODĘ.

Litania

o Duchu Świętym.

Panie zlituj się, Chryste zlituj się,
Panie zlituj się.
Ojcze z nieba Boże, zmiłuj się nad nami.
Synu Odkupicielu świata Boże, zmiłuj się nad nami.
Duchu święty Boże, zmiłuj się nad nami.
Święta Trójco jedyny Boże, zmiłuj się nad nami.
Duchu święty od Ojca i Syna pochodzący, zmiłui się nad nami.
Duchu święty mądrości,
Duchu święty bojaźni Bożéj,
Duchu święty łaski i miłosierdzia,
Duchu święty wiary, pokoju i miłości,
Duchu święty pokory i czystości,
Duchu święty cierpliwości,
Duchu święty skruchy i żalu,

Zmiłuj się nad nami.

Duchu święty światłości serca,
Duchu święty wesele wybranych,
Duchu święty oświecicielu Proroków,
Duchu święty mądrości Apostołów,
Duchu święty czystości panieńska,
Duchu święty pocieszycieiu nasz,
Duchu święty wodzu i przewodniku nasz,

Zmiłuj się nad nami.

Bądź nam miłościw, przepuść nam Panie.
Bądź nam miłościw, wysłuchaj nas Panie.
Od wszelkiego grzechu i pokusy, wybaw nas Duchu święty Boże.
Od sprzeciwiania się uznanéj prawdzie wiary świętéj, wybaw nas Duchu święty Boże.
Od zbytecznéj ufności w miłosierdzie Boga, wybaw nas Duchu święty Boże.
Od wszelkiéj rozpaczy, wybaw nas Duchu święty Boże.
Od złości i nienawiści, wybaw nas Duchu święty Boże.
Od zatwardziałości serca, wybaw nas Duchu święty Boże.
Od wszelkiego niedbalstwa, wybaw nas Duchu święty Boże.
Od wszelkich złych i nieczystych spraw i myśli, wybaw nas Duchu św. Boże.

Od nagłéj i niespodzianéj śmierci, wybaw nas, Duchu św. Boże

Od potępienia wiekuistego, wybaw nas, Duchu św. Boże.

My grzeszni Ciebie Boga prosimy, wysłuchaj nas, Duchu św. Boże.

Abyś kościół Twój święty rządzić i zachować raczył, Ciebie prosimy, wysłuchaj nas, Duchu św. Boże.

Abyś Monarchę naszego ALEKSANDRA III, błogosławić i zachować raczył, Ciebie prosimy, wysłuchaj nas Duchu św. Boże.

Abyś Namiestnika Apostolskiego i wszystkich pasterzy w świętéj pobożności utrzymywać raczył, Ciebie prosimy i t. d.

Abyś nas w pobożności i pokorze utwierdzić raczył, Ciebie prosimy, wysłuchaj nas i t d.

Abyś nam stałości i męztwa udzielić raczył, Ciebie prosimy, wysłuchaj nas, Duchu święty Boże.

Abyś myśli nasze ku niebieskich rzeczy pożądaniu podnieść raczył, Ciebie prosimy, wysłuchaj nas, Duchu św. Boże.

Abyś nas oczyściwszy na godne mieszkanie dla siebie poświęcić raczył, Ciebie prosimy, wysłuchaj nas, Duchu święty Boże.

Abyś nas w cierpieniach naszych pocieszać raczył, Ciebie prosimy i t. d.

Abyś nas w łasce Twojéj utwierdzać i zbawić raczył, Ciebie prosimy, wysłuchaj nas, Duchu św. Boże.

Abyś nas wszystkich do uczestnictwa chwały wiekuistéj doprowadzić raczył, Ciebie prosimy, wysłuchaj nas, Duchu święty Boże.

Przez wierne pochodzenie od Ojca i Syna, wysłuchaj nas, o Panie.

Przez poczęcie Maryi Dziewicy, najświętszéj Matki Jezusa Chrystusa, wysłuchaj nas, Panie.

Przez przyjście Twoje w językach ognistych, wysłuchaj nas, Panie.

Abyśmy Ciebie miłowali i dla Ciebie grzechów się strzegli, wysłuchaj nas, Panie.

Baranku Boży, który gładzisz grzechy świata, przepuść nam, Panie.

Baranku Boży, który gładzisz grzechy świata, wysłuchaj nas, Panie.

Baranku Boży, który gładzisz grzechy świata, zmiłuj się nad nami.

Panie zlituj się, Chryste zlituj się, Panie zlituj się.

℣. Serce czyste stwórz we mnie Boże,
℟. I Ducha prawego odnów we wnętrznościach moich.
℣. Panie wysłuchaj modlitwy nasze,
℟. A wołanie nasze niech do Ciebie przyjdzie,

Módlmy się.

Przyjdź Duchu święty, napełnij serca Twoich wiernych, i Twojéj miłości ogień w nich racz zapalić, który wszystkie narody w jedności wiary zgromadziłeś, iżby łaska Twa przenajświętsza serca nasze oświeciła i od wszelkiego złego nas ochroniła. Amen.

MODLITWY

o uproszenie łaski Ducha świętego.

O Duchu święty, Boże, Nauczycielu, Wodzu i Przewodniku nasz, Ty nas rządzisz i prowadzisz, abyśmy z dróg niebieskich nie ustępowali, Tyś prawym Pocieszycielem smutków świata tego; Ty jesteś który w nas wszystkie dobre myśli, żądze i natchnienia wlewasz i moc do ich wykonania dajesz. O szczęśliwy! który się z takiego gościa weseli, u którego mieszkasz i przebywasz. Niechże dom Twój będzie to serce moje, oddajęć Panie wszystko co w nim jest, prosząc Cię i błagając o umocnienie w wierze, o żarliwość w miłości Bożéj o prędkie porzucenie grzechów, o wytrwanie w pokucie, o pomnożenie w cnotach. Daj mi to u Duchu święty Boże - w nieszczęściu cierpliwość, w szczęściu pokorę, w pokusach zwysięztwo, w smutku pociechę, w pracy posilenie, w tęskności ochłodzenie, w bolach i niemocy Panu Bogu dziękowanie: przez Pana naszego Jezusa, Chrystusa, który z Tobą i z Ojcem Bóg w Trójcy jedyny żyje i króluje na wieki wieków. Amen.

Modlitwa II.

Boże Duchu święty, rządź mię i sprawuj łaską swoją przenajświętszą: Boże! przed którym nie masz nic zakrytego i który nieustannie zagrzewasz w nas do dobrego miłość, racz myśli nasze oczyścić i miłością

swą niebieską serce moje zapalić; A jakoś uweselił Matkę Syna Bożego i Apostołów świętych, tak uwesel i poświęć duszę i ciało moje, teraz i w godzinę śmierci mojéj, iżbym Cię mógł doskonale miłować i godnie chwalić przez wieki wieczne. Amen.

Modlitwa III.

Sprawco uświęcenia dusz, miłości i prawdy Duchu, dziękuję Ci wszechmocnemu, rozdawcy dóbr niebieskich za wszystkie łaski: do Ciebie się uciekam, źródło światłości i mocy, oświeć rozum mój, umocnij w dobrem wolę moję, rządź sercem mojém i dla Boskich natchnień Twoich uczyń je posłusznem i wiernem. Przebacz ustawicznym ułomnościom moim, przebacz złości, przez jaką tak często stawiałem opór miłosiernym i słodkim łaski Twéj wzywaniom. Pragnę o Duchu święty Boże przy pomocy tejże łaski świętéj iść odtąd za nią z tak uległą i chętną powolnością, iżbym mógł kosztować wszystkich Twoich owoców i błogosławieństw Boskich, w tém i przyszłém życiu. Amen.

Veni Creator.

Przybądź Duchu Twórco myśli wiernych, nawiedź łaską niebieską, napełnij piersi któreś stworzył.

Któryś obwieszczon Pocieszycielem, Boga najwyższego darem, źródłem żywém, ogniem, miłością i namaszczeniem duchowém.

Ty siedmioraki w darach, prawicy Bożéj wskaziciel, Tyś obietnicą Ojca mocą wzbogacający usta.

Zapal światłość zmysłom, wléj miłość w serca, krewkości naszego ciała, mocą Twoją pokrzep.

Daj, abyśmy przez Cię pojęli Ojca i poznali Syna i w Ciebie, jako Ducha z obudwu pochodzącego, zawsze wierzyli.

Niech będzie chwała Ojcu, chwała Synowi, niech będzie równa chwała Tobie Duchu święty Boże, za którego natchnieniem myśli ludzkie oświecają się i świętemi ogniami płoną. Amen.

KORONKA

o Duchu Świętym.

Tę koronkę mawiają, prócz środowego dnia, na rok przez dni 40, po komunii duchownéj lub sakramentalnéj, to jest przez sześć tygodni, w Niedzielę zaczynają i w Niedzielę kończą i co Niedziela się spowiadają, a jeżeli w insze dni nie komunikują sakramentalnie tylko duchownie to jednak tę koronkę odprawiają codzień po komunii kapłańskiéj i swojéj duchownéj.

Sposób odprawiania téj koronki.

Najprzód przeżegnawszy się mów: trzy pacierze, troje pozdrowienia i jedno Wierzę w Boga na cześć Trójcy Przenajświętszéj. Trzykroć uderzywszy się w piersi będziesz mówił następującą modlitwę raz:

Modlitwa I.

Duchu święty Boże! przybądź a racz napełnić serca wiernych Twoich ogniem miłości Boga, a jakoś zgromadził rozmaite

narody do jedności wiary, tak też wolę naszę zjednocz z wolą Twoją przenajświętszą. Amen.

Modlitwa II.

Tę następującą modlitwę drugą mówić trzeba dziesięć razy:

Duchu przenajświętszy Boże! rządź i sprawuj to, o co Cię prosimy i jakoś uweselił Matkę Syna Bożego i Apostołów świętych, zstąpiwszy z nieba, tak też uwesel duszę i ciało moje, teraz i w godzinę śmierci mojéj. Amen.

Ofiarowanie Koronki.

Ofiarujęć Boże mój tę koronkę małą, przyjmijże ją ode mnie za swą świętą Ofiarę, a mnie do serca sprowadź siedm darów Twoich, ogniem miłości duszę oczyść z grzechów moich, wypal ją, napełnij ją wszém dobrém, niech się stanie mieszkaniem Ducha świętego. Amen.

NA CZWARTEK.

Litania

o Przenajświętszym Sakramencie.

Kyrie elejson, Chryste elejson,
Kyrie elejson.
Chryste usłysz nas.
Chryste wysłuchaj nas
Ojcze z nieba Boże, zmiłuj się nad nami.
Synu Odkupicielu świata Boże,
Duchu święty Boże,
Święta Trójco jedyny Boże,
Chlebie żywy, któryś z nieba zstąpił,
Boże utajony i Zbawicielu,
Żywność wybranych,
Chlebie tłusty i rozkoszny królów,
Ofiaro czysta,
Baranku bez zmazy,
Pokarmie Aniołów,
Pamiątko cudów Bożych,
Słowo wcielone mieszkające w nas,

Zmiłuj się nad nami.

Tajemnico wiary, zmiłuj się nad nami.
Prawdziwe błaganie za żywych i umarłych,
Niebieskie lekarstwo, które nas od grzechu zachowuje,
Cudo nad cudami,
Pamiątko miłości Bożéj,
Sakramencie pobożności,
Związku miłości,
Duchowna słodkości,
Posilenie dusz świętych,
Podróżo w Panu umierających,
Zastawie przyszłéj chwały,

Zmiłuj się nad nami.

Bądź nam miłościw, przepuść nam, Panie.
Bądź nam miłościw, wysłuchaj nas, Panie.
Od niegodnego przyjęcia Ciała i krwi Twojéj, wyzwól nas, Panie.
Od wszelkich okazyi do grzechów, wyzwol nas, Panie.
Przez miłość Twoją, która Cię w chlebie określiła, wyzwól nas, Panie.
Przez wszystkie rany i boleści, które się w tym przenajświętszym Sakramencie wyrażają, wyzwól nas, Panie.
My grzeszni Ciebie prosimy, wysłuchaj nas, Panie.

Abyśmy przez ten Sakrament miłość Twoją, a potém królestwo niebieskie osiągnąć mogli, wysłuchaj nas, Panie.
Baranku Boży, który gładzisz grzechy świata, przepuść nam, Panie.
Baranku Boży, który gładzisz grzechy świata, wysłuchaj nas, Panie.
Baranku Boży, który gładzisz grzechy świata, zmiłuj się nad nami.
℣. Chleb z nieba dałeś im Panie.
℟. Wszelki smak mający w sobie.

Módlmy się.

Boże! którego wnętrzności miłosierdzia są wszystkim otwarte, który nie chcesz zguby żadnego, ale aby wszyscy zbawieni byli pragniesz, dla czegoś też za wszystkich umarł i ten najświętszy Sakrament postanowił, prosimy Ciebie, zbaw nas wszystkich, którzy w Tobie ufamy i nie zapominaj o zgromadzeniu Twojém któregoś Ty jest Panem na wieki. Amen.

Hymn.

Sław języku chwalebnego — Ciała dziwnéj świętości, — I krwi szacunku drogiego — Którą za świat z miłości — Owoc serca wspaniałego — Wydał król wszelkich włości.

Nam zrodzony, nam jest dany — Z Panny niepokalanéj — I na świecie dobrze znany — Z swéj nauki rozsianéj, — Wszystek żywot bez nagany — W sprawie zamknął zdumianéj.

Przy ostatniém wieczerzaniu — Siedział wespół z uczniami, — Dosyć czyniąc przykazaniu — W zakonie potrawami, — Pokarm dwunastom w zebraniu — Dał swemi rękami.

Słowo ciałem chléb prawdziwy — Słowo w ciało obraca, — Dowód sercom niewątpliwy — Sama wiara wystarcza.

Ten więc najświętszy Sakrament — Czcijmy w uniżoności, — Starozakonny testament Niech ustąpi nowości, — Wiara dostarczy suplement — Zmysłów naszych słabości.

Ojcu z Synem przedwiecznemu — Chwała i wdzięczne pienie, — Żywot, możność i cześć k'temu — Bądź i błogosławione — Z obudwu pochodzącemu — Bądź za równo chwalenie. Amen.

℣. Obdarzyłeś nas chlebem niebieskim.
℟. Wszelką rozkosz w sobie zamykającym.

MODLITWA

Boże, któryś nam w przenajświętszym Sakramencie, męki Twojéj pamiątkę zostawił; daj nam prosimy, tak najświętszą Ciała i krwi Twojéj czcić Tajemnicę, abyśmy zawsze odkupienia naszego pożytku w sobie doznawali. Który żyjesz i królujesz z Bogiem Ojcem i z Duchem świętym na wieki wieków. Amen.

Chwała i dziękczynienie bądź w każdym momencie, Jezusowi w najświętszym Boskim Sakramencie.

Ile minut w godzinie, a godzin w wieczności, Tyle kroć bądź pochwalon, Jezu moja miłości. Amen.

NA PIĄTEK.

GODZINKI

o Męce Pańskiéj.

NA JUTRZNIĄ.

Zacznijcie wargi nasze chwalić Pańskie rany,
Pomnij duszo jak Jezus był ukatowany.
Wspomóż niewinny Jezu! krwawą Twoją męką,
A wybaw nas potężną z wiecznéj toni ręką.
Chwała bądź Bogu w Trójcy jedynemu,
Ojcu, Synowi, wspólnie Duchowi świętemu
Jak była na początku, od wieków przedwiecznie,
Niech Bóg w Trójcy jedyny chwalon będzie wiecznie.

Hymn.

Witaj Jezu w Ogrójcu w modłach krwią spocony,

Przez Anioła wzmocniony, od ucznia zdradzony.
Od żydów krwi Twéj chciwych, jak zbójca pojmany,
W dom Annasza wiedziony, bity, krępowany.
Uczniowie Cię odstępują, bojaźń ich zwycięża,
Piotr się trzykroć zapiera, mówiąc nie znam męża;
Fałszywe świadki na śmierć Pana oskarżają,
Niewinnego Baranka na ofiarę dają.
℣. Niech będzie pochwalona najświętsza krew i rany Pana Jezusa.
℟. Teraz i na wieki wieków. Amen.
℣. Panie wysłuchaj modlitwy nasze.
℟. A wołanie nasze i t. d.

Módlmy się.

Jezu najdobrotliwszy! któryś dla odkupienia świata i zbawienia grzeszników podjął mękę i śmierć haniebną, nie dopuść błagamy, aby krew i rany Twoje miały być na potępienie nędznym duszom naszym, dla

wielkości grzechów naszych; ale z nieskończonych zasług Twoich, najmiłosierniejszy Panie, i Boże! racz nam darować choć jednę kropelkę najdroższéj krwi Twojéj, iżby dusze nasze zbawionemi były. Który żyjesz i królujesz z Bogiem Ojcem i Duchem św. na wieki wieków. Amen.
℣. Panie wysłuchaj modlitwy nasze,
℟. A wołanie nasze niech do Ciebie przyjdzie.
℣. Błogosławmy Panu,
℟. Bogu chwała.
℣. A dusze wiernych zmarłych przez miłosierdzie Boże niech odpoczywają w pokoju.
℟. Amen.

NA PRYMĘ.

Wspomóż niewinny Jezu krwawą Twoją męką,
A wybaw nas i t d.

Hymn.

Witaj Jezu cierpliwy, rano prowadzony

Do Piłata, przed sądem zbójców swych stawiony.
Piłat w Jezusie winy żadnéj nie znajduje,
Do Heroda Go żydom odwieść rozkazuje.
Herod ciekawy cudów, Boga pyta hardo,
Jezus milczy, Herod Go odprawia z pogardą.
W białą szyderską szatę przyobleczonego,
Odsyła Piłatowi Baranka cichego.
℣. Niech będzie pochwalona najświętsza krew i rany Pana Jezusa,
℟. Teraz i na wieki wieków. Amen.

Modlitwa i wiersz jak na jutrznią.

NA TERCYĄ.

Wspomóż niewinny Jezu i t. d.

Hymn.

Witaj Jezu niewinny, oprawcom wydany,

Do słupa przywiązany, nago biczowany,
Jak z krynicy żywéj, tak z świętego ciała,
Krew Twa święta przez mnogie rany wyciekała.
Aż ubranemu w szkarłat, na śmiechy ludowe,
Trzcinę za berło dają, cierniem wieńczą głowę.
Na wzgardę klęcząc przed Nim, spluwać Nań się ważą,
Biją w twarz zawiązaną, prorokować każą.
℣. Niech będzie pochwalona najświętsza krew i rany Pana Jezusa.
℟. Teraz i na wieki wieków. Amen.

Modlitwa i wiersz jak wyżéj.

NA SEXTĘ.

Wspomóż niewinny Jezu i t. d.

Hymn.

Witaj Jezu przed sądem Piłata stawiony,

I wyrokiem niesłusznym na śmierć potępiony.
Pilat żadnéj przyczyny śmierci nie znajduje,
Obmył ręce, a wyrok śmierci podpisuje.
Wychodzi Jezus z miasta, krzyżem obciążony,
Na twarz w drodze po trzykroć upada zemdlony,
Od własnego narodu zmęczon, zelżon, zbity,
Przywiedzion jest na miejsce, gdzie ma być zabity.
℣. Niech będzie pochwalona najświętsza krew i rany Pana Jezusa.
℟. Teraz i na wieki wieków. Amen.

Modlitwa i wiersz jak wyżéj.

NA NONĘ.

Wspomóż niewinny Jezu i t. d.

Hymn.

Witaj Jezu! do krzyża gwoździmi przykowany,

Sromotnie podwyższony, z łotry porównany,
Ręce i nogi święte srogie ostrza bodły,
A Pan za swe zabójce czyni Ojcu modły,
Łotrowi skruszonemu niebo obiecuje,
Uczniowi swą zemdloną matkę zostawuje;
Gdy w śmierci ofiarował Bóg modlitwę swoją,
Pragnął, a zbójcy octem i żółcią Go poją.
Zatem Pan po spełnionéj przenajświętszéj męce,
Oddał Boskiego Ducha w Boga Ojca ręce.
℣. Niech będzie pochwalona najświętsza krew i rany Pana Jezusa,
℟. Teraz i na wieki wieków. Amen.

Modlitwa i wiersz jak wyżéj.

NA NIESZPÓR.

Wspomóż niewinny Jezu i t. d.

Hymn.

Witaj ofiaro Jezu wiszący przed zgrają,

Jeszcze z boku krew świętą Twoją wytaczają,
Człowiek bez winy żadnéj, Bóg który nas stworzył,
Umarł za grzechy nasze, by nam raj otworzył.
Nikodem ciało z krzyża z Józefem składają,
Matce najboleśniejszéj ze czcią oddawają,
Która łzami je myjąc z przyjaciołmi swemi,
Opatruje nabożnie maściami wonnemi.
℣. Niech będzie pochwalona najświętsza krew i rany Pana Jezusa.
℟. Teraz i na wieki wieków. Amen.

Modlitwa i wiersz jak wyżéj.

NA KOMPLETĘ.

Weźm nas w Twą łaskę Jezu, Boże nasz Panie,
Wstrzymaj za grzechy nasze słuszne Twe karanie.
Wspomóż niewinny Jezu i t. d.

Hymn.

Witaj Jezu! od Matki smutnéj opłakany,
I ze złami sług wiernych w grobie pochowany.
Żydowska złość po śmierci Pana trwogę czuje,
Grób, by Zbawca nie powstał, próżno pieczętuje.
Pełnią się Boską mocą Boskie tajemnice,
Pan śmierć pokonał, ziścił świętą obietnicę.
Daj nam Jezu, niech śmierć Twa i Twe zmartwychwstanie,
Wiekuistym żywotem i dla nas się stanie.
℣. Niech będzie pochwalona najświętsza krew i rany Pana Jezusa.
℟. Teraz i na wieki wieków. Amen.

Ofiarowanie.

Z pokłonem prosim, Jezu przyjmij te godziny,
Na cześć srogiéj Twéj męki, a zgładź nasze winy.

Już przez śmierć okrutną i przez rany ciężkie,
Proszę, przyjm nas do nieba przez ręce anielskie.
Daj, abyśmy Ciebie sercem zawsze miłowali,
I po śmierci na wieki w niebie wychwalali.
℣. O Jezu Zbawicielu świata umęczony,
℟. Bądź teraz i zawsze od nas pochwalony.
℣. Panie wysłuchaj modlitwy nasze.
℟. A wołanie nasze niech do Ciebie przyjdzie.

Módlmy się.

Jezu Chryste, Panie nasz, Baranku Boży, niewinna za grzechy nasze ofiaro: który przez nieograniczoną ku ludziom miłość, poniosłeś mękę okrutną i haniebną na krzyżu śmierć. Jezu najsłodszy, którego ciało święte ze czcią pogrzebione, do trzeciego dnia w grobie spoczywało, racz sprawić łaską Twoją, abyśmy dla świata obumarłszy, Tobie jednemu zawsze się poświęcali i Twego przykazania z gorliwością strzegli. Który żyjesz i krolujesz w Trójcy przenajświętszéj Bóg po wszystkie wieki wieków. Amen.

PODZIĘKOWANIE

Panu Jezusowi za mękę.

Tobie cześć, Tobie chwała, Tobie podziękowanie, o najmilszy, o najsłodszy, o najłaskawszy Panie Jezu Chryste! za wszystkie przenajświętsze krople krwi Twojéj, którąś wylał dla nas nędznych a grzesznych ludzi, przy obrzezaniu, krwawym pocie, biczowaniu, koronowaniu i z przenajświętszych rąk i nóg Twoich, i z najmilszego Boskiego serca Twego i wszystkiego najszlachetniejszego ciała Twego, racz być miłościw tym, którycheś odkupił krwią Twoją najświętszą i najdroższą.

MODLITWA

z rozpamiętywaniem męki Pańskiéj.

(mówiącym ją nabożnie we frasunkach wielce pomocna.)

O Stworzycielu nieba i ziemi i Odkupicielu rodzaju ludzkiego, prawdziwy Synu Boga żywego, Panie Jezu Chryste! przed Tobą ja grzeszny głowę moję skłaniam, Twojemu świętemu Majestatowi serce moje grzeszne oddaję. Przed najświętszém Bóstwem Twojém na moje kolana upadam, dla grzechów moich nie śmiem wołać ku Tobie Bogu przedwiecznemu, a to dla tego, żem Cię rozgniewał Boga mego, któremu wszystkie grzechy moje są wiadome, Panu i Odkupicielowi mojemu i który gdyby patrzał na przestępstwa moje nie pomnąc na swe miłosierdzie, zginęłaby w głębokości dusza moja. O nie karz mnie Panie potępieniem, któryś mię odkupić raczył krwią swoją na krzyżu. Nie karz mię wsty-

dem wiecznym! ale wspomnij na on wstyd który cierpiałeś, kiedyś na drzewie krzyża obnażony konał przed świętą Matką Twoją. Nie karz mię smutkiem wiecznym, lecz wspomnij na ono zasmucenie, w którém na górze Oliwnéj Ojca swego przedwiecznego wzywałeś. Przez Twój ciężki smutek, najsłodszy Panie, jakiś cierpiał, gdyś wszystką mękę swą widział, którąś na zajutrz miał ponieść niewinny Baranku dla wykupienia rodu ludzkiego; racz zgładzić grzechy moje, jako Panie rzekłeś, iż nie chcesz śmierci grzeszników, tylko ich odmiany i poprawy. Wierzę Boże mój wszechmogący, iż mię raczysz od miłosierdzia swego nie odrzucić, iż mię żałującego i łaknącego Twego przebłagania; przyjmiesz do łaski Twojéj Boskiéj, jakoś przyjął syna marnotrawnego i grzesznicę Maryą Magdalenę. Ty wiesz Ojcze mój najlepszy, jako się masz nade mną zlitować; mając przeto zupełne w Tobie zaufanie i nadzieję bez granic proszę Cię i błagam całą mocą duszy mojéj, przez ono w Ogrójcu od Judasza zdradzenie i przez haniebne pojmanie Cię od niewiernych żydów, przez okrutne i nieli-

tościwe przez rzekę Cedron prowadzenie i o kamień zranienie, po którém przywiedzion byłeś do Annasza, a tameś policzek wziął niewinnie; potemeś wiedzion był do Kajfasza, tam najgrawan i okrutnie poszyjkowan, znowu prowadzon do Piłata, gdzie Twe najszlachetniejsze Ciało było zbite i łańcuchem obciążone! Proszę Cię przez one fałszywe świadectwo przeciw Tobie! nielitościwe prowadzenie do Heroda, w białą szatę na pośmiech przyobleczenie, przez sromotne do Piłata znowu odesłanie, złośliwe z odzienia zdarcie i u słupa nago okrutne biczowanie, cierniową koroną uwieńczenie, przez Twe pokorne na ratuszu stanie i niewinne na śmierć osądzenie, przez krzyża niesienie i pod krzyżem upadanie, przez okrutne przybicie rąk i nóg Twoich na krzyżu, niemiłosierne z krzyżem podnoszenie, rozpustne z Ciebie naśmiewanie się i podawanie Ci żółci z octem; przez siedm słów Twoich najświętszych i polecenie Bogu Ojcu ducha Twojego, przez wielkie miłosierdzie Twe okazane łotrowi, przez niewypowiedzianą żałość Matki Twojéj pod krzyżem stojącéj, przez Twe najświętsze

skonanie, przebicie boku i serca Twego, i ciała Twojego w grób położenie, przez Twoje chwalebne zmartwychwstanie, cudowne wniebowstąpienie, Ducha świętego zesłanie, Matki Twéj Panny najświętszéj radośne wniebowzięcie, przez niezmierną chwałę, którą masz w królestwie niebieskiém, gdzie Aniołowie przed Majestatem Twym upadając śpiewają: Święty, święty, święty, Pan Bóg zastępów, pełne jest niebo i ziemia wielmożności chwały Jego; racz najmiłosierniejszy Panie wysłuchać mię w modlitwach i prośbach moich. O Boże! o Adonaj! Panie wszechmocny i wielki, łaski pełen, zmiłuj się nade mną. Proszę Cię wszechmocny Boże! o grzechów odpuszczenie; o skruchę, żal i poprawę, o wiarę, cierpliwość i w dobrych uczynkach pomnożenie, o zmiłowanie się nad duszami w czyścowych mękach zatrzymanemi. Bo któż mię inny ma pocieszyć i któż jest któryby mi co dobrego uczynił, jedno Ty Panie i Boże mój. Nie opuszczaj mię nadziejo moja i ucieczko moja! O najłaskawszy, najmocniejszy Panie Jezu Chryste! proszę Twéj łaski i opieki, proszę Twojego wsparcia,

przez Trójcę Przenajświętszą, przez przyczynę Matki Twéj błogosławionéj Maryi Panny, przez zasługi wszystkich Twych Świętych. Amen.

Codzienne wpraszanie się do pięciu ran Pana Jezusa.

Najłaskawszy Panie Jezu Chryste, dla naszego odkupienia na krzyżu zamordowany, dzień i straszną godzinę śmierci mojéj zapisuję sobie w ranach Twoich przenajświętszych.

Niechże mi mój ukochany i słodki Jezu! w ranach Twoich bezpieczny odpoczynek będzie, i niech w nich już od tego czasu mieszkam aż na wieki! gdyż przez rany Twe, otwarte mi jest do wieczności miłosierdzie Twoje; przyjmijże mię drogi Jezu! do tych otwartych ran Twoich. Tam ja dziś grzeszną duszę i twarde do pokuty serce składam i zanurzam przed obliczem gniewu Twego i przed nieuchronionemi sądami Twemi, tam się uciekam i zanurzam.

W tych Twoich najświętszych ranach dziś, a osobliwie w ostatnią godzinę śmierci mojéj, niech o słodki Jezu mam pewne i bezpieczne schronienie.

Dziękczynienie za dobrodziejstwa.

Na każdy moment z hojnych ran Twoich płyną na mnie łaski; i dobrodziejstwy Twemi żyję i tchnę; tedy wszystkie dobrodziejstwa Twoje, które Ty, na moję niegodność i niewdzięczność nie patrząc, dziś na mnie wylewasz, w rany Twoje składam i na odwdzięczenie za nie, też najświętsze rany Twoje, za każdém tchnieniem mojém, pokornie ofiaruję.

Dosyć uczynienie za grzechy.

A że mnóstwo i ciężkość grzechów moich wiele na mnie karania zaciągnęło, codzień tém więcéj na karbach sprawiedliwości Two-

jéj winniejszym zostaję, wypłacam Ci się teraz z tychże ran najświętszych i wszystkie one ostre, aż do serca przenikające boleści Twoje, za grzechy moje w tych ranach podjęte, ofiaruję Tobie co moment na dosyć uczynienie. A z temi boleściami łączę to wszystko, cokolwiek dziś zmyślności mojéj przeciwnego będzie i co mi się cierpieć trafi, dziś i potém, a osobliwie one uciski, które mnie przy skonaniu ogarną.

Daj miłościwy Jezu, żebym to wszystko z miłości Twojéj cierpliwie znosił, któryś dla miłości mojéj te tak srogie rany odniósł.

Uproszenie łask potrzebnych.

Ułomności moje jeszcze dotąd dla ślepoty mojéj wewnętrznéj dostatecznie nie poznane, nędzne od ciężkich grzechów moich we mnie zarodzone, nic mi nie obiecują, tylko upadek w grzech, dla tego w samém Twojém miłosierdziu, (które nad wszystkie moje i całego świata grzechy większe jest), z ufnością moją wielką że-

brać mi nieustannie łask Twoich Boskich potrzeba, a ja zmazanemi ustami mojemi modlić się do Ciebie Stwórcy mego nie umiem. Otóż te otwarte rany Twoje, jak oratorów najskuteczniejszych i nieustających mówców, do Majestatu Twego wyprawiam.

Co mi tylko potrzebnego być widzisz do zbawienia, i któreś mi łaski do poznania i wykonania dziś najświętszéj woli Twojéj przed wieki przejrzał, przez zasługi tych tak ciężkich ran Twoich racz dać dobry Jezu!

O to Cię dobry, miłościwy Jezu! NN. (tu wymienić o co, lub za kogo chcesz Pana Boga prosić), temi Twojemi otwartemi ranami lepiéj aniżeli ustami, za każdém tchnieniem mojém pokornie proszę. Proszę żebyś i Ty, najgodniejszy wszelakiéj miłości Panie, w ten od nas dobry dzień miał, jak najdostojniejsze dziś woli Twojéj najświętszéj wypełnienie.

Wszystkie moje dzisiejszego dnia myśli, słowa, sprawy, rozmowy i intencye, ich żądze, także nawet i tchnienie moje w ranach Twoich o mój Jezu zawieram.

Co w nich dobrego będzie, dopomóż Panie, Jezu! żeby jak najwięcéj było, niech się tylko ran Twoich zasługami krwawemi okrasi i ozdobi.

A jeżeli się co w nich (czego się przy łasce Twojéj wystrzegać mocno stanowię) nie będzie podobało, w tychże ranach Twoich najświętszych teraz zaraz z obrzydzeniem serdecznem oczyszczam.

Niech duszom wiernych na dobry dzień z tych ran Twoich, o słodki Jezu w pożary czyścowe jedna krwi Twojéj najdroższéj kropla padnie! i czyścowe ugasi płomienie.

MODLITWY
ŚWIĘTEGO AUGUSTYNA
o wszystkich artykułach Męki Pańskiéj.

Boże! który dla odkupienia świata raczyłeś się narodzić, dać obrzezać, od żydów wzgardzić i od Judasza pocałowaniem wydać, dać się pojmać, wiązać, jako niewinny Baranek na zabicie wodzić i przed Annasza, Kaifasza, Piłata i Heroda nieprzystojnie stawić i przed nimi od fałszywych świadków oskarżenie, zelżywości, urąganie policzkowanie, poszyjkowanie, zeplwanie, twarzy zasłonienie, biczowanie, cierniem koronowanie, z szat zwleczenie, na śmierć osądzenie cierpieć, dałeś się miły Panie gwoździmi do krzyża przybić i na krzyżu podnieść, między zbójcami postawić, żołcią i octem napawać i włócznią bok przebić. Ty Panie Jezu Chryste: przez najświętsze męki Twoje, które ja niegodny wspominam, przez święty krzyż i śmierć Twoję, wybaw mię od mąk piekielnych; racz mnie tam zaprowadzić gdzieś zaprowadził łotra z Tobą ukrzyżowanego. Który z Bogiem Ojcem i z Duchem świętym żyjesz i królujesz na wieki wieków. Amen.

Modlitwa II.

Najmilszy Panie Jezu Chryste, Odkupicielu rodzaju ludzkiego, proszę Cię przez onę najdroższą Twoją miłość, którąś naród ludzki umiłował gdyś był okrutnie na krzy-

żu zawieszony z Boską miłością, z łagodną duszą, z otwartém sercem i smutną postacią, z bolesnemi członkami i ubiczowaném ciałem, z płynącemi krwi strumieniami, z rozpiętemi rękami, z przybitemi nogami, z wyciągnionemi żyłami, z wołającemi ustami, chrapliwym głosem, z wybladłą twarzą, z płaczącemi oczami, z gorącą miłością, pragnącem wzdychaniem i z gorzkim smakiem octu i żółci, z nachyloną głową ku potkaniu śmierci, z rozdzieleniem najśliczniejszego Ciała z duszą Twoją, z otworzonym bokiem i z źródłem żywéj wody w téj miłości proszę Cię najdobrotliwszy Panie Jezu Chryste, przez Twą Boską miłość, którą pałajace serce zranione było, racz być ubłagany nad wielkością grzechów moich, a napełnij wszystkiém dobrém pożądanie moje, racz mi dać dobre skonanie żywota mego, a potém wesołe zmartwychwstanie, tego wszystkiego z nieograniczonego miłosierdzia Twego oczekiwać będę: Który z Bogiem Ojcem i Duchem świętym żyjesz i królujesz na wieki wiekow. Amen.

Modlitwa III.

Niech Cię poznam Panie, któryś mię poznał, niech Cię poznam siłą duszy mojéj, pokaż mi się Pocieszycielu mój! niech Cię obaczę światło oczu moich, przybądź radości ducha mego, niech Cię miłuję żywocie duszy mojéj. Pokaż mi się rozkoszy moja wielka, pociecho moja słodka, Panie Boże mój, żywocie mój i wielka szczęśliwości duszy mojéj, niech Cię znajdę pożądanie serca mego, niech Cię otrzymam miłości duszy mojéj! niech Cię uścisnę Oblubieńcze niebieski, radości moja największa wewnątrz i zewnątrz. Niech Cię mam w pośrodku serca mego żywocie błogosławiony, słodkości największa wewnątrz duszy mojéj. Niech Cię miłuję Panie, mocy moja. Panie twierdzo moja, ucieczko moja i Wybawicielu. Niech Cię miłuję Boże mój, wieżo moja mocna i nadziejo moja słodka, we wszystkiém utrapieniu mojém. Niech Cię otrzymam dobro, bez którego nie masz nic dobrego. Otwórz głuchotę uszu moich słowem przeraźliwszém, niżeli wszelki miecz z obustron ostry, abym słuchał głosu Twego.

Oświeć oczy moje światłości nieogarniona, daj wzrok, któryby Cię widział światłości niewidzialna. Stwórz nowe powonienie wonności olejków Twoich, uzdrów smakowanie, któreby lubiło, znało rozsądzało, jakie jest wielkie mnóstwo słodkości Twojéj Panie któreś odkrył dla tych, którzy są pełni miłości Twojéj. Daj serce któreby o Tobie myślało; duszę któraby Cię miłowała; umysł, któryby Cię wspominał; rozum, któryby Cię rozumiał; myśl, któraby się zawsze trzymała Ciebie kochania największego. Ciebie niech zawsze miłości mądra miłuję, o światłości duszna! o jasna gwiazdo, o prawdziwa miłości, która oświecasz każdego człowieka na świat przychodzącego! wypędź ciemności z umysłu mego abym Cię widział, rozumiejąc; abym Cię znał pojmując; abym Cię miłował, znając; albowiem kto Cię kolwiek zna, Ciebie miłuje, siebie zapomina, bardziéj Cię miłuje, niż siebie, siebie opuszcza a idzie do Ciebie, aby się z Ciebie radował na wieki. Amen.

NA SOBOTĘ.

GODZINKI
o Niepokalanem poczęciu
Najśw. Maryi Panny.

NA JUTRZNIĄ.

Zacznijcie wargi nasze chwalić Pannę świętą,
Zacznijcie opowiadać cześć Jéj niepojętą.
Przybądź nam miłościwa Pani ku pomocy,
A wyrwij nas z czartowskiéj grzechów naszych mocy.
Chwała Ojcu i Synowi Jego przedwiecznemu,
I równemu Im w Bóstwie Duchowi świętemu.
Jak była na początku i zawsze i ninie,
Niech Bóg w Trójcy jedyny na wiek wieków słynie.

Hymn.

Zawitaj Pani świata, niebieska królowa,
Witaj Panno nad Panny, gwiazdo porankowa.
Zawitaj pełna łaski prześliczna światłości,
Pani! na pomoc świata spiesz się, zbaw nas złości.
Ciebie Monarcha wieczny, od wieków swojemu,
Za Matkę obrał Słowu jednorodzonemu
Przez które ziemi okrąk i nieba ogniste,
I powietrza i wody stworzył przezroczyste.
Ciebie Oblubienicę przyozdobił sobie,
Bo przestępstwo Adama nie ma prawa w Tobie.
℣. Przejrzał ją Bóg i wybrał ją sobie,
℟. I wziął Ją na mieszkanie do przybytku swego.
℣. Panie wysłuchaj modlitwy nasze.
℟. A wołanie nasze niech do Ciebie przyjdzie.

Módlmy się.

Święta Marya, królowa niebieska, Matko Pana naszego Jezusa Chrystusa i Pani świata, która nikogo nie opuszczasz i nikim nie gardzisz, wejrzyj na nas Pani nasza łaskawém okiem miłosierdzia Twego, a uproś nam u Syna Twego miłego odpuszczenie wszystkich grzechów naszych, abyśmy, którzy teraz święte Twoje niepokalane poczęcie nabożném sercem rozpamiętywamy, wiecznego błogosławieństwa zapłatę wiecznie otrzymać mogli. Co niechaj da ten Pan, któregoś Ty Panno porodziła, Syn Twój, a Pan nasz Jezus Chrystus, który z Bogiem Ojcem i z Duchem świętym żyje i kroluje w Trójcy jedyny Bóg na wieki wieków. Amen.

℣. Panie wysłuchaj modlitwy nasze,
℟. A wołanie nasze niech i t. d.
℣. Błogosławmy Panu,
℟. Bogu chwała.
℣. A dusze wiernych zmarłych przez miłosierdzie Boże niech odpoczywają w pokoju.
℟. Amen.

NA PRYMĘ.

Przybądź nam miłościwa i t. d.

Hymn.

Zawitaj Panno mądra, domie Bogu miły,
Który złoty stół i siedm kolumn ozdobiły.
Od wszelakiéj zarazy świata ochroniona,
Pierwéj święta w żywocie Matki, niż zrodzona,
Tyś Matką wszech żyjących, Tyś jest świętych drzwiami,
Nowa gwiazdo z Jakóba, Tyś nad aniołami.
Ogromna czartu jesteś, w szyku obóz silny.
Bądź chrześcijan ucieczką i port nieomylny.
℣. Sam ją stworzył w Duchu świętym,
℟. I wyniósł ją nad wszystkie dzieła rąk swoich.
℣. Panie wysłuchaj i t. d.
℟. A wołanie nasze i t. d.

Módlmy się.

Święta Marya i t. d.

NA TERCYĄ.

Przybądź nam miłościwa i t. d.

Hymn.

Witaj arko przymierza, tronie Salomona,
Tęczo, wszechmocną ręką z pięknych farb złożona.
Tyś krzak Mojżeszów Boskim ogniem gorejąca,
Rószczko Aaronowa, śliczny kwiat rodząca.
Bramo rajska zamkniona, runo Gedeona,
Tyś niezwyciężonego plastr miodu Samsona.
Przystało, aby Cię Syn tak zacny, od winy
Pierworodnéj, zachował i zmazy Ewinéj.
Który Ciebie za Matkę obierając sobie,
Chciał by przywara grzechu nie została w Tobie.
℣. Ja mieszkam na wysokościach.
℟. I tron mój w słupie obłoku.
℣. Panie wysłuchaj modlitwy nasze,
℟. A wołanie nasze niech do Ciebie przyjdzie.

Módlmy się.

Święta Marya i t. d.

NA SEXTĘ.

Przybądź nam miłościwa i t. d.

Hymn.

Witaj świątyni Boga w Trójcy jedynego,
Tyś raj aniołów, pałac wstydu panieńskiego.
Pociecho utrapionych, ogrodzie wdzięczności,
O palmo cierpliwości, o cedrze czystości.
Ziemia jesteś kapłańska i błogosławiona,
Święta i pierworodną zmazą nie dotknięona.
Miasto pańskie i brama na wschód wystawiona,
Wszelką łaską jedyna Panno napełniona.
℣. Jak lilija między cierniem,
℟. Tak przyjaciółka moja między córkami Adamowemi.
℣. Panie wysłuchaj i t. d.
℟. A wołanie nasze i t. d

Módlmy się.

Święta Marya i t. d.

NA NONĘ.

Przybądź nam miłościwa i t. d.

Hymn.

Witaj miasto ucieczki, wieżo utwierdzona,
Dawidowa, basztami i bronią wzmocniona.
Tyś przy poczęciu ogniem miłości pałała,
Przez Cię władza piekielnych mocarzów stajała.
O mężna białogłowo! Judyt wojująca,
Abizai prawego Dawida grzejąca!
Rachel ożywiciela Egiptu nosiła,
Nam Zbawiciela świata Marya powiła.
℣. Wszystka piękna jesteś przyjaciółko moja,
℟. A zmaza pierworodna nigdy nie postała w Tobie.
℣. Panie wysłuchaj modlitwy nasze.
℟. A wołanie nasze i t. d.

Módlmy się.

Święta Marya i t. d.

NA NIESZPÓR.

Przybądź nam miłościwa i t. d.

Hymn.

Witaj zegarze, w którym nazad jest cofnione
Słońce dziesięcią linij, gdy Słowo wcielone,
Aby człowiek z padołu powstał wywyższony,
Niezmiernie od aniołów jest coś umniejszony.
Słońca tego promieńmi Marya jaśnieje,
W poczęciu swém jak złota zorza światłem sieje.
Między cierniem lilija, kruszy łeb smokowi,
Piękna jak w pełni księżyc, świeci człowiekowi.
℣. Jam sprawiła na niebie, aby wschodziła światłość nieustająca,
℟. I jako mgła okryłam wszystkę ziemię.
℣. Panie wysłuchaj modlitwy nasze,
℟. A wołanie nasze i t. d.

Módlmy się.

Święta Marya i t. d.

NA KOMPLETĘ.

Niech nas Pani swą prośbą do Ciebie nawróci
Jezus, Syn Twój, a swój gniew niech od nas odwróci.
Przybądź nam miłościwa Pani ku pomocy,
A wyrwij nas z czartowskiéj i t. d.
Chwała Ojcu i Synowi i t. d.

Hymn.

Witaj Matko szlachetna w panieńskiéj czystości,
Gwiazdami uwieńczona Pani łaskawości.
Niepokalanie czystsza niżli aniołowie,
Po prawéj ręce króla stoisz w złotogłowie.
O rodzicielko łaski, nadziejo grzeszących,
O jasna gwiazdo morska, o porcie tonących.
Bramo rajska, niemocnych zdrowie w Twéj obronie,

Niech Boga oglądamy na górnym syonie.
℣. Oléj wylany, o Maryo Imię Twoje,
℟. A słudzy Twoi zakochali się bardzo w Tobie.
℣. Panie wysłuchaj modlitwy nasze.
℟. A wołanie nasze i t. d.

Módlmy się.

Święta Marya i t. d.

Polecenie Godzinek.

Z pokłonem Panno święta, ofiaruję Tobie,
Te godzinki ku większéj czci Twéj i ozdobie.
Prosząc, byś nas zbawienną drogą prowadziła,
A do śmierci nam słodką Marya przybyła.

Antyfona.

Tać jest rószczka, w któréj ani sęk pierworodnéj, ani skaza uczynkowéj winy nie postała,
℣. W poczęciu Twojém Panno niezmazanas zawsze była,

℟. Módl się za nami do Boga Ojca, któregoś Syna porodziła.

Módlmy się.

Boże! któryś przez niepokalane Panny Maryi poczęcie, godne Synowi Twojemu mieszkanie zgotował, prosiemy Cię, aby jakoś Ją, przez śmierć tegóż Syna przejrzaną, od wszelkiéj zmazy zachował, tak nam też za Jéj przyczyną, niepokalanemi przyjść do siebie dopuścić raczył. Przez tegoż Jezusa Chrystusa, który z Tobą żyje i króluje na wieki wieków. Amen.

Litania

do Najświętszéj Maryi Panny.

Kyrie elejson, Chryste elejson,
Kyrie elejson.
Chryste usłysz nas.
Chryste wysłuchaj nas.
Ojcze z nieba Boże, zmiłuj się nad nami.
Synu Odkupicielu świata Boże, zmiłuj się nad nami.
Duchu święty Boże, zmiłuj się nad nami.
Święta Trójco jedyny Boże, zmiłuj się nad nami.
Święta Marjo, módl się za nami.
Święta Boga Rodzicielko, módl się za nami.
Święta Panno nad Pannami, módl się za nami.

Matko Chrystusowa, módl się za nami.
Matko łaski Bożéj,
Matko najczystsza,
Matko najśliczniejsza,
Matko niepokalana,
Matko nienaruszona,
Matko najmilsza,
Matko przedziwna,
Matko Stworzyciela,
Matko Odkupiciela,
Panno roztropna,
Panno czci godna,
Panno wsławiona,
Panno można,
Panno łaskawa,
Panno wierna,
Zwierciadło sprawiedliwości,
Stolico mądrości,
Przyczyno naszéj radości,
Naczynie duchowne,
Naczynie poważne,
Naczynie dziwnego nabożeństwa,
Różo duchowna,
Wieżo Dawidowa,
Wieżo z kości słoniowéj,
Domie złoty,

Módl się za nami.

Arko przymierza,
Fórto niebieska,
Gwiazdo zaranna,
Uzdrowienie chorych,
Ucieczko grzesznych,
Pocieszycielko utrapionych,
Wspomożenie wiernych,
Królowa Anielska,
Królowa Patryarchów,
Królowa Proroków,
Królowa Apostołów,
Królowa Męczenników,
Królowa Wyznawców,
Królowa Panieńska,
Królowa Wszystkich świętych,
Królowa Różańca świętego,
Baranku Boży, który gładzisz grzechy świata, przepuść nam, Panie.
Baranku Boży, który gładzisz grzechy świata, wysłuchaj nas, Panie
Baranku Boży, który gładzisz grzechy świata, zmiłuj się nad nami.
Chryste usłysz nas, Chryste wysłuchaj nas.
Kyrie elejson, Chryste elejson.
Kyrie elejson.
Ojcze nasz, Zdrowaś Marya i t. d.

Módl się za nami.

Antyfona.

Pod Twoją obronę uciekamy się święta Boża Rodzicielko! naszemi prośbami nie racz gardzić w potrzebach naszych, ale od wszelakich złych przygód racz nas zawsze wybawiać Panno chwalebna i błogosławiona Pani nasza! Orędowniczko nasza! Pośredniczko nasza! Pocieszycielko nasza! z Synem Twoim nas pojednaj, Synowi Twojemu nas zalecaj, najmilszemu Synowi Twojemu nas oddawaj.

℣. Módl się za nami święta Boża Rodzicielko,

℟. Abyśmy się stali godnymi obietnic Chrystusa Pana.

MODLITWA.

Łaskę Twoją, prosimy Panie! racz wlać w serca nasze, abyśmy, którzy za zwiastowaniem anielskiém, wcielenie Chrystusa Syna Twego poznali przez mękę Jego i krzyż, do chwały zmartwychwstania byli doprowadzeni, przez tegóż Chrystusa Pana naszego. Amen.

Polecenie samego siebie Najświętszéj Maryi Pannie.

O Pani moja, święta Maryo, ja się Twojéj łasce i osobliwéj straży wnętrznościom miłosierdzia Twego, dzisiaj, i w godzinę zejścia mego, duszę moję, ciało moje Tobie polecam, wszystkie moje nadzieje i pociechy, wszystkie uciski i dolegliwości moje żywot i koniec żywota mego Tobie, poruczam, aby przez Twoję najświętszą przyczynę i przez zasługi święte Twoje, wszystkie uczynki moje były sprawowane i rządzone, według najświętszéj Twojéj i Syna Twego woli. Amen.

Pięć Psalmów
NA IMIĘ MARYA.

PSALM I.

Marya Matko Chrystusowa, wielką jesteś Panią i Królową wielce chwalebną w mie-

ście Boga naszego i we wszystkiém zgromadzeniu wybranych Jego.

Miłosierdzie Twoje i łaskę wszędzie opowiadają, Bóg dziełom rąk Twoich pobłogosławił.

Zmiłuj się nad nami Pani, uzdrów duszę naszą, odejmij boleści i ucisk serca naszego.

Zmiłuj się nad nami w dzień ucisku naszego, a w prawdzie Twéj oświeć nas.

Zmiłuj się nad nami Pani, zmiłuj się nad nami, albowiem Ty jesteś nadzieja i światło wszystkich w Tobie nadzieję pokładających.

Pamiętaj na nas Zbawicielko, wysłuchaj płacz i wzdychanie nasze.

Zmiłuj się nad nami Pani, módl się za nami, w dobre wesele obróć utrapienie nasze.

Zmiłuj się nad nami sługami Twemi Pani, a nie dopuszczaj, aby ucisk cierpieli w pokusach swoich.

Zmiłuj się nad nami królowo czci i chwały, od wszelkiego niebezpieczeństwa strzeż nas żyjących.

Zmiłuj się nad nami Matko Zbawiciela, dodaj pociechy w utrapieniu naszém.

Ulecz skruszonych sercem, Pani zbawienia, a poléj ich olejkiem łaskawości.

Chwała Ojcu i Synowi i Duchowi świętemu.

Jak była na początku, teraz i zawsze i na wieki wieków. Amen.

PSALM II.

Ach! do Ciebie Pani wołać będę, wysłuchasz mię, w języku chwały Twojéj rozweselisz mię.

Do Ciebie wołałem, gdy było w ucisku serce moje wysłuchałaś mię z góry świętéj Twojéj.

Ściskajmy grzeszni stopy Maryi, i do nóg Jéj upadajmy.

Przystępujcie do Niéj z uczciwością i z nabożeństwem, niech się cieszy serce wasze w Jéj pozdrowieniu pilném

Przystąpcie do Niéj w utrapieniach waszych, a jasność oblicza Jéj umocni was.

Od rycząc[illegible], gotowych na pożarcie

z tych, którzy nas szukali; za łaską Jéj jesteśmy wybawieni.

Słuchaj ludu Boży ustaw Boskich; a Królowéj niebieskiéj nie zapominaj.

Otwierajcie serca na szukanie Jéj [illegible] wargi na Jéj wychwalanie.

Niechaj się rozżarza affekt serdeczny ku Niéj, a nieprzyjacioły duszy Ona przyoblecze zawstydzeniem.

Zdjęła z serca smutki i żałość, a słodkością swoją dusze nasze osłodziła

Upadajcie przed Nią w ozdobie Jéj, Twórcę śliczności Jéj uwielbiajcie.

Za pomocą Jéj uszliśmy niebezpieczeństwa śmierci i od srogiego powietrza jesteśmy wolni.

Chwała Ojcu i Synowi i t. d.

PSALM III.

Ratunkiem jesteś Pani w utrapieniu naszém, i mocą najskuteczniejszą na potłumienie naszych namiętności.

Wszyscy pobożni miejcie ją w uczciwości, albowiem ona jest duchowną naszą Orędowniczką.

Uciekajmy się do Niéj w kłopotach naszych, a wyrwie nas z wszelkiego niebezpieczeństwa.

Pomnij Pani, abyś mówiła za nami w dobrém i żebyś od nas gniew Syna Twego oddaliła.

Wejrzyj na nędzę naszą wielebna Panno, nędzy i utrapienia oddalić nie omieszkaj,

Pomnij Pani na nędznych i ubogich, wesprzyj ich pociechą pomocy świętéj Twojéj.

Pomnij na nas Pani, aby nas nieszczęścia nie obejmowały; wspomóż nas przy skonaniu, a znajdziemy żywot wieczny.

Pokrop serce nasze słodkością Twoją, spraw żebyśmy zapomnieli utrapienia żywota tego mizernego.

Wejrzyj Pani! na uniżenie sług Twoich, a nie dopuszczaj im w niebezpieczeństwa rozmaite wpadać.

Napełnij nas sługi Twoje cnotami świętemi, a gniew Boży niech się do nas nie przybliża.

Wejrzyj Pani na uniżenie serca naszego, a wyzwól nas z ciężkiego utrapienia.

Pomnij na miłosierdzie Twoje, Pani! a ulżyj nam w pielgrzymce naszéj.

Chwała Ojcu i Synowi i t. d.

PSALM IV.

Ja w Tobie Pani, ufność pokładam, dla wielkości miłosierdzia Imienia Twego.

Osądź mnie Pani! albowiem odstąpiłem od niewinności mojéj, ale iżem w Tobie nadzieję pokładał, nie osłabieję.

W ręce Twoje polecam ciało, i duszę moję, wszystko życie moje i dzień mój ostateczny.

Spuść na nas promienie łaskawości Twojéj, a oświeć miłosierdzia Twego jasnością.

Wzbudź cuda, abyśmy doznali pomocy Imienia Twego.

Przyczyń się za nami Matko Boga, któraś zbawienie przyniosła, albowiem Ty anielskie i ludzkie zbawienie porodziłaś.

Udziel łaski z skarbnic Twoich a maściami uśmierz boleści nasze.

Niech wnijdzie modlitwa nasza przed

oblicznośc Twoję, a głosami wzdychających nie pogardzaj.

W rękach Twoich Pani zbawienie i żywot zawisł, wesele wiekuiste i wieczność chwalebna.

Niech znajdą łaskę u Boga, którzy w swych potrzebach wzywać Cię będą.

W przygodach i rzeczach wątpliwych, we wszystkich potrzebach niech znajdą przyjemny ratunek.

Albowiem Ty leczysz skruszonych serca i skrapiasz olejkiem łaskawości.

Chwała Ojcu i Synowi i t. d.

PSALM V.

A kiedy byłem w utrapieniu, jednak gdym zawołał do Maryi z łaski swojéj wysłuchała mnie.

Do Ciebie Pani podniósłem duszę moję w sądzie Boga mego, a za przyczyną Twoją nie będę zawstydzony.

Bądź pozdrowiona łaski pełna, Bóg z Tobą; przez którą się zbawienie świata naprawia.

Wstąpiłaś z śpiewaniem wesołém chorów

anielskich, otoczona różami archaniołów, i lilijami ukoronowana.

Obmyj Pani wszystkie grzechy nasze, ulecz wszystkie choroby nasze.

Niech od nas przez Cię gniew Boży będzie odwrócony, ubłagaj Go zasługami i modlitwami Twemi.

Niech nam przez Cię będą otworzone bramy sprawiedliwości, żebyśmy opowiadali wszystkie dziwne rzeczy Twoje.

Przystąp do Pana w sprawie duszy naszéj, żebyśmy przez Cię od kary zwolnieni zostali.

Niech ratunek nasz będzie w mocy Imienia Twego, przez Cię niech się kierują wszystkie sprawy nasze.

Od wszelkiego zamięszania wyzwól sługi Twoje, a spraw, żeby byli pod pieczą i obroną Twoją.

Niechaj przed Tobą upadają dumy narodów i niechaj Cię wielbią wszyscy aniołowie.

Chwała Ojcu i Synowi i Duchowi świętemu.

Jak była na początku teraz i zawsze i na wieki wieków. Amen.

MODLITWA.

Miéj nas w swéj pieczy prosimy Cię Panie! za przyczyną błogosławionéj zawsze Panny Maryi, i od wszelakiéj przeciwności, wojny i ciężkiego głodu a z zupełnego serca przed Tobą upadających, od wszelakiéj choroby, morowego powietrza i od wszelkich niebezpieczeństw łaskawie zachowaj. Przez Pana naszego Jezusa Chrystusa. A.

Troje Pozdrowienia

Najświętszéj Panny Maryi.

dla szczęśliwéj śmierci.

z objawienia Najśw. Panny św. Mechtyldzie.

Zdrowaś Marya i t. d.

O Pani moja święta Marya! jako Cię Bóg Ojciec z wszechmocności swojéj najmożniejszą uczynił, tak mi proszę Cię przybądź w godzinę śmierci mojéj, odpędzając wszelką przeciwną moc ode mnie.

Zdrowaś Marya i t. d.

O Pani moja święta Marya! jako Cię Syn Boży taką umiejętnością i jasnością obdarzył, że całe niebo oświecasz, tak w godzinę śmierci mojéj światłością wiary duszę moją oświeć i strzeż, żeby jéj żaden błąd, albo niewiadomość nie przekonały.

Zdrowaś Marya i t. d.

O Pani moja święta Marya! jako w Ciebie Duch święty! miłość swoję wlał obficie, tak mnie w godzinę śmierci mojéj obdarz słodkością miłości Bożéj, żeby mi wszelka gorzkość śmiertelna miłą i słodką się stała. Amen.

Akty Strzeliste

do błogosławionéj Boga Rodzicy, najpewniejszéj ludzi strapionych Pocieszycielki.

Najświętsza i najsłodsza serc strapionych Pociecho, błogosławiona Maryo! do Ciebie najpierwéj uciekam się i proszę, nie opu-